श्रीवीतरागायनमः

श्री जैन रामायण

अर्थात्

(नाटक पद्मपुराण)

जिसको

महलका जि० मेरठ निवासी ला० मूलचन्द जैन
ने जैन नाटक प्रेमियों की प्रेर्णा से रचा

इसीको

ला० जैनीलाल के जैनीलाल प्रिंटिंग प्रेस सहारनपुर
में छपवा कर प्रकाशित किया

प्रथमवार] १००० [न्योछावर २)

जय हो ! जय हो !! जैन धर्म की जय हो !!!

भूमिका

दोहा—धर्मोन्नति हो जगत में, सुनिये आतम राम ।
गुण गुण को गह लीजिये, नहीं और से काम ॥

भव्यात्माओं से सेवक की प्रार्थना है । कि कुछ समय मुझ तुच्छ बुद्धि को देकर निर पक्ष होकर, विनती पर ध्यान दें । तथा मेरी मूर्खता को दिल से भुलादें ॥

सज्जन पुरुषो ! कलियुग पंचमकाल का परिवर्तन है । इसी कारण हमारे बहुत से जैनी भाई यह नहीं समझते कि जैन शास्त्र पद्म पुराण तथा हरिवंश व पांडव पुराण में क्या क्या कथन है । कैसे कैसे महान पुरुष पैदा हुये हैं । अतएव उन्होंने सत्य मार्ग को कैसे ग्रहण किया है । हमको यह खेद होता है कि हमारे जैनी भाई भी बहुत से हनुमान मुक्ती गामी जीव को बन्दर समझते हैं । तथा रावण को राक्षस दश मुंह बीस हाथ पांव का बताते हैं । और यह भी नहीं जानते होंगे कि हमारी जैन कौम में भी जैन रामायण (पद्म पुराण) शास्त्र है जिसमें श्री रामचन्द्रादि का कथन है । जबकि हमारे भाई ही नहीं जानते तो अन्य मत वालों का तो कुछ कहना ही नहीं है ।

इसलिये प्रिय सज्जन पुरुषो ! उन लोगों के जानने के लिये यह परिश्रम उठाया गया है कि यदि उनको समझाया जाय या प्रत्यक्ष आदर्श दिखाया जाय । तो अवश्य कुछ न कुछ समझ जायें । क्योंकि एक समय वह था जोकि प्राकृत के कविता व श्रोता थे । फिर संस्कृत के भी कविता व श्रोता होते रहे । परन्तु कलियुग में उनका लोप हुवा फिर आचार्यों ने शास्त्रों को भाषा में किया तब भी बहुत से जैनी भाइयों के श्रवण में नहीं आये । इस कारण उनको नाटक द्वारा समझाने व प्रत्यक्ष दिखाने

की आवश्यक्ता हुई। परन्तु हम देखते हैं कि अब भी बहुत सी आत्माएँ नाटक से घृणता करती हैं। तथा द्वेष रखती हैं। "यही तो कलियुग का प्रभाव है"। क्योंकि जो अज्ञानी मिथ्या दृष्टी अन्यमती अपना २ पक्ष लिये हुये हैं। उनको हम कैसे अपना जैन धर्म दिखायें। यदि निश्चय से देखा जाय तो नाटक शब्द आज से क्या अनादि से चला आरहा है और प्रत्यक्ष आदर्श दिखा रहा है। क्योंकि प्रथम तीर्थंकरों के जन्म समय इन्द्र ने आकर सात २ भव के प्रेम व भक्ती पूर्वक नाटक करके प्रत्यक्ष आदर्श दिखाया। क्योंकि जीव को राग रूपी वचन सुनकर ही वैराग्य होता है जैसे कि दुख के बाद में सुख होता है। इसही कारण नाटक के पांच परिच्छेद प्रथम **स्वयम्बरादर्श, दू० बनोबास मार्ग, तृ० सीताहरण, च० लंकागमन, पां० चक्रीदमन**—पांच रात्री के खेलने के लिये भिन्न भिन्न बनाये गये हैं सज्जन पुरुषों को चाहिये कि यदि कहीं अशुद्ध शब्द हों तो उसको शुद्ध करलें तथा दास पर क्षमा करके सूचित करें ताकि दूसरी मर्तबा छपवाने पर ठीक कर लिया जावे। और हरिवंश पुराण शीलकथा का भी नाटक जैनीलाल प्रेस में छपने जारहा है सो शीघ्रही छपकर तैय्यार होने वाले हैं।

सज्जन पुरुषों से आशा है। कि दास का परिश्रम लख कर पत्र द्वारा उत्साह बढ़ायेंगे।

भव्यभिलाषी

जैन-सेवक मूलचन्द जैन महलका
जिला मेरठ डा० लावड़

॥ स्वयम्बरादर्श ॥

निवेदन—

सज्जन पुरुषों की सेवा में निवेदन है कि यह पद्मपुराण ड्रामा मान बड़ाई या लोभादिक के वशीभूत होकर नहीं बनाया गया है। बल्कि धर्म रूपी प्रत्यक्ष आदर्श दिखलाया गया है। जो कि भव्य पुरुषों की आत्मा पर अज्ञान रूपी पर्दा अन्य मतावलम्बियों की रामायणादिक के पठन पाठन से पड़ा हुआ था। अतएव उस अज्ञान रूपी अन्धेरे को हटाने के लिए ये जैन रामलीला अर्थात् पद्म पुराण नाटक आपकी सेवा में वात्सल्यवश सप्रेम समर्पित है। यदि सज्जनों को ड्रामा के अन्दर त्रुटि दिखाई दे उसको ईर्षा भाव त्याग कर शुद्ध करलें

भव्य पुरुष सेवी

लाला मूलचन्द

महलका (मेरठ)

श्रीवीतरागाय नमः

जैन रामलीला (पद्मपुराण)

नाटक

स्वयम्बर आदर्श (प्रथम परिच्छेद)

एन्टूरू टेकशनसीन

जैन धर्मशाला

सबका गाना = सब करिये हित में पल छिन ध्यान॥ आदि नाथ जी के दर्शन हम सब करते। केवल ज्ञानी, हैं लासानी, सब०

दोहा—शरम तिहारे हाथ है, चौबीसों महाराज।
राखनहारे हो तुम्हीं, शरण गहे की लाज॥

जपति जपति तुम्हरो नाम, अरज गरज कर मुदाम॥ सब करिये०॥

गुरू—खेल वह खेलिये जिस खेल से गुण ग्यान बढ़े।
कष्ट वह झेलिए जिस कष्ट से धुन ध्यान बढ़े॥

चेला—नमस्कार, नमस्कार बल्कि आपको वारम्वार नमस्कार, आपने क्या ही अच्छा किया, यह आपकी खास कृपा का इज़हार है उद्धार है।

गुरू—क्या क्या आखिर कुछ कहो तो,

चेला—ये के आज कुछ खेल दिखाना चाहिए, परन्तु यह तो बतलाइये कौनसा नाटक खेला जाये।

गुरू—देखिए आज जैन सभा का कैसा आनन्द आ रहा है इस लिए पद्मपुराण रामलीला नाटक का समाचार है, अच्छा जाओ और खिलारियों से कह आओ कि वह जल्द रंग भूमि में आजायें।

चेला—बहुत अच्छा जाता हूं

गुरू—और ज़रा सुनो तो।

चेला—जो आज्ञा हो

गुरू—देखो सबको यही समझाओ कि नाटक की भाषा सलीस हो न कि मुहाल हो

चेला—परन्तु यह तो कहिए कि इबारत भाषा ही भाषा हो या उर्दू बोल चाल हो

गुरू—न ठेठ हिंदी न ख़ास उर्दू मिली जुली हो जवां बराबर न एक कम हो न एक ज्यादा नपी तुली हो अयां बराबर

चेला—तब तो नाटक का समा और भी उत्तम होजायगा।

गुरू—और कोमिक भी आज कल के ज़माने की रंग में हो जिससे कि आज सबके मन का कमल खिले पबलिक को अच्छा सबक मिले।

चेला—तो यूं कहिए कि आम फ़हम हो—

गुरू—बेशक

चेला—वाह वाह अब तो क्या कहना है अच्छा नमस्कार लीजिए और आज्ञा दीजिए

गुरू—अच्छा जाओ और जल्दी नाटक शुरू कराओ

सबका जाना

स्वयम्बर आदर्श प्रथम परिच्छेद

(पहिला सीन)

(सब एक्टरों को मिलकर गाना भगवान की प्रार्थना करना)

[सब गाना गाते हैं]

करुणा हो हम पर दीन बन्धु । दीनन के प्रतिपाल हो ॥
लाज प्रभू हमरी राखो । कृपा हो दीन दयाल हो ॥ करुना०
राम चरित्र दिखलायेंगे । गुजरा है जो बतलायेंगे ।
कहा जो गए घर सुनायेंगे । श्रोता गणों सावधान हो ॥ करुना०
दिल में तासुब न हम रखें । पक्ष न हरगिज हम करें ॥
जैन से हरगिज न हम चिगें । सच्चा हमें श्रधान हो ॥ करुना०
मतलब हमारा है यही । राम चरित्र जानो सही ।
"मूल" धरम जैसी कही । तत्व का हमको विचार हो ॥ करुना

गुलदस्ते का फटना यकायक नारदमुनि का नमूदार होना और सबका जाना

नारदमुनि—आहा ! वाह ! वाह ! आज क्या खूब समा नजर आया जिसको देखकर रामचन्द्र जी का गुण और रूप याद आया बस बस जै हो जै हो—रघुपति महाराज की जय हो इस चराचर संसारको देखकर आपकी महिमा याद आती है।

शेर—है क्या कुछ राम की माया । कोई जाने तो क्या जाने ॥
गुनी होवे तो वह जाने । मुनी होवे तो पहचाने ॥

गाना—मोहे रामलखन मन भाया । सुन्दर सुन्दर सुन्दर चितवन, देख के मन ललचाया, मोहे० । है धनुषवान, दिलदयावान, अतिरूपवान, और गुण निधान, गुन गाया, मोहे०

शेर—मैंने सुना है राम से ब्याहेगी जानकी, लेकिन न दिलको राम के भायेगी जानकी, अब तक पसन्द मेरे न आयेगी जानकी हरगिज़ पती न राम सा पायेगी जानकी, काबिल अगर्चे राम के पायेगी जानकी, तो समझो राम को भी खुश आएगी जानकी

अद्भुत मुकुट है शोभा देता, जगमग जगमग होत अपार।
रामचन्द्र शोभा अपार गुण, गावैं उनका बारम्बार॥
यश जग में उनका गाया, मोहे राम लखन मन भाया।

शेर–(वार्ता) भला देखो तो जो जगत का प्रभु होनहार हो। और सीता उसकी नार हो, खैर! मैं अभी मिथलापुरी को जाता हूं। अगर जानकी को राम के काबिल पाऊंगा तो बड़ी खुशी मनाऊंगा।

नारद का जाना

प्रथम परिच्छेद (द्वितीय दृश्य)

(महल सीता) सीता का सम्मुख दर्पण रक्खे नज़र आना और नारदमुनि का प्रतिबिम्ब दर्पण में देखकर घबराना व गुल मचाना

सीता—हाय! हाय! हे ईश्वर दर्पण में किसने देखा

(सीता का नीचे को देखकर दहशत से भागना)

अरे! अरे दौड़ो! द्वारपाल दौड़ो जल्दी आओ और मुझे बचाओ

द्वारपाल—क्या है! क्या है! राजकुमारी क्या है?

सीता—पकड़ो! पकड़ो! इस हत्यारे को पकड़ो इसकी मुश्कें जकड़ो

पहला—घेरो! घेरो! उचक्के को चारों तरफ से घेरो

दूसरा—क्योंबे घूंसट लगावूं एक हाथ।

द्वारपाल—हां हां झपट के लगाओ एक लात

नारद—अन्धेर अन्धेर महाअन्धेर छोटा मुंह और बड़ी बात, अरे नारद, मुनि! और इस हाल में. केहरी शेर और तारों के जाल में अच्छा आओ कौनसा शूरवीर मुझे पकड़ने आया रोगी होकर काल से अकड़ने आया

सबका नारदमुनि की तरफ़ लपकना और नारदमुनि का आकाश को उड़जाना

पहला—हैं हैं भगवान यह क्या माया हुई यह कैसे हुई अब कहो कैसे पकड़ें कहां ढूंढें कहां जावें हाथों ही हाथों में छू होगया।

दूसरा—अन्धेर आंखों आंखों ही में लोप होगया

तीसरा—वाह जी वाह! आदमी था या छलावा

चौथा—सचमुच निकला तो भानमती का बावा

सीता—हाय हाय मैय्या यह नया अचम्भा देखकर मेरा जी तो धक धक करने लगा अरी सखियो आवो और सीता को बचाओ उफ़ यहां तो कोई भी नहीं, परमात्मा जानें सबकी सब कहां चली गई

पहला—यहां तो कोई चोर है ना चार है बे फ़ायदा चीख़ पुकार है

दूसरा—श्री राजकुमारी हमको आज्ञा है।

सीता—अच्छा तुम जावो और सखियों को जल्द पहुंचावो

सबका जाना सखियों का आना

शेर—तेरे चेहरे की रंगत प्यारी सीता हाय क्यों बदली।
बता यह प्यारी सीता प्यारी सूरत हाय क्यों बदली॥

शारदा—गोरे २ मुंह पर मुरझाई छाई है। ये फूल सी सूरत बिलकुल मरझाई है।

सीता—(गाना) कैसी शक्ल ये आई, देख कर मैं घबराई। आइने में है किसने देखा दो मुझको बतलाई ॥ कैं० ॥ कौन पुरुष ऐसा है जगत में, आया जो महलों माहीं। देखकर मैं घबराई। कैसी० ॥
सर पै जटा है मुंह पर दाढ़ी जोगिया रूप बनाई। बिना बुलाया महलों में आया शर्म ज़रा नहीं आई, देखकर मैं घबराई ॥ कैसी० ॥
इस पापी को देकर धक्के महलों से दो कढ़वाई, फिर न कभी यह आवे यहां पै कह दो यह समझाई ॥ देख ॥ कैसी०

सखियों का समझाना

गाना—कैसे बचन कहो कैसे बचन कहो नहीं कहना मुनासिब तुमको ये नारद मुनि हैं ज्ञानी, करती इज्जत सब रानी ये होते बाल ब्रह्मचारी, हम उन पर जां बलिहारी। करें नमस्कार अब हम सुनो तुम सब यही करना मुनासिब तुमको ॥ कैसे ० ॥

सीता—शोक महाशोक अवश्य यह अपराध हुआ वेग चलिए ऐसे मुनि के जरूर दर्शन करिये

सबका जाना

(तृतीय दृश्य) पर्दा जंगल

(नारदमुनि का गज़ब नाक गुस्से में दिखाई देना)

नारद—(गाना) अभिमान, अभिमान, अभिमान, अभिमान हुआ है सीता को अब दिल में लो मैं जान, अपमान किया मेरा जिसने, सहे दुखड़े हमेशा उसने, सीता को अब कैसे कैसे दुखड़े होंगे आन ॥ अभि० ॥
मैं भामण्डल पर जाऊं, और चित्र पट दिखलाऊं,

तसवीर खींच कर ले जाऊंगा दिल में ली ये ठान ॥ अभि० ॥
राजा जनक ने यह ठहराई दो रामचन्द्र परनाई, अब रामचन्द्र
और भामण्डल में होवे अति घमसान ॥ अभि० ॥
मैं खुशी हूं देख लड़ाई, मेरे दिल को है ये भाई, जब होगी
लड़ाई नाचूंगा में तननन तननन तान ॥ अभि० ॥

शेर—प्यास से सूखा है मुख है आग सारा तन बदन ।
जी में आता है कि अब दूं त्याग सारा तन बदन ॥
जानकी का गा रहा है राग सारा तन बदन ।
डस गई वह बनके काला नाग सारा तन बदन ॥
धूल में अभिमान उसका सब मिलादूं तो सही ।
बदकलामी का मजा उसको चखादूं तो सही ॥

क्योंकि ऐसा अपमान मेरा किसी ने नहीं किया जैसा कि आज जानकी के हाथ से दुःख पहुंचा

शेर—है ये सब कर्मों का फल है कर्म की महिमा अपार ।
पुरुष जो पाता है सुख दुख है वो सब कर्मानुसार ॥

यूं तो बड़े २ राजा रानियां मेरा आदर सत्कार करते हैं परन्तु उस पापन ने मेरी बात भी न पूछी मुझे देखकर यह शोर मचाया कि सारे महल को शीश पर धर उठाया चारों तरफ से धनुषधारियों ने बाणों और कटारों से आघेरा उस वक्त मेरी विद्या बड़ी काम आई बल्कि यूं कहो कि काल के मुंह से मेरी जान बचाई ।

शेर—काल ने घेरा था मुझको प्राण लेने के लिये ।
आगये थे दूत मेरी जान लेने के लिये ॥

बस ! बस ! ओ गुस्से की आग ठंडी हो ए ! अपमान की आग ठंडी हो अगर मैंने भी उस अपमान का बदला न लिया तो नारदमुनि न कहलाया । भामण्डल को दिखाकर बेकल बनाऊंगा फिर उसको उसकी करतूत का मजा चखाऊंगा ओह ! यह आहट कैसी आई ज़रा देखूं तो कौन आरहा है आहा ! यह तो भामण्डल ही आरहे हैं । इस

चित्र पट को रखकर छिपता हूं। देखूं तो कुंवर इसपर आशक्त हो क्या करते हैं

नारद का छिपना और भामन्डल का चित्रपट को देख मोहित होना

भामंडल—आहा यह किसका चित्रपट है जो हमको पाया उफ् ! कौन इसे जंगल में लाया ॥

अहा इसके रूप को चन्द्रमा भी पा नहीं सकता।
बस मेरे जी को संसार में और भा नहीं सकता ॥

शेर—सूरत है कैसी मोहनी सुन्दर है कैसी नार।
इस चित्रपट को देख कर कहता हूं यार बार ॥
तसवीर यार दिल में गवारा करेंगे हम।
शीशे में रुख परी का उतारा करेंगे हम ॥

नारद का ज़ाहिर होना

भामंडल—गुरु जी प्रणाम।

नारद—आनन्द रहो कुंवर आनन्द रहो कहो क्या समाचार है।

भा०—आपकी कृपा से आनन्द बहार है।

नारद—और यह चित्रपट किसका लेरहे हो ॥

भा०—हां हां लीजिये यह चित्रपट देखिये पहचानिये।

गाना—मेहरबानी हुई मुझपर जो यहां तशरीफ़ लाये हो ॥
मुन्तज़िर था मैं आने का बड़ी मुद्दत में आये हो।
मेरे दिल को है ये भाई। देखकर बेकली छाई ॥
देश देशों में घूम हो कोई तोफा भी लाये हो।

नारद—गाना चित्रपट येही सुन्दरी का तुम्हारे वास्ते लाया।
करो शादी खुशी से तुम यही मैं सोचकर आया ॥
आंख मृगनैनी कहलावे, कमर पतली जो बल खावे।

चाल है मस्त हथिनी सी, चांद भी देख शरमाया ॥
नाम है जानकी उसका पिता राजा जनक जिसका ।
मिले जोड़ा तुम्हारा अब, यही है दिल को अब भाया ॥

भामण्डल—(गा०) कैसी तसवीर पाई, मुझे जानो दिलसे ये भाई ।
आइना देख हो जिसको हैरां, जिस्म में है वो सफाई ॥कैं०॥
शर्मिन्दा जिससे कि हों चांद सूरज, वह शक्ल है नूर पाई ॥ मु०॥ क्या यही शक्ल है उस परी की, जिसकी ये तसवीर आई । ऐसी अनमोल बस्तु नहीं मुझपै, दूं क्या उसमें खिचाई ॥ मुझे० ॥

नारद—यह माना कि जुबां हिलाना कसूर है, मगर इन्साफ का यही दस्तूर है कि कहना जरूर है।

शेर—देखलो चल के वह कुछ दूर नहीं, बस में अपने हो बेबसी क्या है
खुद ही हो जायगा तुम्हें मालूम हाथ कंगन को आरसी क्या है

भामंडल—मुझे मालूम करना कुछ नहीं, शैदा बनूं अब मैं ।
समाई मनमें अब सीता, है सीता नित पुकारू मैं ॥

नारद—मैं जाता हूं और सीता से मिलने का यत्न बनाता हूं ।

भामं०—अच्छा मेरा भी प्रणाम लीजिये और दास पर जल्द कृपा कीजिये

जाना

पहला बाब—(चौथा सीन)

(मकान ऐश भामंडल)

(चपल बेग और भामंडल का दिखाई देना)

चोबदार—लक्ष्मी पत रक्षा करें, हरें शोक सन्ताप ।
सूरज चन्दर चौगुना, दिन २ बढ़ै प्रताप ॥
राजकुंवर की जै हो महाराज चन्द्रगत ने, दर्बार में आपको याद कियाहै

भामंडल—क्यों याद किया है बता क्या आज्ञा लाया है।

चोबदार—महाराज जल्द चलिये कि दर्बार आम है।

भामंडल—दर्बार से तो मुझको नहीं कोई काम है।

चपलवेग का यह नज़ारा देखकर ताज्जुब में आना और पूछना

चपलवेग—रे! कुंवर आज यह बतलाओ तो वहशत कैसी।
किसकी उल्फत में बनाई है यह सूरत कैसी॥

भामंडल—क्या बताऊं तुझे इस वक्त है हालत कैसी।
बस में अपने नहीं पूछो न यह तबियत कैसी।

चपलवेग—यह कुंवरा जी क्या, आज वहशत है तुमको।
ख़्याले सनम से जो, उल्फत है तुमको॥

भामंडल—मुनी एक तसवीर, दे गये हैं मुझको।
हुआ देख शैदा सुनाऊं क्या तुझको॥

चपलवेग—कहीं कहने की सच्ची होती हैं बातें।
अजब तरह की ये मुहब्बत है तुमको॥
उठो कुंवरा जल्दी से, पोशाक बदलो।
हमेशा से जैसी की आदत थी तुमको॥

भामंडल—यह सब कुछ सही, अब न फुरसत है मुझको।
करूं याद उसकी, सुनाऊं क्या तुझको॥

चपलवेग का गाना कुंवर अब नाम, उसका तुम बताओ।
है रहना उसका कहां, मुझसे जताओ॥
जो हो आस्मान में छिन भर में लावूं।
ज़मीं को फाड़ कर पाताल जाऊं॥
करूं ज़ेरे शहा दुनिया को अब मैं।
लावूं उसको उठा ताक़त ये मुझमें॥

भामंडल (गाना) नाम है जानकी, सुन उस परी का।
रूप सुन्दर ज़मीं, स्थान उसका॥

पिता राजा जनक, उसका बताया ।
कहूं क्या याद ने, उसकी सताया ॥

चपलवेग—अच्छा मैं जाता हूं और सीता को लाने का यत्न बनाता हूं

(चपलवेग का जाना)

भामंडल—मित्र जल्दी दर्शन दीजियें ।
आह मेरी प्यारी सीता तुझे कैसे पाऊं कौनसा कारण बनाऊं ॥

शेर—मद भरे नैन क्या क्या ही गज़ब ढाते हैं ।
काली नागन ये बने दिल को डसे जाते हैं ॥
मोहनी सूरत ने यह जादू डाला है, ।
तो असली सन्मुख सूरत देखकर मेरा कौन हाल होने वाला है ।

शेर—उफ़ तेरी जुदाई किसको, गवारा है जानकी ।
तेरे बैराग ने मुझे मारा है जानकी ॥
मजूबर हूं नहीं कोई चारा है जानकी

फिर दुबारा तस्वीर देख कर

जिसकी तस्वीर में वह नूर वह इन आंखों से दूर हाय ॥
हुस्न में सबसे जो लासानी है, वह—बस—तू है
खिज्ल जिससे कि किनानी है, वह—बस—तू—है
हर अदा जिसकी के मस्तानी है वह—बस—तू—है
हूर भी देख के दीवानी हो, वह—बस—तू—है

गाना—ये हूर नूर कुदरत के सांचे में ढाली बचना दुश्वार है,
काकुलके बीच से, डसती है आशिक को नागन ये काली, ये०॥
सोसन से लब हैं सारे गुलाबी, वह हल्की हल्की झल्की,
सफेदी में लाली ॥ ये० ॥
नक्शा कमर में है, बूद और नबूद का देखी नहीं लेकिन नाज़ुक
ख्याली ॥ ये० ॥

प्रथम परिच्छेद-पंचम दृश्य

[दर्बार राजा चन्द्रगत]

चोबदार—राजपति सरताज की जै हो राजकुमार ने दर्बार में आने से इन्कार किया है।

राजा—अरे यह तो बता क्यों इन्कार किया है।

चोबदार—मैंने कहा कुंवरा से चलो दर्बार आम है (बोले) दर्बार में तो मुझको नहीं कोई काम है।

राजा का गाना—वज़ीरो है कुंवर, क्यों ऐसा दिल सोग।
कि खाना खाए, गुज़रे हैं कई रोज़॥
उसे किस रोग ने घेरा बताओ, है उसका हाल क्या हमसे सुनाओ॥

वज़ीर—कुंवर के हाल से, वाक़िफ़ नहीं हम।
न उसके राज से वाक़िफ़ नहीं हम॥

राजा—भगवान जाने कुंवर के शरीर में, क्या रोग समाया है, क्या मन को भाया है।

वज़ीर—महाराज, राजकुमार को, किसी रोग ने घेरा है। किसी वैद्य को दिखलाइये औषधी पिलवाइये।

द्वारपाल—पृथ्वीराज की जै हो द्वार पर चपलवेग हाज़िर है।

राजा—अच्छा आने दो।

चोबदार—जो आज्ञा॥

चपलवेग—महाराज दर्बार हो दर्बार हो।
तुम्हारे हुक्म में कुल संसार हो॥

राजा—क्यों चपलवेग कहां से आ रहे हो।

चपलवेग—महाराज कुंवर के पास से॥

राजा—रोग का हमको कुंवर के, कुछ पता लगता नहीं।
कौनसा दुख होगया है कुछ पता सुनता नहीं॥

चप०—(गाना) जो हुक्म होवे सादिर, सर से बजा मैं लाऊं।
कुंवरा को याद जिसकी, दिलबर उसे मिलाऊं॥
नारद मुनी जो आए, तस्वीर खैंच लाए।
यह देखकर हुए वह शैदा, मैं क्या सुनाऊं॥जो०॥
बतलाया नाम उसका, है जानकी परी का।
राजा जनक पिता है, महाराज हुक्म पावूं॥ जो०॥
अब जानकी को लावूं. खाना जभी मैं खाऊं।
यही दिल में सोचा मैंने, कुंवरा को ला दिखाऊं॥जो०॥

राजा (गाना) यह क्षत्री धर्म नहीं जग में, लड़ें जो सन्मुख जा रन में।
कन्या कुंवारी उठा के लाओ, बुरा है सोचो तो मन में॥
राजा जनक को लाओ यहां पै. करै न सोच वह कुछ मन में
विद्या रूपी घोड़े बनो तुम, उतारो लाकर उसे बन में

चपलवेग—मैं बन कर के घोड़ा अभी जाऊंगा।
और राजा जनक को, उठा लाऊंगा॥

राजा—अच्छा जाओ जल्द लेकर आओ। हम भी जाते हैं और कुंवरा का दिल बहलाते हैं।

सब का जाना

प्रथम परिच्छेद-षष्ठ दृश्य मिथलापुरी

दो दोस्तों का आना और घोड़े की तारीफ़ करना.

गाना—यह घोड़ा है किसका यार, चलो अब देखें ज़रा॥ यह ०॥
पीठ पै उसके ज़ीन कसी है; कैसा नौ उम्र बना है॥ देखो यार यह०
रंग अजब है, चाल गजब है, राजों के लायक भला है॥ दे० यह०
इसको मित्र अब जल्दी से पकड़ो, रस्सी से इसको जगड़लो॥ यह०

पहला बाब सातवां सीन

मकान राजा जनक

दो दोस्तों का घोड़ा लेकर आना और तारीफ़ करना

दोनों का गाना—घोड़ा यह राज में आया, अहा हा हा अहो हो हो।
करें तारीफ़ क्या इसकी अहा हा हा अहो हो हो॥ घो०
बदन उम्दा बना ऐसा, साफ़ मानों हिरन जैसा।
चाल देखो अजब इसकी, अहा हा हा अहो हो हो।
पकड़ कर हम इसे लाये, बहुत मुश्किल में यहां आए॥
चढ़ें महाराज अब इसपर अहा हा हा अहो हो हो घो०॥

(राजा का घोड़े को पसन्द करना)

राजा—पसन्द है घोड़ा मेरी यह ज़रा चढ़कर के देखूंगा।
गर होगा चाल में अच्छा, बेशक ईनाम देवूंगा॥

राजा का घोड़े पर चढ़ना और घोड़े का आस्मान को ले उड़ना, सब मिथिला वासियों का मुतहइयर होना और अफ़सोस करना

सबका गाना—घोड़ा उड़ा लेकरके, राजा को बड़ा अफ़सोस यह।
होते हुए हम लोगों के, राजा गये अफ़सोस यह॥
पहिले से जो हम जानते, कहना न हर्गिज़ मानते।
चढ़ने से उनको रोकते, रोका नहीं अफ़सोस यह॥ घो०
निकलें जोपर भगवान अब, जाकरके पकड़ उसको अब।
हमसे उड़ा जाता नहीं, जावें कहां अफ़सोस यह॥
जो होता वह रणभूमि में, सरकाते उसको ज़मीन में।
निकला हमारे हाथों से मिलता नहीं अफ़सोस यह॥
स्वामि पै कुरबां होते हम, मिटता हमारा सब ये गम।
स्वामी की भक्ती कुछ न हुई, लेकर उड़ा अफ़सोस यह॥

प्रथम परिच्छेद-अष्टम दृश्य

भयानक जंगल

राजा जनक का एक वृक्ष को पकड़कर लटकना घोड़े का चले जाना जनक का अफ़सोस करना

राजा जनक—ओ ओ गिरा गिरा ठहर ठहर। उफ़ वह चौकड़ी
भरकर किधर गायब। अफ़सोस कैसी भूल हुई भगवान
यह संताप यह कलाप हे भगवान तू ही इस दुःख का
उपाय कर घोड़ा था या छलावा मुझको यहां क्यों लाया॥

शेर—ढूं ढूं उसको अब कहां, कुछ ध्यान में आता नहीं।
जाऊं मैं ईश्वर अब कहां, कुछ ध्यान में आता नहीं॥
कौन देश। किसका राज है, कहां जाऊं, कहां मर जाऊं॥

शेर—भला फिरूं मैं कहां भटकता, यह बन कहां तक तमाम होगा।
जो अंत इसका न हाथ आया, तो अपना क़िस्सा तमाम होगा॥

इधर भूख से प्राण निकले जाते हैं जी सनसनाता है प्यास से कलेजा मुंह को आता है. भला मुझ में इतनी शक्ति कहां जो दो कदम आगे चल सकूं, यहां की ठोकर संभाल सकूं।

शेर—भला ऐसे भयानक बनमें, अपना कौन साथी है।
जहां आकाश दुख देता हो, भूमि भी सताती है॥
अय ईश्वर बजुज़ तेरे और कोई मददगार नहीं,।
तू इमदाद दे और सेवक को चर्नों में ले॥

पर्दे का फटना और जैन मन्दिर का नमूदार होना राजा जनक को खुश होना और कहना

राजा जनक—अहा! वाह! वाह! वाहरे त्रिलोकी के नाथ तेरी
महिमा अपरम्पार है। तू ही सेवक का मददगार है।
अबतो पल भर में बेड़ा पार है॥

गाना—प्रभु दर्श लखा, मिला कैसा अवसर मुझको ॥
सब रंज ये दिल से भुलाया, प्रभु शर्ने तिहारे आया।
अब चरणों शीश नवाया, दुख दर्शन देख पलाया ।
दूर हों दुख, मिलें सब सुख, यह निश्चय हुई अब मुझको॥प्रभु०

राजा चन्द्रगत का पूजन करने आना, और आवाज सुनकर जनक का सिंहासन के पीछे छिपना राजा का पूजन करना

स्तुति--चन्द्रगत—प्रभु की महिमा अपरम्पार ॥ प्रभु ॥
वरनन करें कहां तक मुनि जन कहत न पावें पार ॥ प्रभु०॥
धन्य मात तुम, धन्य पिता तुम, धन्य तुम्हारा ज्ञान ।
धन्य भाव यह, धन्य क्षमा यह, धन्य जन्म औतार ॥ प्रभु०॥
सत व्यसन और चारकषाय ने, हमको किया हैरान ।
मोह जाल ने ऐसा, फांसा सुध बुध, दीनी बिसार ॥प्रभु०॥
जल चन्दन अक्षत शुभ, लेकर तामें, पहुप मिलाय ।
इहि विधि अर्घ चढावें स्वामी, कर्म नाश हो जांय ॥प्रभु०॥

राजा का सिंहासन के पीछे से आना और विद्याधरों का पूछना

प्रथम विद्याधर—राजा हो किस देश के, कौन तुम्हारा नाम।
आये हो किस देश से, क्या है तुम्हारा काम ॥

दूसरे विद्याधर का कहना—सोच हुआ किस वास्ते आखिर बदन तमाम
रहना है कहां आपका, बतलाओ तो नाम।

राजा जनक–गाना—मेरे कर्मों की लीला ने, मुझे बस आज घेरा है
जनक है नाम और मिथिला पुरी में राज मेरा है
अजब चक्कर में हूं क्योंकर, सुनाऊं हाल मैं अपना
सुनों तुम ध्यान दे करके, कहूं सब हाल मैं अपना
मैं सिंहासन पे बैठा कर रहा था न्याय परजा का
मुझे घोड़ा दिखाया मैं न समझा भाव परजा का
चढ़ा जैसे ही मैं उस पर, हुआ लेकर निहां मुझको

वह गायब होगया इक छिनमें, लाकरके यहां मुझको

परन्तु यह सब अपने कर्मों की लीला है। जब मनुष्य के पुण्य का उदय होता है तो सुख भोगता है और जब पाप भोगने का समय आता है तब दुःख उठाता है।

विद्याधर—अफ़सोस ! अफ़सोस !!

घोड़ा था, कि आफ़त की क़यामत थी, बला थी, भौंचला था
बिजली थी, छलावा था, हवा थी।

सब विद्याधरोंका गाना—रखो धीरज अपने मनमें, पहुचावें जनकपुरी छिनमें

दो०—मन्दिर हमारे को चलो, करो न सोच विचार।
चल कर भोजन पाइये, खाना है तैयार॥
करोगे इकले क्या बन में, पहुचावें जनकपुरी छिनमें।
दो०—विद्याधर का मुल्क यह, दिलमें लो यह ठान॥
राजा हैं ये चन्द्रगत, खड़े जो सम्मुख आन।
अपूरब है महिमा जग में, पहुंचावें जनकपुरी छिनमें।

राजा जनक—अच्छा तो चलिये।

विद्याधर—आइये २ और महाराज चन्द्रगत का यश बढ़ाइये॥

प्रथम परिच्छेद (नवां सीन)

दीवानखाना (राजा चन्द्रगत)

राजा जनक—अच्छा प्रतापवान मुझे आज्ञादीजिये और जाने दीजिये

राजा चन्द्रगत—क्यों क्यों अभी आपको ऐसी क्या जल्दी है।

राजा जनक—यही के मुझे घोड़े का आकाश में अचानक उड़ा कर लेजाना, प्रजा के अन्याय का मुझे बेहद ख़याल है न जाने मेरे पीछे उनका क्या हाल है॥

राजा चन्द्रगत—धन्य धन्य हमने टी घोड़ा भेजकर तुमको बुलाया है।
है मित्र चपलवेग वो जिसने मिलाया है।

गाना—पुत्री दान राजाजी मुझको दो अब, जरूरत है मुझे कहता था मैं कब।
हुवा आसक्त सुन कर पुत्र मेरा। करा खाना तरक रंजगमने घेरा॥
करो मंजूर दिलमें सोचो होवया। बताओ तो भला मुझमें कसर क्या।

शेर—कुंवर को न परवाह है जानकी। लगीनित है रट जानकी जानकी॥
उसे चित्र सीता का मन भाया है। वह नारदमुनी खेंचकर लाया है
न सोता न खाता न पीता है वह। उसे देख कर जानो जीता है वह॥

जनक—गाना—परन मैंने किया है रामको पुत्री के देने का।
परन पूरा यही होगा, नहीं कुछ और होने का॥
करूं तारीफ़ क्या यानी, न रखता है कोई सानी।
जगत शाकी नहीं कोई, राम बलभद्र होने का॥
है दशरथ मित्र भी मेरा, मुझे दुश्मन ने आ घेरा।
हुक्म तब राम को उसने दिया शत्रु हटाने का।
लखन और राम जब आये, मलेच्छ भागे नज़र आये
हुआ मुझको तअज्जुब उनके, एकदम भाग जानेका ॥परन०
बुला कर मंत्रियों को जब, परन मैंने किया यह तब।
यह रिश्ता राम को होगा, नहीं कहीं और होने का॥ परन०

चंद्रगत—गाना—करी तारीफ़ क्या तुमने, मलेच्छों के हटाने की।
पड़ी थी तुमको यह ही सिर्फ अपनी जां बचाने की॥
अगर एवज़ में कोई घर बार, भी मांगे तो तुम देते।
बहादुरी तुमने तब यह की, परन कन्या पठाने की॥करी०
शर्म आती है अब मुझको, करा क्या काम यह नीचा।
हैं क्षत्री धर्म के शत्रु, तुम मिट्टी ख्वार करने की॥करी०
वह हैं भूम गोचरी विद्याधर हूं मैं, वह हैं गीदड़ और मानिन्द शेर हूं मैं।
जो चाहूं कर दिखाऊं तुमको अब मैं, बुज़ुर्ग हो तुम सिर्फ करता शर्म मैं।
हम मंत्रों से करें देवों को वश में, उड़ावें हम विमानों को फ़लक में।

राजा जनक—गाना—उड़ा करती हैं चीलें, आस्मां पर।
मौत चींटी की आई, निकलें जब पर।
कोई भी नामवर तुम में हुए हैं, कि जैसे हम में तीर्थंकर हुए हैं।
हुए चक्रवर्ती वह भी तो हमीं हैं, और नारायण हुए वह भी हमीं हैं

(राजा चंद्रगत का गुस्सा करना और गज़ब नाक होना)

राजा चंद्रगत—अफ़सोस, अफ़सोस, ए आसमान फटजा ऐ ज़मीन
सिमट जा, ऐ बहादुरी! शहज़ोरी! निकल निकल,
और इस ज़ुबान ज़ोर को, चंगुल कर,

(चन्द्रगत का तलवार निकाल कर हाथ मारना चाहना)

वज़ीर—मारें बुला के क्षत्रियों का क़ायदा नहीं।
इस तरह क़त्ल करने से कुछ फ़ायदा नहीं॥

चंद्रगत—ऐ! जवां मरदी मुझ से दूर हो मजबूर हो।
चीलें व चींटी हमको, बताये ज़बान-ज़ोर।
देवो धनुप चढ़ाने को, और आज़माये ज़ोर।
घर जाके जल्द अपने, स्वयंवर रचाइयो।
देवे धनुप को जो चढ़ा, उसको ही व्याहियो।
कहने मेरे के कुछ भी, अगर होगया ख़िलाफ़।
मंगवाऊं जानकी को उठा, कहता हूं ये साफ़॥

जनक—उफ़ रे! ऐ राजपूती लोहू जोश में आ, ऐ क्षत्री होश में आ
ए आनदार खांडे! तू भी जौहर दिखा, और इस चन्द्रगत
की करतूत का मज़ा चखा।

शेर—पड़ा है इसको किसी, क्षत्रियों से काम नहीं।
अभी न खून बहाऊं तो, जनक नाम नहीं।

मंत्री—बस बस महाराज क्षमा कीजिए यह दो धनुप लीजिए
सवारी तैयार है मिथलापुरी को जाइये स्वयम्वर रचाइये।

(सब का जाना)

प्रथम परिच्छेद दसवां दृश्य

मकान राजा जनक की मिथलापुरी

(राजा जनक का अफ़सोस करते नज़र आना)

गाना—नये रंज ही सामने आयें प्रभु, छुटकारा मेरा होता ही नहीं।
गो वृद्ध अवस्था मेरी हुई, गला घोट मरा जाता ही नहीं ॥ नये०
मजबूर स्वयम्वर रचाऊंगा मैं, अवश्य परन को निभाऊंगा मैं।
जो यह राम लखन से चढ़ी न कमां, मुझसे जिन्दा रहा जाता ही नहीं ॥ नये०
स्वयम्वर की टाल करूं गर मैं अब, तो ले जाय पुत्री को विद्याधर तब।
यह भी तो होगा पूरा गजब इन्कार करा जाता ही नहीं ॥ नये०

अब मैं इस फ़िकर में हूं कि करूं तो क्या करूं

स्वयम्वर नहीं रचाता हूं तो, विद्याधर से क्योंकर पीछा छुड़ाऊंगा।
और राम लखन से धनुप न चढ़ा, तो फिर क्या बात बनाऊंगा ॥

कुछ सोचकर—नहीं! नहीं ऐसा नहीं होसकता कि रामचन्द्र से धनुप न चढे। अरे मूर्ख वह तो बड़े बलवान हैं रघुवंश खान्दान की जान हैं। अरे कोई है।

द्वारपाल—जै हो महाराज क्या आज्ञा है।

राजा—लो यह पत्र दर्बार में ले जाओ और मन्त्रियों को दे आओ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज दे आता हूं लाइये।

राजा—और सुनों मंत्रियों से कहो कि अभी सब राजाओं को बुलवाया जावे, और पत्र भेजा जावे ताकि सब राजा स्वयम्वर में आएं

द्वारपाल—अच्छा महाराज!

राजा का एक तरफ़ कुर्सी पर बैठकर अफ़सोस करना रानी का आना

रानी – मेरी मन की खुशी, मेरे मन की चैन, मेरे स्वामि, मेरे प्राणपति मन भाये, नैनों में न समाये, ऐ परमात्मा धन्य है ! धन्य ! तेरी लीला को धन्य है। तूने मुझे प्राण प्यारे से मिलाया मेरे मनका सभी दुःख मिटाया।

गाना—रहे कहां २ प्राण पति यह तन मन वारना जी। यह०
इस दासी से वेग बताओ, ज़रा न भेद अब हमसे छिपाओ।
सच २ बात हमें बतलाओ, करो अब देर नाजी॥ रहे कहां०
जहां गये थे तुम सुख स्वामी, जाने है यह अन्तर यामी।

राजा – हटो हटो जाओ अब जाओ, करो तकरार नाजी॥ यह०

रानी—तुम तो रहो सौतन घर जाके, तन मन प्राण तजूं विष खाके।

राजा—खंजर नश्तर अम्पर, दिलपर मारनाजी। यह०
दुनिया का रंग ढंग अजब है, कहें कहां तक सितम गज़ब है।
चंचल स्त्री तू अब खंजर, दिलपर मारनाजी। खंजर

शेर—अफ़सोस बात पूछनी, आती नहीं तुम्हें।
झठ खेलियां भी खेलनी, आती नहीं तुम्हें॥

(रानी का मुंह पर रूमाल डालकर रोनी सूरत बनाना)

रानी—मैं हूं टहलनी स्वामि, सताती नहीं तुम्हें।
पर एक आंख आज में, भाती नहीं तुम्हें।
सच तो यह है कि स्वामि मेरा आदर रहा न मान।

राजा—भला वह कैसे

रानी—अगर आपको मेरी चाह होती तो अपना हाल मुझ से साफ़ २ बतलाते, ज़रा भी न छिपाते।

राजा—माना दोष कुछ ना तेरा कसूर है, परन्तु तुझे हाल पूछना मंजूर है, और मुझे भी सुनाना जरूर है ॥ जो मुझको घोड़ा उड़ा कर लेगया था, वह घोड़ा न था बल्कि किसी भव का जानी दुश्मन था, विद्या के जोर से घोड़े का रूप बना कर आया और मुझको राजा चन्द्रगत के दरबार में पहुंचाया, राजा ने पहिले तो धन के वचन कहे फिर जानकी के रिश्ते के लिये जिकर लाया, मैंने क्रोध में आकर साफ इन्कार किया, इस पर वह बहुत झल्लाया वह बढ़ाया, कटार लेकर मुझे मारने आया, यह देख कर मुझे भी बल भर आया, दिलमें यह समाया।

शेर—टुकड़े करूं मैं चार अभी ना बकार के।
आया है काल शीश पै, पाजी गंवार के॥

उसने दो धनुष सागरावर्त और वज्रावर्त चढ़ानेको दिये हैं और कहा है कि घर जाकर स्वयम्बर रचाइयो जो स्वयम्बर न रचाया तो जानकी को उठवा मंगाऊंगा। चूंकि मैंने रामचन्द्र से प्रण किया है क्षत्रियों की एक जुबान है अगर रामचन्द्र से धनुष न चढ़े तो मैं अवश्य प्राण त्याग दूंगा।

शेर—अब कटे रुखसते हूं मैं है उम्मीद मुझे।
मौत का पैमाना है, लबरेज अब अखत्यार तुझे।

(राजा का जाना रानी का अफसोस करना)

रानी—हाय! अफसोस क्या मैं ख्वाब देख रही हूं या जाग रही हूं।
(हाथ की उंगली मुह में दबाकर)

हाय! हाय! मैं जरूर जाग रही हूं! ऐ ईश्वर ऐसा क्या मुझपर सितम टूटा जो सुत सुता और प्राण पति भी मुझ से छूटा। पुत्र को तो न जाने पहिले ही कौन उठा लेगया हाय हाय मुझको दाग मुफारकत देगया ऐ भगवान अब मेरी पुत्री भी मुझसे अलहदा होती है बस बस अब मैं अपने तन को हिलाक करूंगी इस खंजर खूंख्वार से किस्सा पाक करूंगी दामने उम्मेद को चाक करूंगी मेरा जीना ठीक नहीं है। (जाती है)

पहला बाब ग्यारहवां सीन

स्वयम्वर मण्डप

एक पंडित का आना

गाना—पंडित—मिथलापुरी में कैसा आनन्द आरहा है।
कैसा समा सुहावना, नगरी में छारहा है॥
वरनन करूं कहां तक मैं, क्षत्रियों की शोभा।
एक ऐक राजधानी मनको लुभा रहा है॥

सीता की तर्फ़ देखकर—मगन हो राजकुमारी मनमें मगन हो, आज समय भूम गोचरियों से स्वयम्वर में बड़ी शोभा का आनन्द है। निराली बहार है। इधर राजा हरीमान, महा बुद्धिमान, काली घटा पेशमान है। उधर राजा इन्दर मगध देश के राजा विराजमान हैं। वह काशी नरेश रूपवान, और यह पंजाब नरेश बुद्धिमान महा शोभावान। परन्तु सबका कहां तक वर्णन करूं।

किसी कवि ने कहा है॥ कवित्त

सोहैं क्षत्री शीश, जगमग जगमग, छवि सूरज चंद्र भी, देख लजावें।
सब क्षत्री सूरमा, आनबान बलवान, धनुषधारी कहलावें।
दुख दूर रहें, निश दिन, पलछिन, सुख सम्पति, जन के गुन गावें।
नित्त प्रजा का पालन करते, और बिगड़े काम सभी के बनावें।

राजा जनक—आज समय क्षत्रियों से सेवक की यही प्रार्थना है कि सब शूरवीर, अपना, अपना, बल दिखावें, और धनुष का चिल्ला चढ़ावें।

शेर—अपना भी यही प्रण है, धनुष को चढ़ायेगा
जैमाल पहिनेगा वही, सीता को व्याहेगा।

एक राजा—गुण तो कमा के देखूं, जिसपर रचा स्वयम्बर।
दूसरा राजा—नजदीक आके देखूं, जिसपर रचा स्वयम्बर॥
तीसरा राजा—और आजमाके देखूं, जिसपर रचा स्वयम्बर।
चौथा राजा—यारों उठाके देखूं, जिसपर रचा स्वयम्बर॥
सबका कहना—चिल्ला चढ़ा चढ़ाके, इसको घुमा घुमाके।
फेंको उठा उठाके, तोड़ो दिखा दिखाके॥

एक—हैं क्या तो पहले मैं उठाता हूं
दूसरा—ठहरो पहले मैं जाता हूं
तीसरा—नहीं नहीं मैं चढ़ाता हूं
चौथा—देखो देखो मैं घुमाता हूं

(धनुष की तरफ़ चढ़ाने जाना तथा एक राजा का गाना)

देखो करके ध्यान, हूं मैं कैसा बलवान, छोडूं पलमें कमां को चढ़ाके।
बड़ी आन शान, काहूं बांका जवान, तोडूं तन तन सी तान मैं उठाके।
अरेर सांप सांप, खाया खाया मोरे बाप, भागो यारो आप दुम दबाके।
छोडूं छोडूं मुंह को मोडूं, हाथ जोडूं मात पाके।
हैं हैं प्राण बचे लाखों पाये, धनुष वनुष ऐसी की तैसी में जाये?

पंडित—बस महाराज बल दिखा चुके, कुछ दक्षणा तो लेते जाओ,

एक बूढ़े राजा का गाना

चाहे कमां हो कैसी, बेशक चढ़ा के छोडूं।
मैं जानकी से फेरे बेशक फिराके छोडूं चा० ॥१॥
और इस धनुष के टुकड़े, बेशक उड़ाके छोडूं।
इसकी असल ही क्या है, बेशक जलाके छोडूं॥ चा० ॥२॥
हथियार बांधकर जब जाता हूं रण के अन्दर।
जिससे मुकाबला हो उसको हराके छोडूं॥ चा० ॥३॥

मुंह जोरी ऐसी मुझ में, होगी न हर बशर में।
अजमाओ चाहे कोई, लेकिन हटा के छोड़ूं ॥ चा० ॥४॥

शेर—बांका जवां हूं कैसा, शहज़ोर इस बलाका।
थप्पड़ से मारडाला, वह शेर जिसको ताका ॥

(हाथ लगाना) अरे रे यारो दौड़ना, बचाना, कहीं मेरे गप शप पर न जाना, उफ् कैसी धनुप कैसी कमां, पकड़े अपने तो दोनो कान

पंडित—ठहरो महाराज परशाद तो लेते जाओ

तीसरे राजा का गाना

देखो मेरे ताक़त भरी सारी पेट में।
इस कमां की असल ही क्या है, पेट से लूंगा लपेट में। देखो०
धनुप उठाकर शब्द कराऊं, राजा गिरें सब झपेट में। देखो०
डर डर के भागें राजा तो अह हा, माया को लूंगा समेट में ॥ देखो०

हाथ लगाना (शेर) हैं हैं जनक ने यह तो आग्नी धनुप बनाई।
इसको चढ़ाये कोई हिम्मत है किसमें भाई ॥
बिजली २ ओ बापरे खाया जलाया, बस २ मेरी तो दूर से नमस्कार है

पंडित—क्यों २ राजन अभी से अबके ज़ोर और लगाओ
चौथा—हटो हटो बस अब हमारे हाथ देखना

गाना

नहीं मुश्किल है कुछ इसका चढ़ाना, धनुप यह क्षत्रियों का हमने जाना ॥१॥
मैं वह हूं जिससे थर्राता ज़माना, मेरा तुम नाम लेकर आज़माना ॥२॥
ज़रा देखूं तो यह कैसी कमां है, कि जिसपर आपका सबको गुमां है ॥३॥

(हाथलगाना)—सचमच में यह तो अग्नि कुन्ड है, भला इसे कहीं आदमी हाथ लगा सक्ता है हैं हैं यह तो मैं हंसी करता था हंसी

(एक मसखरे का गाना)

हरफ़न में सबसे आला, समझो मत भोला भाला, हूं थान थान में आला देता हूं बुता माला, अभी उठाऊं चढ़ा दिखाऊं चीज़ ही क्या है वाहजी वाह, मैं कमां चढ़ाऊं ऐसे, नदाफ़ धुनकनी जैसे, अब देखो मेरा तमाशा, तोड़ूं मानिन्द बताशा, क्षत्री विचारे, मनको मारे चुप बैठे हैं वाह जी वाह हरफ़न०
(हाथ लगाना बेहोश होकर गिरना)

सब राजों का गाना

क्या काम किया सुन अरे जनक हत्यारे।
हम राजों को अब तूने बुलाके मारे ॥१॥ क्या०
यह धनुष नहीं है, काल की है एक बूंटी।
कहां डूब मरें हम ज़ोर लगाकर हारे ॥२॥ क्या०
क्या शत्रु जानकर मान भंग किया तूने।
करी स्वयम्बर की तैय्यारी बिना विचारे ॥३॥ क्या०
यह कन्या रहगई क्वारी समझले पापी।
देखेंगे वरे अब कौन पड़े तेरे द्वारे ॥४। क्या०
नहीं रहा जगत में कोई सूरमा हमसा।
किस्मत फूटी जो आये बिना विचारे ॥५॥ क्या०

शेर

यह क्या काम तूने किया अय जनक, बुलाकर हमें दुख दिया ऐ जनक।
धनुष विद्या से बस बनाई है यह, बड़ाई कुछ अपनी दिखाई है यह ॥१॥
नहीं जगमें कोई भी योधा रहा, जो देवे तेरे इस धनुष को चढ़ा ॥२॥
रही क्वारी लड़की तेरी जानले, वचन को हमारे तू सच मानले ॥३॥
नहीं चढ़सकी किसी से यह कमां, बताओ तो हम डूब जावें कहां ॥४॥

परन्तु तू पहले सामने आ, धातकर आंख मिला, यह धनुष नहीं जंजाल है, याद रख इस जाल में तेरा काल है।

शेर—ब्याहवे जो वे धनुप चढ़े मारेंगे तुझको हम।
दिलकी तमन्ना पूरी हो दिखलायें हाथ हम॥

ऐ जनक मदहोश होश में आ, यह खंजरे खूंख्वार, पहले होगा तेरे जिगर से पार, जो ब्याहेगा, मौत का मज़ा पायेगा,

शेर—मरने से अब डरते नहीं, पीछे न हटें हम।
अब मुन्तज़िर खड़े हैं कोई आगे डटें हम॥

गाना राजा जनक—उदै कब के हुए हैं पाप ऐ भगवान क्या कीजे।
निकलते क्यों नहीं दुख भोगते हैं प्राण क्या कीजे।
अचम्भा है न चढ़ने का धनुष दे मुझको ऐ ईश्वर।
कि हारे सूरमा सारे, थके बलवान क्या कीजे॥उदै०॥
जो आये हैं स्वयंवर में, चढ़ाने को धनुप क्षत्री।
सभी थे मित्र अब वैरी बने महमान क्या कीजे।
उठा लेजायेंगे अब जानकी को राज विद्याधर।
जतन अब क्या करूं खोये गये औसान क्या कीजे।

अफ़सोस अफ़सोस अब कहां जाऊं, कौनसा कारण बनाऊं, अपना मरण जगत की हांसी, विप खाऊं या खाऊं फांसी।

(लक्ष्मण को गुस्सा आना और रामचंद्र से पूछना)

गाना लक्ष्मण—जनक ने कही अनुचित बानी,
रघुवंशन के सामने, आय कही ये बात।
करूं गर्जना धनुप की, हुक्म जो पाऊं तात॥
हुई यह बेशक अपमानी॥ जनक०॥
एक धनुप क्या चीज़ है तोड़ देऊं ब्रह्मण्ड।
तुम देखत ऐसा करूं, जिसके हों सतखण्ड॥
जनक को हुई यह पशेमानी॥ जनक०॥
जो मैं ऐसा न करूं सांची लीजो जान।
रघुवर की मोको क़सम, गहूं न कर धनु बान,
हेच है मेरी ज़िंदगानी॥ जनक०॥

(यह कहते हुये धनुप हाथ से वगेल देना)

गाना रामचंद्र—चलो देखें कमां कैसी रुदा कानों में आई है
हुए हैरान सब क्षत्री करी जोर आज़माई है ॥चलो ०॥
करो जल्दी न अब लछमन लगाओ बेशक अब तन मन
उठा के पहले देखूं मैं, कि क्या इसमें सफ़ाई है ॥चलो०॥
धनुष पहिले उठावें हम, दूसरे जब उठाना तुम
चढ़ावें दोनों फिर मिलकर, यही दिल में समाई है ।
धनुष विद्याधरों की है, ज़रा लछमण समझलो तुम
अगर वापिस गये यहां से, तो होगी जग हंसाई है

धनुष उठाकर दोनों का गाना—अब धावो, धावो, धावो, क्या देखो
लछमन इधर उधर जल्दी से धनुष चढ़ाओ अब०॥
अब धनुष चढ़ावें मिलकर, नौकार मंत्र को
पढ़कर, दो तन मन वार, हो जै जैकार, राजा
जनक को धीर बंधाओ ॥ अब ०

रामचंद्र वार्ता कैसी कमां है ईश्वर हारे जो धनुषधारी ।
हल्की है बहुत यह तो कुछ भी तो नहीं भारी ॥
देखो यह रघुबंशन की शान है, और विद्याधरों की कमान है ।
जिसमें राम का एक बान है (आवाज़ होना धनुष चढ़ना)

लछमन—आहा जिस धनुष से हरेक हैरान है, देखो लछमन का तीर है
विद्याधरों की कमान है (आवाज़ होना धनुष चढ़ना)

(सबका जैजै करना तथा विद्याधरों का एकदम आशीर्वाद देना

गाना—धन है, धन है तुमको धन है ।
तुमको जाना, अब पहिचाना, धन है धन है तुमको धन है,
ताक़त तुमरी सब ने जानी, बड़े बलवानी हो तुम ज्ञानी ॥ धन ०॥
शेर—देखके बल हमें ताजुब आया ॥
जैसा सुना था नाम वैसा पाया ॥
अय दशरथ दुलारो, आंखों के तारो शाबाश, शाबास लछमण
हम तुमको अठारह कन्या देते हैं

लक्ष्मण—अच्छा महाराज जो आपकी इच्छा हो

पंडित जी—आओ आओ जनक दुलारी आओ रामचंद्र को जैमाल पहनाओ

सीता का रामचंद्र के गले में माला डालना सबका गाना

मुबारक शादी—शादी मुबारक बादी गाओ, मिल करके सब नर और नार।
धनुष चढ़ाया रामलखन ने, जान रहा है सब संसार ॥
भगवन इन पर साया रखियो, अर्ज़ यही है बारम्बार ॥ शा०।
बाल न बांका हो अब इनका, रहें हमेशा चैन बहार ।
इज्जत हम लोगों की रक्खी, हमें खुशी यह हुई अपार ॥
शुद्धाचर्ण करो सब अपने, जिसमे तुम्हारा होय सुधार ।
धर्म कमाओ धर्म कमाओ, धर्म करेगा बेड़ा पार ॥ शादी०॥
धर्म से इज्जत धर्म से शिवपुर, धर्म से दौलत होय अपार ।
धर्म न जिसने जाना आकर, बेशक उसको मिट्टी ख्वार ॥

ड्राप शीन का गिरना

द्वितीय परिच्छेद (वनोवासमार्ग)

प्रथम दृश्य (जैन मन्दिर)

भरत गाना—हे मन क्या अद्भुत है माया, सोचा क्या और क्यों घबराया।
एक ही कुल और एक तात है, एक ही मात और एक भ्रात है
अलग २ परिणति जीवन की, जैसा किया वैसा फल पाया। हे०
राम लखन ने पिछले भव में, पुण्य किया यश पाया जग में।
यही वजह है सुन मन मेरे, जप तप करके धर्म कमाया। हे०।
रंज नहीं है यह कुछ मुझको, जानकी व्याही क्यों है राम को।
बल्कि खुशी हुई मुझको बहुत यह, राम लखन ने धनुप चढ़ाया
दुनिया में दुख ऐसे देखे, लेखन से नहिं जायें लेखे।
नारायण हो चक्रवर्ती हो, तृष्णा से दुख सबने पाया। हे० ॥
बन में जाकर ध्यान लगाऊं, कर्म काट कर शिवपुर जाऊं।
तर्क करूं दुनिया के झगड़े, अब तो यही है मन में भाया ॥ हे० ॥

वार्ता—उफ! यह संसार कुटुम्ब परिवार, सब धिक्कार अन्त को साथ।
भाई न बाप रहेगा केवल अपना ही पुण्य और पाप रहेगा आप
मन मूरख इस माया मयी जाल महा जंजाल को टाल (भरत का
ऊपर को देखकर) अब भगवान तूही मदद देने वाला है ॥ (जाना)

(दशरथ महाराज का अठाई पूजा करने आना)

दशरथ—जै हो जिनेन्द्र देव की जय हो सेवक को चरणों में लीजिय
नित ज्ञान दर्शन दीजिये।

पूजन करना—अठाई पूजा करें जिनराज ॥ अठाई ॥
दुःख मिटेंगे कष्ट हरेंगे, वन्दूं श्री महाराज।
नन्दीश्वर सुर जाके प्रभु की, पूजा करें सब आज ॥ अठाई० ॥
शक्ती हो वहां पूजा करें जा, हर्ष सहित जिनराज ॥
जल चन्दन अक्षत शुभ लेकर, दीप धूप फल साज ॥अठाई० ॥

अष्ट कर्म को नष्ट करो प्रभु, दो शिव नगरी राज।
शर्म तिहारे हाथ है स्वामी, रक्खो हमारी लाज ॥अढ़ाई०॥

राजा—गन्धोदक भिजवाइये, पंडित जी महाराज।
रानी होंगी मुन्तज़िर, है शुभ अवसर आज ॥

पंडित—महाराज भिजवाता हूं, परन्तु एक स्त्री और बुलाता हूं।

राजा—चौथी रानी को यह बूढ़ा ले जायगा।

पंडित—अच्छा महाराज चौथी रानी को बूढ़े के हाथ भेजता हूं।

(बांदियों को जाने को कहना)

जावो २ जल्दी रानियों के पास गन्धोदक पहुंचाओ ॥

(बूढ़े से कहना)

बांदी—अच्छा महाराज लाइयेगा

बूढ़ा—महाराज जो हुक्म होगा बजा लाऊंगा
भला मुझ से कब इनकार होसकता है (सब जाते हैं)

द्वितीय परिच्छेद दूसरा सीन रनवास

चारों रानियों का बैठे दिखाई देना सखियों का गंधोदक लेकर आना तीनों रानियों को देना

पहली बांदी—अय कौशल्या माई महाराज को आपकी याद आई
यह भगवान का गन्धोदक लीजिए सर चढ़ाइये गुणगाइये

दूसरी बांदी—लीजिये सुमित्रा महाराज को है आप से मित्रता यह
जिनराज का गन्धोदक तैयार है, नेत्रों से लगाइये आवे हयात है

तीसरी बांदी—केकई महारानी गन्धोदक भेजने की महाराज ने मन में
ठानी, लीजिये शीश लगाइये माथे चढ़ाइये।

गाना—यह इमरत है नहीं पानी, लगाये जिसका जी चाहे।
कटैं सब पाप महारानी, लगाये जिसका जी चाहे॥
यह दुनिया में है यह पानी, न रखता है कोई सानी
होवें दुख दूर इक छिन में, लगाये जिसका जी चाहे॥ ये इमरत०॥
हुआ श्रीपाल कुष्टी जब, तो मैना ने लगाया तब।
बनी काया तभी सोरन, लगाये जिसका जी चाहे॥ ये इमरत०॥
रखै सम्यक्त जो दिलमें, न शंका हो ज़रा मनमें।
वही फल पायगा निश्चय, लगाये जिसका जी चाहे॥ ये इमरत०॥

तीनों रानियों का अपने २ कमरे में चले जाना चौथी रानी सुभद्रा का अफ़सोस करना।

सुभद्रा—अन्धेर अन्धेर! महा अन्धेर! महाराज ने अपने मन से बिलकुल भुला दिया। अफ़सोस मेरे लिए गन्धोदक भी न भेजा

गाना—अब जिन्दा रहना नहीं मुनासिब, मरूं अभी मैं ज़हर मंगाकर।
अभी भण्डारी को मैं बुलाकर, अवश्य खाऊं ज़हर मंगाकर॥
निरादर मेरा हुआ है ऐसा, न होय दुनिया में मेरा जैसा।
न भेजा मेरे लिये गन्धोदक, क्या कोई उनको मिला न चाकर॥ अब०
मोह जाल में फंसा बशर है, यह दुष्ट कर्मों का सब असर है।
न ऐसे मैंने करम किये थे, कि जिससे मेरा अब होता आदर। अब०।
यह रंज भारी मुझे हुआ है, न अपने जीने का अब मज़ा है।
हंसेंगी यह तीनों रानी मुझको, दिखाऊं कैसे मुंह अपना जाकर।

रानी—परन्तु अय दुखियारे मन, ठहर ठहर थोड़ी देर संतोष कर ज़रा होश कर, देख मुझे न खिसा न खिसा नहीं तो याद रख इस आग भरी आग से अभी शरीर जला दूंगी ख़ाक में मिला दूंगी। अय मन तुझे मैं जानती हूं कि तू विष खाकर ही ठंडा होगा बस अब न जला वरना इस आग भरी आग से शहर जंगल होगा।

रानी—अय भण्डारी अय भण्डारी इधर आ !

भण्डारी—हां महारानी क्या आज्ञा है ।

रानी—अरे ले ! यह रुपया ले जा और बाज़ार से विष मोल ला ।

भंडारी—अरे रे कहीं यह विष मुझको ही न काट खाय, जो हाथ लगाने से मेरा भी ढेर न होजाय

रानी—अय गंवार क्या बकता है ।

भंडारी—परन्तु रानी विष का क्या बनावेंगी किस को खिलावेंगी ।

रानी—अरे मूर्ख विष से मुझे सदा प्रेम है । किसी से कहना नहीं इस में एक भेद है ।

भंडारी—अच्छा लाओ (रुपया लेकर विष लेने को जाना)

दूसरा बाब तीसरा सीन बाज़ार शहर

भंडारी गाना—रानी ने क्यों ज़हर मंगाया मुझको है इसकी खटपट
भेद ज़रूरी है कुछ इसमें, बिना सबब नहिं ये गटपट।
राजा को दरबार में जाकर, करूं खबर इसकी झटपट ॥
शायद रानी हुई खफ़ा या, हुई लड़ाई कुछ खटपट। रानी०॥
लेकिन रानी से डर लगता, कभी कहे मुझको नटखट ।
खाल उड़ावे बदन सुजावे, मार २ कोड़े पटपट ॥ रानी० ॥
चुगली करना ऐब बुरा है, याद किया मैंने रटरट ।
उलटी हैं राजों की बातें, बेमतलब की क्यों खटपट ॥रानी०॥

बार्ता—परन्तु बूढ़ा मरे या जवान मुझको अपनी हत्या से काम, अब लो मेरा क्या है । मैं तो जाता हूं और ज़हर लेकर आता हूं

दूसरा बाब चौथा सीन

रनवास का दिखाई देना रानी का उदास बैठी नज़र आना, राजा का मुतहय्यर होकर हाल पूछना

राजा—हैं हैं रानी क्यों उदास है। किस लिए मन निरास है। क्या सरो
कार है ? क्यों ग़मगले का हार है।
तोड़ कर तारे मंगाऊं मैं अभी आकाश से,
जो कहे सोही करूं अब दूर कर ग़म पास से।

(भंडारी का ज़हर लेकर आना)

भंडारी—लीजिये महारानी यह दुकानदार ने रुपये का छः माशे ज़हर
दिया है ॥ मगर...

राजा—ठहर ठहर क्या अगर मगर लिये फिरता है।

भंडारी—कुछ नहीं महाराज महारानी जी ने ज़हर मंगाया है सो आपका
दास लाया है।

राजा—ला मुझे दे।

(भंडारी का ज़हर देकर जाना।)

राजा का गाना

तेरे मन में यह रंज समाया है क्यों, मुझे सच तो बता तुझे मेरी क़सम।
क्या रंज हुआ जो मंगाया ज़हर, मुझे सच तो बता तुझे मेरी क़सम ॥
तुही रानियों में है प्यारी मुझे, नहिं तुझ से सिवा कोई प्यारी मुझे।
तुही प्यारा समझती है प्यारी मुझे, मुझे सच तो बता तुझे मेरी क़सम ॥
क्यों जीने से तू बेज़ार हुई, क्या मुझ से ख़ता दिल्दार हुई।
क्यों मरने को तू तैयार हुई, मुझे सच तो बता तुझे मेरी क़सम ॥

रानी—महाराज मुझ से क्या पूछते हो अपने मन से पूछिये
बन्दी से पूछिये न बिगाने से पूछिये।
मतलब जहर मंगाने का खुद दिल से पूछिये।

राजा—अफ़सोस अगर मैं अपने मन में समझता तो प्राण प्यारी से न पूछता।

रानी—लीजिये मैं ही अपना मरम सुनाये देती हूं।

गाना—मैं वही हूं पापन सुनो पिया, जिसे दिल से तुमने बिसारदी।
कोई कर्म खोटा उदय हुआ, जभी दिलसे तुमने बिसारदी।
न जिऊंगी मनमें ये जान ली, तुमने वे मुरव्वती ठान ली।
करूं अब जतन कहो कौनसा, दिल से तुमने बिसार दी॥ मैं०॥
जिनकी मोहब्बत है तुम्हें, वेशक गन्धोया मिला उन्हें।
मुझे भेजने से क्या काम था, जब दिल से तुमने बिसार दी॥ मैं०

राजा—अच्छा २ अब मैं जान गया पहिचान गया मैंने गन्धोदक चारों के वास्ते भेजा है मगर आश्चर्य है कि एक के पास क्यों नहीं पहुंचा है इसमें जिसका अपराध पाऊंगा इस खंजरे खूंख्वार से सर उड़ाऊंगा मौत का मज़ा चखावूंगा, जग का द्वार दिखाऊंगा।

शेर—महापापी को अभी जाकर मिटाऊं तो सही।
जायका अपराध का उसको चखादूं तो सही।
टुकडे टुकडे आज मैं उसके उड़ादूं तो सही।
खूं बहाऊं खाक में उसको मिलादूं तो सही॥
अफ़सोस अगर मैं कुछ देर और न आता तो रानी को जिन्दा न पाता

(बूढ़ा गन्धोदक लेकर आता है)

बूढ़ा—महारानी सुख से रहें, रहे राज अरु ताज।
गन्धोदक लाया हूं मैं, दे भेजा महाराज॥

राजा—उफ़ महाराज का बच्चा आया अब काल खैंच कर लाया।

राजा का तलवार खींचना और रानी का पकड़ना

अभी इसके टुकड़े उड़ाऊंगा, हुक्म अदूली का मज़ा चखाऊंगा।

रानी—सुनो सुनो स्वामी सुनो क्षमा कीजिये इस बूढ़े ब्राह्मण पर दया कीजिए क्रोध को टालिये अपने आपे को संभालिये ॥

बूढ़े का गाना—मो पै क्रोध उचित नहीं सुनो महाराज ॥ मो पै० ॥
मैं बेकसूर सुनिये हजूर मजबूर हुवा महाराज ॥ मो० पै०॥
दुर्बल शरीर, चलूं होत पीर, अब वृद्ध हुआ महाराज ॥मो पै०॥
आंखोंका नूर, सब हुआ दूर, ज्ञान नहिं ऊंच नीच महाराज॥मोपै०
पीठ बनी ऐसी समान, मानों जवान खैंची कमान,
अब काल चाहूं महाराज ॥ मो पै० ॥

महाराज २ छुड़ादो छुड़ादो मेरी जान छुड़ादो, आपको पुण्य होगा। गुण होगा, मैं इस दुख भरी जीविका से महादुखी हूं। आह! एक वह दिन भी था, कि जब मेरी भुजा हाथी के सूंड समान थी। और जांघ मेरी गजबन्धन के तुल्य थी। तुम्हारे बाप के सामने का लाड़ लड़ाया इस शरीर ने अनेक शत्रुओं को मारा। और सब जगह नाम पाया। परन्तु अब लकड़ी के सहारे चलता फिरता हूं। अवस्था के दिन पूरे करता हूं जो दम भी रहा हूं उसका आश्चर्य करता हूं। आह सब धरती मुझको श्याम मई दीख पड़ती है। पैर रांखूं काहू, और जाय पड़े काहू और महाराज मुझे काल का डर नहीं जैसा कि आपके हुक्म चूकने का डर है

शेर—चाहे तो क्षमा कीजिये, चाहे सज़ा दीजिये।
छुट जाऊं मैं झगड़ों से, अब इतनी दया कीजिये।

राजा दशरथ—अच्छा जाओ हमने क्षमा की।

बूढ़ा—धन्य है धन्य है महाराज आपको धन्य है।

(बूढ़े का चला जाना)

दशरथ —अफ़सोस ! अक्ल कहां मारी गई। पापी बना जाता था मैं
मार कर दुर्बल को हत्यारा बना जाता था मैं ।

अफ़सोस ! अफ़सोस अय दशरथ अफ़सोस है ।

यह जवानी सहजोरी तीन दिन की मेहमान है, अन्त को फिर बुढ़ापे का ध्यान है, बस जब बुढ़ापा आयेगा, तो कुछ धर्म नहीं कमाया जायगा। क्योंकि सब इन्द्रियां इस बूढ़े की तरह बेकार होजायेंगी। बस बस अब संसार को त्यागना चाहिये और आत्मा का ध्यान लगाना चाहिये और राज काज रामचन्द्र को देना चाहिये।

दशरथ का—रे मन मोह नींद अब छोड़ो, जग की माया अपरम्पारा ।
गाना सकल दुख भुगतै जिय इसमें, धृक २ है यह सब संसारा ॥रे०॥
राज संपदा धन सुत नारी, सेवक सेना आज्ञाकारी
जन्मन मरण इतने भुगते, भ्रमत फिरा जैसे मतवारा ॥ रे० ॥
चहुं गति में पर्य्याय लही हैं, रंज मात्र साता न भई है ॥
अब जो ज्ञान दृष्टि से देखा, धन्य धन्य मुनि पद अविकारा। रे० ॥
ज्ञान मई निज रूप है मेरा, क्रोधादिक तस्कर ने घेरो ।
पुन्य उदय अब अवसर आया, जो मैंने वैराग्य संवारा ॥ रे०॥
राज पाट का त्याग करूं अब, निज समता ही भाव धरूं अब ॥
तपकर अतुल सुःख को पाऊं, यही निश्चय मैंने मन धारा ॥ रे०॥

(राजा का जाना)

दूसरा बाब-पांचवा सीन

दर्बार राजा चन्द्रगत का दिखाईदेना

मंत्री—महाराज कुंवरभामण्डल दर्बार में आये हैं। कुछ कहना चाहते हैं

राजा चन्द्रगत—अच्छा जो कुछ कहना है बयान करें ॥

भामण्डल का गाना—पिता मजबूर हो आया यहां पर।
वह दस्फ हूर बतलाओ कहां पर॥
न दिन को चैन शव को नींद आवे।
हमेशा याद ही उसकी सतावे॥
हुक्म पाकर जनकपुर को धाये।
खबर प्यारी पता कुछ वह न लाये॥

राजा चन्द्रगत—अब वज़ीरो जनकपुरी का ठीक २ हाल बयान करो।

मंत्री—दिये थे दो धनुष हमने, देख अर्मानता निकले।
मगर वह तो बला निकले, गज़ब निकले सितम निकले।
लखन और राम बेशक सूरमा, दोनों बहम निकले।
कि जोधा ऐसे दुनिया में, जो देखें हैं तो कम निकले॥ दिये०
मिलाकर दोनों भाई ने, चढ़ाये वह धनुष ऐसे।
कि जैसे दिन को सूरज शव को चंदा आस्मां निकले॥ दिये०
कहा था सो हुआ कुंवरा, न्याय शास्त्र धर्म है यह।
जवां हारी नहीं होना, चाहे तन से यह जां निकले॥ दिये०

भामण्डल का गाना

बहादुरी यह नहीं माने, निरे सब बुज़दिल निकले।
कायर निकले सायर निकले, निहायत पुर खतर निकले॥
धनुष से काम रण में था, दिये वो आज़माने को।
करा मतलब सभी उल्टा, निरे सब बा अकल निकले॥
मैं जाऊं और उन्हें देखूं, कैसे बलवान योधा हैं।
मुझे उम्मीद कामिल यह न जिन्दा हाथ से निकले॥ बहादुरी॥०

शेर—बिगाड़ो काम और बातें बनाकर के भले हो तुम।
बहुत चलते हो बेशक चुलबुले और दिल चले हो तुम॥

वार्ता—बस २ अब वज़ीरो तुम्हारी जवांमर्दी देखली तुम्हारी बहादुरी पहचानली सुअक्ल तुम्हारी जानली, अब मैं खुद जाऊंगा, इस खंजरे खूंख्वार से मान घटाऊंगा और प्राण प्यारी को लाऊंगा दिलकी मुराद पाऊंगा (जाना)

राजा चन्द्रगत—अब वज़ीरो रोको कुंवर को रोको मनह करो ताकि वह इस हरकत से बाज़ आए ।

मंत्री—अच्छा महाराज अभी जाते हैं और उनको समझाते हैं (सबका प्रस्थान)

दूसरा परिच्छेद छठा दृश्य पर्दा जंगल

भामंडल का विमान से उतरते नज़र आना और जातीय स्मरण का होना यानी पिछले भव की याद आना वन को चारों तरफ़ से देखकर

गाना

भामंडल—फूला फला देखा था, ये वन पेश्तर ज़रूर ।
कहती है याद वन की, मैं आया इधर ज़रूर ॥ फूला० ॥
भूला मैं प्यारी अपनी को, माया ये क्या हुई ।
दिल में ख़याल गुज़रा, वह न है मगर ज़रूर ॥ फूला० ॥
उल्फ़त हुई बहन से ये अन्याय क्या हुआ ।
कुछ पहले भव में पाप किया मैंने पर ज़रूर ॥ फूला० ॥
राजा था मगध देश में कुंडल के नाम का ।
पापी बना मैं विप्र की स्त्री हरी ज़रूर ॥ फूला० ॥
राजा जनक के जानकी हम जोड़वा हुए ॥
वह विप्र देव होके उड़ा ले गया ज़रूर ॥ फूला ० ॥
पहले तो उसने सोचा कि दरया में फेंक दूं ॥
दिल में दया उपजी दिया मुझको बचा ज़रूर ॥ फूला० ॥
विद्याधरों के राज में जा करके तब मुझे ॥
माँ बाप चन्द्रगत बने पाला मुझे ज़रूर ॥ फूला० ॥

नौकर—हे कुंवर यह क्या ख़याल है क्या मलाल है ।

भामण्डल—बसभाई यहां से घर को वापिस चलो ।

दूसरा परिच्छेद सातवां दृश्य

महल राजा चन्द्रगत

(भामंडल से राजा चन्द्रगत का हाल पूंछना और गाना)

चंद्रगत—क्यों हुआ लागिर बता क्या रंज तुझको ऐ पिसर ।

क्या हुआ और क्या किया मुझको बता दो ऐ पिसर ॥
सैकड़ों हूरें करें ख़िदमत तेरी सुन अय पिसर ।
जिसको दिल चाहे तुम्हारा और रखना अय पिसर ॥ क्यों० ॥
जानकी सी सैकड़ों ब्याहूंगा तुझको अय पिसर ।
भूल उसकी याद को सुन अय मेरे प्यारे पिसर ॥ क्यों० ॥
मां हुई ग़म में तेरे तुझ से भी लागिर अय पिसर ।
देख वह आती है सम्मुख बोल कर खुश अय पिसर ॥ क्यों० ॥

(रानी का इस्तफ़सार हाल पूछना)

माता का गाना—अय लाडले बता तेरा यह हाल क्यों हुआ ।

क्या दुख है बेटा तुझको यह अहवाल क्या हुआ ॥
गर जानकी को राम ने ब्याहा तो ब्याह लो ।
राजा के बेटे हो तुम्हें यह रंज क्या हुआ ॥ अय० ॥
बेटा हज़ारों जानकी ख़िदमत करें तेरी ॥
बच्चा अभी समझ नहीं मालूम यह हुआ ॥ अय० ॥

भामंडल—अय माता ज़िंदगी मेरी ख़ाक है जीना मेरा नाहक़ है ।

गाना—मैं लगूं भाई लगे वह बहन मेरी सुन पिता ॥

शील को दिलसे हटाया पाप यह कीना पिता ॥
था मगद एक देश उसका था मैं राजा अय पिता ॥
विप्र की स्त्री हरी अन्याय यह कीना पिता ॥ मैं लगूं० ॥
विप्र तो मर कर हुआ स्वर्गों में जाकर देवता ॥
मैं हुआ सुत जोड़वा राजा जनक के सुन पिता ॥ मैं लगूं० ॥
आपने मुझपर कृपा की और उठाया गोद में ॥

करुना उपजी मुंह को चूमा मुझको पाला अय पिता ॥ मैं लगूं० ॥

(राजा चन्द्रगत को वैराग्य होना)

चन्द्रगत—उफ्, यह दुनिया, आहा वाकई यह दुनिया शत्रु है आहा मैं समझा मनुष्य को इन दुनिया के झगड़ों में फंसकर पापों के सिवाय और कुछ हाथ न आएगा।

(शेर)—करनी करे तो पाप की फेर करे पछताय ॥
पेड़ बोये बबूल का तो आम कहां से खाय ॥

राजा चन्द्रगत का गाना

फंसे दुनिया में जो मूरख सदा नाशाद होता है ॥
इसे जो त्याग देता है वह ही दिलशाद होता है ॥
जनक सुत और भामंडल असल में बहन भाई हैं ॥
हुई दोनों में यह उल्फत गजब दुनिया में होता है ॥ फंसे० ॥
यह दुनिया दुश्मने जां है हमेशा याद रक्खो तुम ॥
करे नर्कों में वासा जो मोहब्बत इससे करता है ॥ फंसे० ॥
कहीं मरने का डर दिलमें कहीं बीमारियां तनमें ॥
कहीं रंजो अलम देखा कोई बेज़ार होता है ॥ फंसे० ॥
किसी का भाई दुश्मन है किसी की नारि कलिहारी ॥
किसी को कुछ किसी को कुछ कोई आज़ार होता है ॥ फंसे० ॥
कोई गर आज सज धज के है बैठा तख्त शाही पर ॥
वह ही कल खाक में मिलने को बस तय्यार होता है ॥ फंसे० ॥
अगर दनिया में सुख होता तो तीर्थंकर नहीं तजते ॥
बिना संसार के त्यागे नहीं उद्धार होता है ॥ फंसे० ॥

वार्ता—बस अय पुत्र अब मैं राज पाट को छोडूंगा और परमात्मा का ध्यान धरूंगा। मुनीश्वर के पास जाकर दिक्षा लूंगा वैराग्य धारण करूंगा (चलाजाना)

दूसरा बाब (आठवां सीन)

[पर्दा भयानक जंगल]

भूत हित स्वामी के पास राजा चन्द्रगत का आना और स्तुती करना और उसी वक्त राजा दशरथ व रामचन्द्र लछमन व सीता व भामंडल सबका आना और सबका आपस में मुलाकात करना और राजा चन्द्रगत के आदमियों का भामंडल को मुबारिकबादी देना सीता का सुन-कर प्रेम से व्याकुल होना।

राजा चन्द्रगत का गाना

मुझे भी शर्ण लेवो अपनी, बख्श दो खता हुई जितनी।
मोपे कृपा कीजिये, दीजे मोको ज्ञान।
रहना समझा मैं यहीं, था मुझको अभिमान ॥
उम्र यों दूध गही चलनी ॥ मुझे० ॥
जैन धर्म में मीतपो, दिक्षा दो महाराज ॥
राज पाट सुत नारि सब, छोड़ दिये मैं आज ॥
सहा दुख तृष्णा हुई जितनी ॥ मुझे० ॥
भामंडल गद्दी देऊं, देऊं सगरो राज ॥
ध्यान धरूं परमात्मा, शिव नगरी के काज ॥
आयु है दुनिया में कितनी ॥ मुझे० ॥

वार्ता—अब विद्याधरो राज पाट का मालिक आज जनक सुत करदिया, और हमने परमात्मा का ध्यान धर दिया, अब इनका हुक्म मानना और अपना राज समझना, लो इसके हम राजतिलक करते हैं और अपनी गद्दीपर स्थापित करते हैं।

मुनिमहाराज—धन्य है धन्य है चन्द्रगत धन्य है मनुष्य जनम को पाकर वृथा न गंवाना चाहिये, चिन्तामणी रतन को पाकर काग हेत न फेंकना चाहिये

(विद्याधरों का मुवारिकवादी देना)

मुबारिकबादी

जनकसुत अब हुवा राजा मुबारिक हो मुबारिक हो ॥
उसे यह ताज और यह तख्त राजा का मुबारिक हो ॥
करी जो तर्क दुनिया को हुये लौलीन ईश्वर के ॥
उन्हें हो राज शिवपुर का यह आजादी मुबारिक हो ॥ जनक० ॥
जनकसुत की विजय हो चारों दिस झंडा बुलन्दी का ॥
सदा सुनकर जनक को आज यह मुजदाह मुबारिक हो ॥ जनक० ॥

सीता का मुबारिकबादी सुनकर बेचैन होना और रामचन्द्र जी से आज्ञा मांगना

सीता का गाना

सदा यह कैसी मेरे कान में है आई आज ॥
जनक सुत है वह मेरा भाई जिसको हो यह ताज ॥
फड़क रही थी मेरी आंख पहले ही बांई ॥
थी मुझे पहलेही उम्मेद खुशी हो ये आज ॥ सदा० ॥
पैदा होते ही उठा लेगया सुर भाई को ॥
ढूंढ़ते २ जिसका यह पता पाया आज ॥ सदा० ॥
जल्द मो भाई से मिलने दो कलेजा धड़कै ॥
ना कभी भूलूंगी अहसान तुम्हारा मैं आज ॥ सदा० ॥
मिलने से रोको नहीं मिलने दो भाई से जरूर ॥

हाथ जोड़कर प्रार्थना करना

खुशी का दिन है कि किसमत ने बावरी की आज ॥ सदा० ॥

रामचंद्र का गाना—दिल में मशर रखो प्यारी ज़रा तुम।
बेशक मिलायेंगे प्यारी तुम्हें हम॥
मैं भी तो पूछूं कि क्या मामला है॥
हां जिससे पेचीदा बेशक हुए हम॥ दिल में०॥
मैंने सुना है जनक सुत हो राजा।
है कौनसा वह बशर देखेंगे हम॥ दिल में०॥
मुनीश्वर से पूछूं कि क्या मामला है।
जनक सुत का सारा कथन पूछेंगे हम॥ दिल में०॥

रामचंद्र का मुनीश्वर से पूछना और उनका जवाब देना

रामचंद्रमहाराज सेवक का यह प्रश्न है कि जनक सुत जिसकी के मुबारिक बादी गाई गई है यह कौन है क्या वाकई वह सीता का भाई जनक का राजदुलारा है।

मुनीश्वर—रामचंद्र-हां हां हां-क्या अच्छा सवाल है लो सुनो चंद्रगत को जो आज वैराग्य हुआ है वह इस ही कारण से हुआ है। भामंडल जो कि सीता का भाई जोड़वां पैदा हुआ था बाल अवस्था में सो रहा था सो उसके पिछले भव का एक ब्राह्मण का जीव जिसकी के इसने मगध देश में कुंडल मंडल राजा होकर स्त्री हरी थी वह उसके वियोग में अत्यंत दुखी हुआ था तब उसने तपस्या की जिसकी वजह से वह ज्योतिषी देव हुआ वह अपनी जगह जा रहा था कि एक दम उसका विमान अटक गया उसने अवधि में विचारा तो मालूम हुआ कि जिसने तेरी स्त्री हरी थी उसने आज जनक के जन्म लिया है बस फौरन उसने बालक को उठा लिया पहले तो उसने सोचा कि दर्या में फेंक दूं बाद में जब कुछ दया उपजी तो राजा चंद्रगत के राज में पहुंचाया फिर नारदमुनी जो कि सीता का चित्रपट खेंचकर लेगया था उसे यह देख कर मोहित हुआ अब भामंडल को जाति स्मरण हुआ है और पिछले भव की बात सब जान गया है।

सीता का एक दम भामंडल को चिपटना भामंडल व सीता दोनों का मिलकर गाना

सीता—मेरा भाई बेशक यह है मेरा भाई।
हुए जोड़वा दोनों हम बहन भाई॥

भामंडल—बहन को न समझे हुआ पाप हम से।

सीता—कर्म खोटे बेशक किये ऐसे भाई।

भामंडल—पिता मात भी हैं कुशल से बताओ॥

सीता—तेरा रज उनको करै याद भाई॥

भामंडल—बहन जल्दी से अब मिलाओ उन्हें तुम।

सीता—अभी आदमी भेजती हूं मैं भाई॥ मेरा भाई बेशक० ॥

(सीता) द्वारपाल जाओ और पिता को भामंडल की खबर पहुंचाओ

द्वारपाल—अच्छा महारानी अभी जाता हूं।

(पर्दा गिरना)

बाब दूसरा नौवां सीन

(मकान ऐश जनक)

राजा जनक का सोते दिखाई देना द्वारपाल का आना और कहना

द्वारपाल—महाराज आपके पुत्र भामंडल आये हैं सीता ने आपको बुलाया है, आपका पुत्र आया है

(राजा जनक का स्वप्न अवस्था में ताज्जुब में होना)

जनक का गाना

स्वप्न दिखाई देता है, क्या स्वप्न दिखाई देता है॥
अशुभ कर्म ने मुझको सताया॥ सोते में आ दिल घबराया॥

ऐसा कहां मैं पुन्य किया ॥ क्या स्वप्न दिखाई देता है ॥ क्या० ॥
ऐसी कहां तकदीर है मेरी ॥ बिछड़ा मिले जो पुत्र सवेरी ॥
जाऊं कहां जो पुत्र मिले, क्या स्वप्न दिखाई देता है ॥ क्या० ॥

द्वारपाल—महाराज क्या ख्याल है, क्या मलाल है आपका पुत्र अवश्य मिलेगा, आप जरूर जाग रहे हैं

राजा—फिर आवाज़ सुनी यह मैंने, पुत्र कहां है रंज यह सहने ॥
इसलिये यह ख्वाब दिखा, क्या स्वप्न दिखाई देता है ॥ क्या० ॥

द्वारपाल का गाना

दिलमें करो विचार अय राजन सुनो ज़रा ॥
बेदार हो स्वप्न नहीं देखो तो तुम ज़रा ॥
विद्याधरों के राज में था पुत्र आपका ॥
है वह अयुध्या नगरी में रक्खो सबर ज़रा ॥ दिलमें० ॥
चलिये अवश्य देर अब हर्गिज़ न कीजिये ॥
हैं मुन्तज़िर वह आपके राजन चलो ज़रा ॥ दिलमें० ॥

राजा—अच्छा अय द्वारपाल तू मुझसे हम आगोश हो ताकि मुझको होश हो

द्वारपाल का आपस में बगलगीर होना—राजा का कस्दकरना

राजा—अच्छा हम अपनी स्त्री सहित अभी चलते हैं

दूसरा बाब दसवां सीन

अयोध्या नगरी में सीता व भामंडल का दिखाई देना भामंडल का पैरों पर गिरना राजा जनक का आशीर्वाद देना

जनक का गाना

अय पुत्र मुझसे मिलातू चिरंजीव रह सदा ॥
तन मन यह तोपै वारदूं हूं तुझपै मैं फ़िदा ॥

भगवन ने कृपा करी हो उसका क्या वर्या ॥
जैसी खुशी मिली मुझै सबको मिले सदा ॥ अयपुत्र० ॥

जनक की स्त्री—आपुत्री तूभी गोद में हो उम्र की दराज़ ॥
जब तक कि चांद सूरज है जीते रहो सदा ॥

भामंडल—पिता जी आप मेरे हमराह विद्याधरों के राज को चलिये और मिथला पुरी का राज कनकसिंह चचा को दीजिये

जनक—अच्छा बेटा जैसी आपकी राय होगी वैसा किया जावेगा

सबका जाना

दूसराबाब ग्यारवांसीन

(पर्दारास्ता)

भरत का आना और वैराग्य का दिल में खयाल करना बांदी केकई का सुनना और रानी से जाकर कहना

भरत का गाना

पिता जो चले मज़ो मांही, ध्यान धरूं मैं भी संग जाई ॥
तर्क करूं दुनिया को मैं, तजदूं धन और माल ॥
नफ़रत इनसे है मुझे, मोह का है जंजाल ॥ फंसे जो जालमें हो माही ॥
फलकों दिक्षा लेंयगे, मैं भी लूंगा साथ ॥
लाख समझाये कोई, मानूं नहीं एक बात ॥ यही अब सोचा मनमाही ॥

(बांदी का सुनकर जाना और केकई से कहना)

दूसरा बाब बारहवां सीन

(मकान रानी केकई का दिखाई देना)

बांदी का गाना

उड़ती सी एक बात कान में पड़ी मेरे महारानी है ॥
सुन कांपते हैं हिया जिया मन जो कुंवरा ने ठानी है ॥

राजा जी के संग भरत भी कल को दिक्षा लेवेंगे ॥
रोक सको तो रोकलो रानी फिर कब दर्शन पायेंगे ॥

रानी केकई का गाना

हाय बांदी तूने क्या आके सुनाया मुझको ॥
यह शुभा पहले ही था क्या मैं सुनाऊं तुझको ॥
क्या मैं तरकीब करूं किस तरह कुंवरा रोकूं ॥
नेक सल्लाह दो जिससे कि सबर हो मुझको ॥ हाय० ॥
है वचन इक मेरा महाराज अमानत रक्खा ॥
उसको वापिस लेवूं बस यही है सूझा मुझको ॥ हाय० ॥
भरत को राज तिलक रामको होय बनवास ॥
है सिरफ यही एक तरकीब जो सूझी मुझको ॥ हाय० ॥

बांदी—बेशक यह तरकीब बहुत अच्छी है ऐसा ही कीजियेगा ।

दूसरा बाब-तेरहवां सीन

(राजा दशरथ का दर्बार)

दशरथ

मैं अथिर लखा संसार बसूं बन जाके ॥
यह पुत्र सुता सुत नार हैं सब मतलब के ॥
राजों के गले कटवाये मैंने बहुतेरे ॥
अन्याय किया यह तृष्णा लोभ बढ़ाके ॥ मैं अथिर० ॥
अब जिन दिक्षा मैं लेऊं ध्यान धरूं जाके ॥
कर्मों को उड़ाऊं आतम ध्यान लगाके ॥ मैं अथिर० ॥
पुत्रों को बुलावो जल्द वज़ीरो अब तुम ॥
दो राज राम को आज कहूं समझाके ॥ मैं अथिर० ॥

वज़ीर—अच्छा महाराज सब पुत्रों व रानियों को बुलाया जाता है ।

(वज़ीर का द्वारपाल से कहना)

अथ द्वारपाल सब पुत्रों व रानियों को बुला लाओ ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज अभी हुक्म की तामील होती है ।

सब रानियों का आना रामचन्द्र, लछमन, भरत, का आना और अपनी २ जगह पर बैठना

वज़ीर—महाराज जिन दिक्षा लेते हैं और गद्दी रामचन्द्र के लिये फर्माते हैं।

रानी केकई

चौपाई—दिया था वचन इक मुझे महाराा ।।
रक्खा धरोवर श्री महाराजा ।।
प्राणपती मोहे वापिस दीजे ।।
ऋणरहित हूजे जस जग लीजे ।।

राजा दशरथ चौपाई—मांगलेवो जो तेरा मन चावे ।।
देऊं अभी कुछ देर न आवे ।।

रानी केकई का गाना

भरत को राज देवो महाराज ।। चले जां वनको रघुवर आज ।।
प्राणपती मोहे पुत्रके, राजतिलक हो आज ।।
राजा पद उसको मिले, करै कुछ दिन राज ।।
पुत्र के सरपर देखूं ताज ।। भरत० ।।
चौदह वर्ष के वास्ते, वनको जां रघुवीर ।।
राज करैं आकर यहां, दिलमें न हों दलगीर ।।
राज करैं रामचन्द्र महाराज ।। भरत० ।।

राजा दशरथ चौपाई

राज भरत को देऊं सुन रानी ।।
रघुवर अब जावें वनठानी ।।

रघुवर चौदह बरस में आके ॥
फिर यहां राज करें सुख पाके ॥
(अय दुनिया तुझे धिक्कार है धिक्कार है)

महाराज दशरथ का शरीर से ताज और शाही कपड़े उतार कर जाना

भरत का गाना—पिता के साथ मैं भी वनको जाऊं
न हर्गिज़ राज गद्दी पांव लाऊं ॥
मैं दिक्षा लूं पिता के संग जाके ॥
चशर चूकं न अवसर ऐसा पाके ॥
यह दुनिया शत्रु इसकी क्यों महोब्बत ॥
हमेशा दुःखदाई इसकी सोहबत ॥
रामको रोको वन हर्गिज़ न जावें ॥
तिलक हो रामको वह राज पावें ॥

रामचन्द्र का गाना

करो करो कुछ दिन राज ॥ भ्रात अब सरपै रक्खो ताज ॥
कहना मेरा मानो भ्रात तुम ॥ सरपै रक्खो ताज ॥
उम्र नहीं दिक्षा लेने की ॥ राजतिलक हो आज ॥ करो० ॥

भरत का गाना—मुझे मजबूर करते हो क्यों भाई ॥
यह मुझको राज गद्दी मन न भाई ॥

रामचन्द्र—नहीं नहीं हर्गिज़ नहीं राज गद्दी बैठना होगा पिता का वचन निभाना होगा

गाना

पिता अमोलिक वचन हैं भाई, क्यों होते नाराज़ तुम ॥
राज करो और हुक्म चलावो, सरपै रक्खो ताज तुम ॥ पिता० ॥
कुछ उपद्रव होवे राजमें, फ़ौरन खबर पहुंचावो तुम ॥
हमतो वनको जावें भाई, करो निष्कन्टक राज तुम ॥ पिता० ॥

सीता—अय माता मुझको भी आज्ञा दीजिये खुशी से मांगती हूं न इन्कार कीजिये

रामचन्द्रजी का समझाना

रामचन्द्र—अय प्राण प्यारी तुम हमारे साथ जाकर कष्ट न उठावो बल्कि माता को धैर्य्य बंधावो और समझावो

सीता—अय प्राण पती विला पती के स्त्री का जीवन धिक्कार है।

गाना

आप विन सूना सब संसार ॥
चर्नों में यह शीस निवाऊं, तन मन दूं यह वार ॥
संग आपके वनको चलूंगी, विनती यह वारम्बार ॥ आप० ॥
पति ही व्रत है पतही तप है, पतिही है कर्तार ॥
पती ही से पत है इस तनकी, पति पत राखन हार ॥ आप० ॥
जबलों पति है तबलों पत है, बिन पत विपत हजार ॥
जिसका नेह पति के चरन में, वही पतिव्रता नार ॥ आप० ॥
एक पतीव्रत रहे जगत में, तो सब व्रत निसार ॥
विना पतीव्रत के नारी का, जीवन है धिक्कार ॥ आप० ॥

वार्ता—महाराज मैं ज़रूर आपके साथ चलूंगी, यहां पर हर्गिज़ न रहूंगी

रामचन्द्र—वहां अनेक दुःख और डर सहन करने होंगे।

सीता—मैं सब कुछ सहन करूंगी और यह मन तन आप पर निछावर करूंगी

इनका दोनों का गाना

लछमन—अय माता मेरी तरफ़ से दिल साफ़ हो॥ मेरा कहा सुना मुआफ़ हो
रामके साथ माता वनको जाऊं॥ जो होवे हुक्म उसका वह बजाऊं

लछमन की माता का—हाय हाय पुत्र यह तुमने क्या बात सुनाई ॥
जिसको सुनकर मुझे बेताबी छाई ॥
पती ने जोग साधन किया ॥

और तुमने जाने का ध्यान किया ॥
मैं तुमको हर्गिज़ न जाने दूंगी ॥
ज़बरदस्ती जाओगे तो नार पकड़ लेऊंगी ॥

(लछमन का समझाना)

लछमन का गाना

हमें भी जाने दे माई ॥ चलत हैं बनको रघुराई ।
वतन में मुझको मदन होगा लखन के न जानो तन होगा ॥
वह वन तीनों का वतन होगा ॥ जहां सिया राम लखन होगा ॥
करूं मैं राम सेवकाई ॥ हमेंभी० ॥
रिफ़ाकत भाई की भाई ॥ निभाये जिसने वह भाई ॥
कष्ट में भाई न हो भाई ॥ गरज़बन्दी का वह भाई ॥ हमेंभी० ॥

लछमन का जाना और माता लछमन की का ठहर ठहर करते जाना

रामचन्द्र की माता — हाय हाय अपना दुःख किसको सुनाऊं ॥ किस संग दिलकी आंसू बहाऊं ॥ स्त्री के तीन ही सहारे होते हैं पिता, पति, पुत्र, पिता तो पहले ही दुनिया से कूंच करगये और पति भी जिन दिना लेगये, अब हाय पुत्र तू भी बनको जाता है अय बेटी सीता तू मुझको धीर बंधाती सो तूभी बनको जाती है बस अब मेरे जीने की क्या यह जिन्दगी मेरी खाक है

(रामचन्द्र का चला जाना)

रामचन्द्र की माता — हाय हाय पुत्र मुझको छोड़कर कहां गये, कहांगये, कहांगये, इन कपड़ों को फाड़ डालूं, या सरके बाल उखाड़ डालूं। नहीं नहीं मेरा पुत्र सामने खड़ा है अय पुत्र तुझको मैं बन हर्गिज़ न जाने

दूंगी अय पुत्र तुम ऐसे सज्जन पुरुष हो, क्या तुमने इस अभागनी माता से वार्तालाप करना भी छोड़ दिया, अय बेटी सीता, अय बेटी सीता क्या तुम नहा रहीहो, या खाना बना रही हो, बोलो बोलो, मुझसे जल्द बोलो, ज्यादह न सतावो, अय बेटा राम बोल बोल बोल जल्द बोल, वरना यह जिस्म मिस्ल पारा बिखरा जाता है

बेहोश होकर गिरना चाहना भरत का आनकर कौली में रोकना

भरत—ठहरो ठहरो अय माता ठहरो (गोद में पकड़कर खड़े होना)

भरत—हाय हाय दुनिया दुनिया तुझे धिक्कार है, ऐसे सज्जन भाई श्रीरामचन्द्र वनको जायें, और मुझको राजतिलक चढ़ायें, यह हर्गिज़ न होगा, अब जरूर उनको लाऊंगा, राज गद्दी बिठाऊंगा ॥

दूसरा बाब-चौदवांसीन

पर्दा जंगल मय दरिया

(सब अयोध्या वासी रामचन्द्र के साथ आते हैं और समझाते हैं)

सबका गाना

तुमको अकेले जाने न देंगे हमभी चलेंगे संगमें तिहारे ॥
गुण हम लोग कहांतक गावें ॥ वरनन करें पार नहीं पावें ॥
जावें कहां आए शर्ण तिहारे ॥ हमभी चलेंगे० ॥
प्राण जावो परवाह नहीं करते ॥ साथ चलें वापिस नहीं फिरते ॥
सेवा करें रहें संग तिहारे ॥ हमभी चलेंगे० ॥
मान करें यहां रह कर किस पर ॥ बतलावो वहां जावें जिसपर ॥
बनको न जावो कह कर हारे ॥ हमभी चलेंगे० ॥

लछमन—अब अजुध्यावासी जाओ और राजा भरत को सर निवाओ, वह जरूर तुमसे मित्रता भाव करेगा जो तुम्हारा काम होगा सब पूरा बना जायगा ।

अजुध्यावासी—महाराज हम तो आपके पास ही अपना रहना उचित समझते हैं इस लिये आपकेही हमराह चलते हैं ।

लछमन—आहा क्या निर्मल जल है ।

रामचंद्र—बेशक जलाधि जल है ।

सीता—हाय हाय इसको देख कर जी बेकल है ।

तीनों का पानी में पड़ना अजध्यावासी का हैरत में आना और पानी का तगड़ी २ होजाना ।

अजुध्यावासी—महाराज ठहरो २ हम लोग नाव लाते हैं । बेड़ा बनाते हैं, इसमें पानी बहुत ज्यादह है, आप कहां को जाते हैं

रामचंद्र—तुम लोग वापिस जाओ, और जाकर भरत को सिर निवाओ

अजुध्यावासी—देखो देखो महाराज देखो अरे सब मिलकर देखो यह पानी दरिया का सब सूख गया है बस इसमें बढ़ना क्या महाल है ।

पहला—अरे भाई यह दरिया का पानी सिर्फ रामचंद्र जी के लिये होसूखा

रामचंद्र—अरे भाई दरिया में मत बढ़ना डूब जायोगे । मालूम हुआ हमारे प्राणों को और दुख पहुंचायोगे ।

राम लखन का गायब होना और सब का कर्मों को बाबत धिक्कार देना ।

सब अयोध्यावासियों का मिलकर गाना

जगत में कर्म बड़े बलवान ॥
कर्म उढ़ावें शाल दुशाले, कर्म चबावें पान ।

कर्म अगर कुछ ढीले होजां, टुकड़े को हैरान ॥ जगत में०
राम लखन से भाई दोनों, जग में एक हो जान।
सीता माई लक्तपती सी, देख अचंभा आन ॥
फिरें वह वनों २ वीरान ॥ जगत में० ॥
दोनों भाई सीता माई, करैं यहां स्थान ॥
महलों में वहां ऐश करैं थे, दुःख हुआ यह महान ॥
दुःख अब कहां तक करें हैं बयान ॥ जगत में० ॥

पहला—इस दुनिया को छोड़ देना चाहिये।

दूसरा—मोह जाल को तोड़ लेना चाहिये।

तीसरा—मुनीश्वर के पास जाना चाहिए।

चौथा—हां हां चलिये अवश्य दिक्षा लेना चाहिए।

सब जाते हैं भरत आता है

भरत—सितम है गज़ब है अय संसार तुझे धिक्कार है धिक्कार है धिक्कार है धिक्कार है (भरत) ऐसे सज्जन पुरुषों को यह दुख आये अय संसार तुझे धिक्कार है।

साथ के—धिक्कार है धिक्कार है।

भरत—ऐसे सज्जन भाई रामचंद्र को वनोवास और मैं राज करूं ऐसे राज करने को धिक्कार धिक्कार धिक्कार है अय रामचंद्र लक्ष्मन कहां चले गये मुझको दाग मुफ़ारकत देगये हैं हैं तो क्या समन्दर भी पार उतर गये, बेशक अब समझे दुनिया में औतार होगये।

शेर—राम को वापिस अभी लौटा के लाऊं तो सही ॥
कूद कर जल्दी समन्दर पार जाऊं तो सही।
लाके उनको राज गद्दी पर बिठाऊं तो सही।
मैं अभी बन जाके कर्मों को उड़ाऊं तो सही ॥

समंदर का दिखाई देना

अय समुद्र मुझको जगह दे, राम लखन के पास पहुंचादे हैं हैं समुंदर की लहरें बढ़ती ही जाती हैं, कोई कमी नजर नहीं आती है।

बहादुरों से कहना—अय बहादुरो जल्दी से समुद्र का पुल तैयार करो

बहादुर—अच्छा महाराज जल्द तैय्यार होता है।

(समुद्र का पुल तैयार होता है सब लोग पार होते हैं)

दूसरा बाब-पन्द्रहवां सीन
जंगल बयाबान

सीता—प्राण पती यहीं पर वास कीजिये।

रामचन्द्र—अच्छा प्यारी (आवाज़ का होना)

लछमन—महाराज देखिए किसी शत्रु की फौज चली आरही है।

शेर—क्या अजब दुश्मन ने सोचा हो यह मौका काम का।

गर अभी न नज़दीक आवे हो खलल आराम का

मैं अस्त्र शस्त्र सिंभालूं और उनकी टटोल निकालूं आप सीता के पास पधारिए।

रामचंद्र—लछमन शांति करो, शांति करो आने दो।

भरत का आना और रामचन्द्र के चर्नों में गिरना

भरत—महाराज मेरी खता मुआफ हो, मेरी तरफ से दिल साफ हो

राजधानी को चलिए, वहां पर ऐश कीजिए।

आपके आने से सब के दिल तड़फते रह गए॥

जो नहीं आये यहां पर वह भटकने रह गए।

रामचंद्र—अय भ्रात दुनिया में मोह जाल सब से बड़ा जंजाल है।

भरत—अब कैसे करूं सुनिए।

गाना—सोच यह भ्रात मेरे मन को, अयोध्या छोड़ आये बन को।
राज ताज पहनूं नहीं, रहूं तुम्हारे साथ।
नगर लोग व्याकुल हुए, आय निवावें माथ।
करूं न्योछावर इस तन को ॥ सोच यह० ॥
मात कौशल्या ने सुना, होगई बहु बेहोश ॥
माथ पिटै सिर को धुनै, करती जग ना होश।
धैर्य चल दीजे अब मन को ॥ सोच यह० ॥
राजकरन की रीत को, जानूं तनक न भ्रात।
अब चोला कैसे छुटै, यही सोच दिन रात ॥
छिपाऊं कैसे इस तन को ॥ सोच यह० ॥

रामचन्द्र—यह तुम ठीक कहते हो, किन्तु आप जरा गौर कीजिये
रघुपति रीत सदा चली आई॥ प्राण जाओ पर वचन न जाई॥

भरत—ऐसे परन का भी क्या ठिकाना जो काम बिगड़े बना बनाया ॥
करो अयुध्या में जा शहन्शाह न काम बिगड़े बना बनाया ॥
तुमको अकेला छोड़कर कहां जाऊं, यह दुःख किसे सुनाऊं ॥
दुःख में रहा धीर बंधाता तूही भ्राता मेरा ॥
तूही मां बाप है और तूही है प्यारा मेरा ॥

(यह कह कर पैरों पर गिर जाना)

रामचंद्र का गाना

भ्रात तुम इतना मत घबरावो ॥
हम हैं आस पास तुमरे ही, दुःख मनमें मत लावो ॥
जो कुछ दुःख सुख गुजरे तुम पर, फौरन खबर पहुंचाओ ॥ भ्रात०
उचित नहीं है वापस जाना, पिताके वचन निभाओ ॥
करो निकंटक राज भरत तुम, जल्द अयुध्या जावो ॥ भ्रात० ॥

भरत—हैं हैं जाऊं तो कैसे जाऊं एक कदम अलहदा नहीं हुवा जाता है
अयं दुनिया नाबकार नाहंजार तुझपर भगवत की मार एक लहजे भी
किसी को नहीं सोने देती, लहजे लहजे में नये दुःख जिंदा कर देती

तर्ज बिहाग

रामचन्द्र—हमको सिधारने दे भाई नैनों न नीर बहाई ॥ हम० ॥

भरत—हाय अयुध्या किसपै छोड़ी यह क्या दिलमें समाई ॥

रामचन्द्र—हमको सिधारने दे भाई नैनों न नीर बहाई ॥

तुमतो ज्ञानवान पंडित हो सावधान रहो भाई ॥ हमको० ॥

भरत—कैकई मात बचन ले करके अंतर ही पछताई ॥

रामचंद्र—हमको सिधारने दे भाई नैनों न नीर बहाई ॥

जो कुछ होना होगया भ्राता, पिता के बचन निभाई ॥ हमको० ॥

(भरत का रोने लगे रह जाना)

ड्राप सीन का गिरना

बनोबास भाग समाप्तम्

सीता हरण तृतीय परिच्छेद

तीसरा बाब पहला सीन

(पर्दा जंगल)

रामचन्द्र—लछमन बस्ती अन्दर जाओ । भूक लगी कुछ भोजन लाओ ॥

लछमन—ऊंची जगह देखूं कहीं जाके । गांव नज़र कोई आवे ताके ॥
महाराज एक वृद्ध पुरुष बद हवास भागा आता है नगरी भी उजड़ दीख पड़ती है इस लिये इस पुरुष को बुलाकर नगरी का हाल पूछना उचित मालूम होता है ।

रामचन्द्र—अवश्य उसको बुलाकर पूछिये ।

लछमन—ओ पथिक ओ पथिक इधर आओ और नगरी का हाल सुनाओ ।

पथिक—अर यह क्या नहीं नहीं, मोसे नाहिं नाहिं कहत हैं और काह से बोलत हैं ।

लछमन—ओ पथिक कहां तिरछा तिरछा जारहा है हम तुझको ही बुलाते हैं ।

पथिक का गाना

तर्ज—दिल नरियां प्यारियां

शत्रु है महर मोरी मरवाया जानसे ॥
हट वाकी भई ऐसी जाता हूं प्राण से ॥
जिद कीनी नहीं मानी मन ठानी प्राण से ॥
ना मारो मोहे प्यारो तन वारूं प्राण से ॥ जाता हूं जानसे ॥

लछमन—अरे मूरख सन्मुख श्री रामचन्द्र विराजमान हैं तेरे दुखको दूर करेंगे, मंशा तेरी पूरन करेंगे।

(पथिक का रामचन्द्र के पैरों पर गिरना)

पथिक—हैं हैं श्री रामचन्द्र अरे रे रे श्री रामचन्द्र, इन चरणों को आंखो से लगाऊं, या धोकर पीजाऊं।

रामचन्द्र—अरे भाई मेरे पैरों पर से खड़ा हो और अपना हाल बयान कर

पथिक—नहीं नहीं महाराज हर्गिज़ नहीं कदापि नहीं बिल्कुल नहीं क़तई नहीं नहीं नहीं नहीं।

रामचन्द्र—अरे क्यों नहीं।

पथिक—महाराज आज मुद्दतों में रघुवर से भेंट हुई है भला ऐसा अवसर कब चूक सकता हूं मुझको दरिद्रता ने घेरा है उसको दूर करिये अपना सेवक बनाइये।

रामचन्द्र—अच्छा खड़ा हो और ले यह नौलक्खा हार तुझको देते हैं इसको लेकर सन्तुष्ट हो।

पथिक का खुश होकर गाना और खंजरी बजाना

तर्ज़ रसिया

पथिक—भाग खुले हैं मोरे यारो हुवा यह हर्ष अपार॥
शिव नगरी की नाव बैठ कर उतरूं परलीपार॥
ठांय ठांय अब बाजै खंजरी सब मिल नाचो यार॥
दरिद्रता तो दूर भगी और अब हुई मौज बहार॥
मेहरयां ने क्लेश भाव से भेजा मुझको यार॥
यहां पर हुई रघुवर से दृष्टी मिला नौलक्खा हार॥

वार्ता—महाराज, वज्रकरन का कथन सुनिये मतिवर्धन नामा मुनि के सामने वज्रकरन ने सम्यक्त लिया कि सिवाय जिन प्रतिबिंब या जिन बानी या जिन मुनि के और को नमस्कार नहीं करूंगा मगर फिर

उसको यह चिन्ता हुई कि उज्जैनी का राजा सिंघोदर उसको नमस्कार करने का कौन कारण बनाऊंगा। सो एक अंगूठी में मुनि सुव्रत नाथ की प्रतिबिंब बनवाई, जब सिंघोदर के दर्बार में जाय तो बार बार अंगूठी को सर निवावे सो उसके किसी शत्रु ने यह भेद सिंघोदर से कह दिया कि यह तुमको सर नहीं निवाता बल्कि अंगूठी जो इसके हाथ में है उसको निवाता है सिंघोदर ने धोके से वज्रकरन को बुलाया सो वह सरल चित्त घोड़े पर चढ़ कर उज्जैनी नगरी के बाहर पहुंचा एक विद्युदंग नामा मनुष्य ने आकर कहा कि हे राजन अगर तू अपना भला चाहता है तो वापिस चला जा, वरना मारा जायगा तेरी अंगूठी का भेद किसी मनुष्य ने राजा से कह दिया है यह सुनकर वज्रकरन मय विद्युदंग वापिस चला आया और सिंघोदर यह सुनकर कि मेरे कहने से वज्रकरन नहीं आया है बड़ी फ़ौज लेकर चढ़ आया है चारों तरफ़ से नगर घेरा है और कुर्वोजवार के गांव में आग लगादी है वज्रकरन अपने महल के अन्दर डर रहा है सिंघोदर के दूतने आकर बहुत कड़े वचन कहे और कहा कि सिंघोदर ने कहा है कि तू जिन घर खोटा मुनि के बहकाने में आकर विनय रहित हुवा देस मेरा, दिया खाय मेरा, और माथा अरहंत को निवाय तू मायाचारी है कृतघ्नी है पापी है यह वज्रकरन से दूत कहता भया वज्रकरन ने बहुतही नम्रता से कहा कि हे दूत मेरी यह विनती कहियो कि देस, नगर, रथ, हाथी, घोड़े, प्यादे, आदि सब तुम्हारे हैं और तुम्ही वापिस लेलो और मुझको मेरी रानी सहित देश से निकाल दो मुझको कोई उजर नहीं परन्तु सिवाय जिन शासन जिन मुनि, जिन प्रतिविंब के और को नमस्कार नहीं करूंगा यह मेरी प्रतिज्ञा है वह मेरी देह के स्वामी हैं आत्मा के स्वामी तो नहीं हैं यह सुनकर सिंघोदर बहुत क्रोध को प्राप्त हुवा है वज्रकरन का प्राण रहित करना चाहता है। और मेरी स्त्री ने मुझसे कहा था कि एक हांडी, और एक छाज और एक घड़ा, अपना उठा ला और सिंघोदर के आदमियों ने जो गांव में आग लगादी है जो औरों का सामान मिले वह भी उठाला, महाराज मैं अपने जी में बहुत डरा कि कहीं मुझको न फूकदें, और

मैं आपको भी सिंघोदर के आदमी समझ कर डरा कि मेरी मृत्यु नजदीक आगई महाराज यह दरिद्रता बहुत बुरी है देखिये और लोग गांव छोड़ छोड़२ कर भागें और मेरी स्त्री मुझको यहां आने के लिये कहे मैंने मने किया तो मुझको मारने के लिये तैयार हुई कि हे दरिद्री जल्दी जा भला अब तो वह मुझ से बात करैं, घात करै, अब तो मैं आप की कृपा से दूसरे भव में आगया और अब कुछ दिनों में सेठ कहलाया।

रामचंद्र—धन्य है धन्य है धन्य है बज्र करन को धन्य है जो ऐसे महा संकट में भी अपनी प्रतिज्ञा भंग न करी वह पूरा सम्यक्ती है अय भ्रात लछमन ऐसे पुन्यात्मा सज्जन की जरूर सहायता करनी चाहिए, हम भगवान के चैत्यालय में तुमको मिलेंगे।

लछमन—जैसा आपका हुक्म होगा बजा लाऊंगा अरे पथिक तू मेरे साथ आ, और बज्रकरन से मुझको मिला।

पथिक—चलिये २ महाराज, और सुनो रामचंद्र जी के साथ न रहूं

लछमन—अरे नहीं ! हमारे साथ आ।

पथिक—अच्छा अच्छा और रामचंद्र का साथ छोड़दूं ? नहीं साहब यह न होगा, मैं रामचंद्र का सेवक हूं किंकर हूं नौकर हूं चाकर का भी चाकर हूं।

रामचंद्र—अरे जा हम तुझको आज्ञा देते हैं।

पथिक—अच्छा महाराज इस दास व सेवक से बिना मिले न जाना, अगर बिना मिले चले गये तो मेरी लाश यहीं पाना।

(लछमन व पथिक का जाना)

तीसरा बाब-दूसरा सीन
दीवान खाना राजा वज्रकरन
लछमन का आना वजीर और राजा का पूछना

गाना—कृपा हुई महाराज, कहां से कृपा हुई महाराज।
को कारण आना हुआ तुमरा, क्या है कुंवरा नाम ॥
किस राजा के कुंवर दुलारे, को नगरी कहां धाम।
हमें भी बता देवो महाराज ॥ कहां से ० ॥
अलख रूप तुमरा हे भाई ॥ हो तुम इन्द्र समान।
चार दिना मांहे मांगे दीजे, रहो मेरे महमान ॥
यहीं पर ठहरो श्री महाराज ॥ कहां से ० ॥
वक्त भूक का है यह कुंवरा, खाना है तैयार।
मुझ सेवक पर कृपा कीजिये, कहा है सोच विचार ॥
कर्म शुभ उदय हुए महाराज ॥ कहां से० ॥

(पथिक का नाच कर खंजरी बजा कर गाना)

पथिक—यह लछमन हैं महाराज, अरे रघुवर ने भेजा है। इन्हें भगवन ने भेजा है।
गुण वर्णन कहां तक करें, हैं गुण अपरम्पार।
चर्नों के प्रशाद से, मिला नौलक्खा हार ॥
आई आई आई आई, अरे रघुवर ने भेजा है, अरे भगवन ने भेजा है
राजन तेरे कष्ट को, अभी करें सब दूर ॥
छिन इक संतोषी रहो, सुख होवे भरपूर ॥
गावो गावो गावो गावो, अरे भगवन ने भेजा है ॥ इन्हें रघुवर० ॥
खाना भिजवावो अभी ॥ रामचन्द्र के हेत ॥
बिन खाये लछमन कभू ॥ ग्रास न मुंह में देत ॥
लावो लावो लावो लावो, अरे रघुवर ने भेजा है ॥

राजा वज्रकरन—अय वज़ीरो इस पथिक को पांच हज़ार रुपये इनाम दो और श्रीरामचंद्र के लिए छत्तीस प्रकार का भोजन तैयार है उनको फ़ौरन भेज दो।

वज़ीर—अच्छा महाराज अभी भेजते हैं।

राजा वज्रकरन—अय लछमन महाराज आप इस दास पर कृपा करो जो कुछ रूखा सूखा तैयार है उसको ग्रहण करो

लछमन—अय वज्रकरन जब तक तेरी और सिंघोदर की संधि आपस में न करालूं तब तक मुझको खाना उचित नहीं है इसलिये मैं अभी सिंघोदर के पास जाता हूं।

लछमन भरत अयोध्यापति का दूत बन कर सिंघोदर के पास जाता है।

तीसरा बाब-तीसरा सीन

(दर्बार सिंघोदर राजा)

द्वारपाल—महाराज राजा भरत का दूत आया है और कुछ कहना चाहता है।

लछमन का आना और सिंघोदर को तिनके के मानिंद जानना और नमस्कार नहीं करना

लछमन का गाना—गरचे है रुतबा दिया तुझको शहन्शाह नाम का।
रख अजीज़ अपनी बज़ुर्गी है यह मौका काम का॥
सेवकों पर हर समय दिल में दया रक्खा करो।
गो के उनसे हो खता उसको दबा रक्खा करो॥
करना ना करना उचित इसका ख़याल रक्खा करो
दूर कर दो बात वह जिसका मलाल रक्खा करो॥

हरकतो नाकिस के करने का असर समझा करो ॥
क्रोध ना किया करो नतीजा फ़ना समझा करो

वार्ता—अय सिंघोदर मैं अयुध्या के अधिपति राजा भरत का भेजा हुआ दूत हूं और मुझको इसलिए भेजा है कि सिंघोदर से कह दो कि यह वृथा काहे को विरोध करता है वज्रकरन धर्मात्मा पुण्यात्मा सम्यक दृष्टी सज्जन पुरुष से भिन्नता भाव करे आपस में संधी करके मेल मिलाप धारण करे।

राजा सिंघोदर का गुस्सा करना.

सिंघोदर (शेर) ख्वाब गफ़लत में भरत है कुछ नहीं उसको खबर।
जैसे मतवारा पुरुष हो है नहीं जिसको खबर ॥

अय दूत वज्रकरन का हाल सुन

महा पापी और कृतघ्नी वह दुराचारी है यह।
महा भयंकर सर्प है और वो सर्प भी जहरी है यह ॥
शील संयम त्याग के मूरख बना फिरता है यह ॥
जैसे घर खोया मुनी बहकाये वह करता है यह ॥
माल दौलत हाथी हैं जिन पर चढ़ा फिरता है यह।
है यह सब मेरे मगर कुछ भय नहीं खाता है यह ॥
महा पापी है विनय मुझको नहीं करता है यह।
क्या अंगूठी हाथ की जिसको विनय करता है यह ॥
पार तारेगी अंगूठी हाथ की अब किस तरह।
मार डालूं भीम ने कौरों को मारा जिस तरह ॥
तू भरत से दूत जाकर हाल कहियो इस तरह।
है मेरा सेवक मुझे अधिकार रक्खूं जिस तरह।

लछमन का क्रोध करना

लछमन (शेर) पार तारेगी अंगूठी हाथ की अब इस मगर।
द्रौपदी का चीर बढ़ाया था सभा में जिस तरह ॥

लेगया कुंवरा मनोरमा को उठाकर किस तरह ।
मार उसने खाये तू भी मार खाये इस तरह ।
सेठ सुदर्शन जी को सूली पर चढ़ाया किस तरह ।
फूल की शैय्या हुई मूरख भला फिर किस तरह ॥

सिंघोदर का गुस्सा करना

सिंघोदर (शेर) हुज्जती दूत क्या करता है नसीहत उल्टी ।
खैर अब मालूम हुआ है तेरी क़िस्मत उल्टी ॥

वार्ता—बस ओ दूत अब तू सीधा साधा घर को चला जा, और अगर भरत के जी में भी कुछ संग्राम की है तो उसको भी चढ़ा ला, मालूम हुआ कि तुझ सरीखे ही भरत के मूढ़ सेवक हैं जो रंच मात्र भी तुझ में नम्रता नहीं है, मानो दिल व दिमाग़ पाषाण का बना हुआ है ।

शेर—चावल भरी उसीजती हांडी को देख लेते हैं ।
बानगी के वास्ते इक चावल निकाल लेते हैं ॥

लछमन—हां हां मैं तेरी बांकी ही सीधी करने को आया हूं । तुझको नमस्कार करने नहीं आया हूं, बहुत कहने का क्या थोड़े ही में समझ जा, और अपनी जान बचा, वरना मारा जायगा अन्त को पछतायगा ।

सिंघोदर—ओ दूत महा ऊत क्या तू लड़ने को मज़बूत ।

लछमन—हां हां मैं दूत, बल्कि यमदूत और तेरे ऐसे महा पापी के मारने को मज़बूत ।

सिंघोदर—अय बहादुरो इसकी खाल निकालो और श्वानों के सामने डालो, दुनिया से नेस्तोनाबूद करो ।

लछमन—आवो आवो सब के सब एक दम हमला करो, और अपनी अपनी बहादुरी दिखाओ ।

सब बहादुरों का लछमन पर हमला करना लछमन का थम उपाड़ना और सबका डर में होकर भागना

पहला—भागो भागो यारों रास्ता छोड़ो।

दूसरा—अरे क्या बात है एक आदमी से ऐसे डरते हो आओ आओ इसका पकड़ना क्या मुश्किल है।

(लछमन से लड़ना और एकदम मर जाना)

तीसरा—भाई हमने तो जान से लड़ने की कसम खाई है।

(एक दम सबका भागना)

राजा सिंघोदर—अरे तो क्या थम उपाड़ कर मेरे बहादुरों को धमकाता है, डराता है, आ आ मैं तेरी बहादुरी देखूं॥

लछमन—आ मुझे तेरा ही इन्तज़ार है यही दिल में ग़ुबार है।

दोनों का तलवार चमका कर लड़ना अन्त को राजा सिंघोदर का गिरना और लछमन का खंजर लेकर मारना चाहना एक दम सब सिंघोदर की स्त्रियों का आना और पति की भीख मांगना हाथ जोड़ कर बैठना

सिंघोदर की स्त्री का गाना

भीख देवो महाराज, पति की भीख देवो महाराज॥
हम अभागनी सरको झुकावें, मारो खंजर नाज॥
पल्ला पसारें भीख देवो अब, बख्शो इनकी जान॥
बना रहे सरका हमारे ताज॥ पती की०॥
तुम प्रभु शूरवीर सूरों के, हो तुम चतुर सुजान।'

प्राणपती हम मांगा दीजे, भूलें नहीं अहसान ॥
पायन परें रक्खो हमारी लाज ॥ पती की० ॥
जिन मुद्रा का करा निरादर, हुवा यह पाप महान ॥
इसही का फल हमको मिला यह, बेशक हुवा अज्ञान ॥
बख्श दो खता हुई महाराज ॥ पती की० ॥

(पर्दे का आहिस्ता आहिस्ता गिरना)

तीसराबाब-चौथासीन

(जैन मन्दिर का दिखाई देना)

महाराज रामचन्द्र व बज्रकरन व सीता का एक जगह बैठे दिखाई देना और लछमन का सिंघोदर को बांध कर लाना

लछमन—महाराज यह सिंघोदर महापापी, कृतघ्नी महामानी मौजूद है ॥

शेर—उल्टा कराके इसको वृक्षों से बांधिये ॥
पत्थर से इसके सरको टकराके मारिये ॥
शत्रु हुवा धरम का संकट को टारिये ॥
पानी मिले न इसको इस जापै मारिये ॥

रामचन्द्र—जो दंड वज्रकरन तजवीज करेगा, वह ही इसको दिया जावेगा, अय वज्रकरन जैसी तेरी राय हो वैसा किया जावे,

वज्रकरन—श्री महाराज, मैं तो अपने राज में किसी प्राणी मात्र को भी दुख नहीं देता हूं, और यह तो मेरे स्वामी हैं, बस अब मेरी यही प्रार्थना है कि मेरे स्वामी का अपराध क्षमा कीजिये, और बन्धन रहित कीजिये ॥

रामचन्द्र—धन्य है धन्य है, वज्रकरन तुझको धन्य है, जो सज्जन पुरुष होते हैं, वह बुराई के बदले भलाई से काम लेते हैं, सिंघोदर

तेरी हालत देख कर हमको बहुत खेद होता है।

तर्ज—ऐसा जन्म बारम्बार नहीं ऐसा जन्म बारम्बार।

गाना

जासे होय तेरा अपमान ॥ मान, ऐसा कबहुं न करिये गुमान ॥
संसार में सुत सुता नारी, स्वारथ के सब जान ॥
भव्य पुरुष पुण्यात्मा, बज्रकरन पहचान ॥ मान० ॥
जिन मुद्रा को शीस निवावे, धन्य धन्य इस ध्यान ॥
तू शत्रु हो लड़ने धाया, गया कहां तेरा ज्ञान ॥ मान० ॥
ऐसा कहां का चक्री हुवा, तू भूला भी भगवान ॥
एकही लछमन भ्रात ने तेरे, भुलादिये औसान ॥ मान० ॥

(सिंघोदर का रंज में होकर गाना)

मेरी अरज बारम्बार ॥ स्वामी मेरी अर्ज बारम्बार ॥
दीजे कटारी हाथ में, सरको देवूं अपने उतार ॥
मुझ पापी का मरना भला, मेरे जीने को धिक्कार ॥ स्वामी० ॥
फटजा जमीं सरकूं अभी, अपयश हुवा मेरा अपार ॥
बिजली पड़े मो सीस पर, इसे डालो नदी की धार ॥ स्वामी० ॥
निन्दा करी जिन धर्म की, मुझ पापी ने हाय बारम्बार ॥
जिन चर्नों का सेवक बनूं, मेरा इसी में उद्धार ॥ प्रभु० ॥

रामचन्द्र—अय लछमन सिंघोदर को बंधन रहित करो।

गाना

सिंघोदर तेरी बातों से, दया दिलमें मेरे आई ॥
न तू सेवक न यह सेवक, हो दो भाई यक जाई ॥
मिलावो दोनों दिल ऐसे, बचावे दूध जल जैसे ॥
कपट को दूर कर दिलसे, बनो अब एक माजाई ॥ सिंघोदर० ॥
हमारा हुक्म यह मानो, लघु भ्राता इसे जानो ॥
दो आधा राज अब इसको, फरक इसमें न हो राई ॥ सिंघोदर० ॥

सिंघोदर—आपका कहना वसरोचश्म मंजूर है और ३०० कन्या लछमन जी की सेवा में देता हूं, लीजिये, और मुझको कृतार्थ कीजिये

रामचन्द्र—अच्छा हमको मंजूर है मगर जिस वक्त हम दक्षण की तरफ अपना स्थान मुकर्रिर करेंगे, आपकी कन्यायें लेजाएंगे और यह विद्युदंग वज्रकरन तुम्हारा सेनापती करदिया गया है।

वज्रकरन—बहुत अच्छा महाराज मेरी भी आठ कन्यायें हैं सो इन्हें लछमन जी को देता हूं, मंजूर फरमाइये।

रामचन्द्र—मंजूर है परन्तु आप इस समय जाइये और आराम कीजिये

(सिंघोदर व वज्रकरन दोनो का जाना)

रामचंद्र—अय भ्राता लछमन अब यहां से चलो वरना सिंघोदर और वज्रकरन कदापि नहीं जाने देंगे।

लछमन—अच्छा महाराज चलिये।

(चला जाना)

तीसरा बाब-पांचवां सीन (पर्दा जंगल)

गुणमाला का राजकुंवर के भेषमें आना और लछमन को देख कर मोहित होना

राजकुंवर—हैं हैं यह कौन पुरुष फिर रहा है जिसका रूप इन्द्र के समान है जिसको देख कर जी बेकल होगया, हाय हाय यह मुझको क्या होगया।

तर्ज—बुआ हर गुल में परवर दिगार है जी।

गाना—कैसा खींचा निगाहों से दिल यह मेरा।
मिकनातीसी असर यह दिखाया खरा।
गो मैं अपने को अब तक छिपाती रही।
लेकिन जख्मी हुआ दिल मेरा यह हरा॥ कैसा०॥
मुझको राजा की गद्दी की परवा नहीं।

बालखिल का आना और अपने को देवी की भेंट समझकर पछताना अफ़सोस करना

बालखिल का गाना

तर्ज—बृज की होली जोगिया

कैसी मुझपै यह आफ़त आई, दिया देवी की भेंट चढ़ाई ।
मनुष्य जनम को पाकर मैंने, सारी उम्र गंवाई ।
शुभ और अशुभ कर्म को देखा, विपत अनंती पाई ॥ कैसी० ॥
आज सजाकर मुझको लाये, देंगे यह भेंट चढ़ाई ॥
अय प्रभु आओ मुझको बचावो, होहू विपत सहाई ॥ कैसी० ॥

रामचन्द्र—अय बालखिल मनमें प्रसन्न हो, आज तुझको तेरा राज मिला और यह रुद्रभूत जिसने मलेच्छपने का त्याग किया तेरा मंत्री बना अपने राजको जावो, और अपने मनमें खुशी मनावो.

बालखिल का खुशी होकर गाना

तुमरे चर्नों में अय स्वामी, तन मन वारना जी ॥ तुम० ॥
बंदीग्रह में अति दुख पाया, आपने आकर मुझे छुड़ाया ।
गुण वर्णन करूं कहां तक तुमरे पारना जी ॥ तुम० ॥
हाल सुनाऊं क्या मैं तुमको, तनक न भाया खाना मुझको ॥
दुख सहे मैं ऐसे जाको पारनाजी ॥ तुम० ॥
चर्नों को धोकर पी जाऊं, नेत्रों से मैं इन्हें लगाऊं ॥
भवसागर से स्वामी मुझको, तारना जी ॥ तुम० ॥

बालखिल का रामचन्द्र जी के पैरों पर गिरना पर्दे का आहिस्ता आहिस्ता गिरना

कुंवर—अच्छा हम उनको यहीं बुला लेते हैं और सब तरह का खान आज हमारे यहां मौजूद है, आज यहीं पर रसोई जीमिये, सेवक पर कृपा कीजिये।

लछमन—खैर जैसी आप की खुशी।

कुंवर—द्वारपाल अय द्वारपाल।

द्वारपाल—श्रीमहाराज।

कुंवर—देखो बहुत जल्द जावो और श्रीरामचन्द्र और सीता महारानी को बुला लावो और कहो कि लछमन महाराज भी यहीं पर बैठे हुये हैं आपको बुला रहे हैं।

द्वारपाल—अच्छा महाराज अभी जाता हूं।

द्वारपाल का जाना और श्रीरामचन्द्र व सीता का आना कुंवर का कहना

कुंवर—नमस्कार नमस्कार आपको बारम्बार नमस्कार है आइये आइये तशरीफ़ लाइये।

द्वारपाल से कहना

अय द्वारपाल देखो जब तक हम हुक्म न दें कोई मनुष्य यहां पर न आवे वरना मारा जायगा अंत को पछतायगा।

द्वारपाल—अच्छा अच्छा महाराज ऐसाही किया जायगा।

द्वारपाल का जाना

रामचन्द्र—अय कुवंर तुम यहां पर कैसे आये हुये हो।

कुंवर—आपके सामने मैं अपना सब हाल सुनाये देता हूं।

कुंवर का पोशाक शाही उतारना और स्त्री के रूप में आना एकदम सीता के पैरों पर गिरना

सीता—अय बहन पूत सुहागन हो और लछमन जैसे तेरे भर्तार हों।

रामचन्द्र—यह रूप कुंवर का क्यों धारण किया है, क्या तुम्हारा नाम है, कहां तुम्हारा धाम है।

गुणमाला—महाराज मेरा नाम गुणमाला है और सुनिए मैं अपनी दास्तान सुनाये देती हूं।

गाना—कहूं क्या गम का अफसाना, सुनों तुम मैं सुनाती हूं।
मैं कन्या बालखिल की हूं, और अपने को छिपाती हूं॥
पिता को लेगये वह जब, गर्भवन्ती थी माता तब।
खबर है मात मंत्री को, सिर्फ तुम को बताती हूं॥ कहूं ०॥
मलेच्छों ने हरा राजा, किया है कैदखाने में।
जो पैदावार हो ले लें, नहीं कुछ मैं सताती हूं। कहूं ०।

लछमन—बताओ तो मलेच्छ अब हैं कहां पर।
सभों को कैद कर लाऊं यहां पर।
करूं मैं मान ढीला इस कर्मा से।
भगाऊं दस दिशा आये कहां से।
पहनाऊं बालखिल को ताज शाही।
और उनके राज की करदूं तबाही।
करै मत सोच गुण माला तू मन में।
पिता तेरे अब आवें एक छिन में॥

गुणमाला—सुनिये महाराज विन्ध्याचल पर्वत पर काकोनंद जात के मलेच्छ जिनका राजा रुद्रभूत नाम का है मेरा पिता बालखिल जो कि जैन मत श्रद्धानी और बहुत धर्मात्मा पुन्यात्मा पुरुष है, कैद करके लेगये हैं, गो मेरा पिता सिंघोदर का सेवक था परन्तु उनको सिंघोदर भी नहीं जीत सकता है उस समय मेरी माता गर्भवन्ती थी, और सिंघोदर ने कहा कि अगर उसके लड़का हुआ तो राज वह करेगा वरना राज का अधिकार मुझको होगा, हाय हाय क्या कहूं मैं अपनी माता के कन्या पैदा हुई, तो माता और मंत्री ने यह राय करी कि इसको कूंवर के भेष में रक्खो, ताकि

राज पर अपना अधिकार रहे, सो महाराज मैं कुंवर के भेप में जब से हूं, मेरी माता मेरा पिता न होने के कारण बहुत रुदन करती है और विल विलाती है हजार हजार आंसू बहाती है आप रोती है और हाय हाय मुझ अभागिनी को भी रुलाती है ॥

रामचन्द्र—अच्छा अय कन्या तू सोच न कर और अपना पहला कुंवर का भेप कुछ दिनों को धारण कर, जब तक कि तेरे पिता कैद से न छूटें।

गुणमाला—खैर यह मैं सब कुछ करूंगी मगर एक विनती मेरी है उसको आप कृपा दृष्टि से कबूल करिये।

रामचंद्र—वह क्या ?

गुणमाला—यह ही जो कि श्रीमती सीता माई ने मुझको आशीर्वाद दी थी वह मेरी मनोकामना पूरी कर दीजिये।

रामचंद्र—अच्छा अच्छा अच्छा कोई हर्ज नहीं अय लछमन भ्राता आओ और दोनों हाथ मिलाओ। (दोनों का हाथ मिलाना) हमेशा खुशखुर्रम रहो। (पर्दा गिरना)

तीसरा बाब-छटा सीन-पर्दा जंगल

विन्ध्याचल की अटवी में रामचन्द्र लछमन व सीता का दिखाई देना और मलेच्छों से बालखिल को छुड़ाना

एक मनुष्य—महाराज आप कहां जा रहे हैं यह अटवी विन्ध्याचल की बहुत भयानक है, क्योंकि यहां पर मलेच्छों का राज है और आज रुद्रभूत उनका राजा है बड़ी सेना सहित चढ़ाई करनेको आरहा है, क्योंकि मैं उधर से ही आ रहा हूं वह

लोग सज्जन पुरुषों के दुश्मन जानी हैं, ऐसी जगह जाना मसलहत से खाली है कृपा करके आप वापिस जाइए।

लछमन—नहीं नहीं हम सिर्फ रुद्रभूत का बाण और कमान देखने आये हैं उनसे डरने नहीं आये हैं।

मनुष्य—आपकी मंशा है, लो साहब मुझको तो डर लगता है मैं जाता हूं लो देखो वह सामने आरहे हैं सावधान होजाइये।

(मलेच्छों का आना)

एक मलेच्छ—अरे पकड़ो पकड़ो, इन विदेशियों को पकड़ो और लो रस्सी से जकड़ो।

लछमन—अरे क्यों क्यों क्यों, तुम लोग बेमतलब भी लोगों को सताते हो

मलेच्छों का शेर—मतलब जो नहीं रखते वफ़ा से वह हमीं हैं।
पेश आते हैं जो ज़ोरो सितम से वह हमीं हैं॥

वार्ता—वस्त्रों को उतार कर हमको दीजिये और अपना रास्ता लीजिये।

लछमन—अर्रर क्या रास्ता भी लूटते हो।

मलेच्छ—हां हां आज से क्या, बहुत दिनों से हमारा यही काम है।

लछमन—अच्छा तुम सबके सब अपना अपना बल दिखाओ, सामने आवो

मलेच्छ—ले देख हमारे वार को देख।

मलेच्छ का तीर मारना और तीरका नाकामयाब होना

अर्रर यह क्या, यह तो कोई वज्र मई शरीर है, जो तीर के लगने का निशान भी न हुवा, बल्कि तीर खुद मुड़कर ज़मीन पर आगिरा बस बस ऐसे मनुष्य के सामने हम कुछ नहीं कर सकते अर्रर भागो भागो

लछमन—ठहरो ठहरो, एक तीर मेरा भी देखो।

मैंने अवधी भी छोड़ी बहुतेरी रे॥ अक्ल खोई० ॥
पेड़ के ऊपर कैसे चढ़ूं मैं मेरी नहीं यह मजाल।
हैं कोई औतारी या हैं मुरारी मेरा हुआ यह ख़याल॥
बनूं इनका ही मैं दास चेरी रे ॥ अक्ल खोई रे० ॥

(यक्ष का जाना गुरू को लेकर आना)

गुरु का गाना—रचो इक राम नगरी तुम्हें यही करना मुनासिब है॥
इन्हें आराम देना ही मुनासिब है मुनासिब है।
यह हैं बल भद्र नारायण मैं अवधि से विचारा है॥
न हो दिक्कत इन्हें प्यारो यही करना मुनासिब है।
अयुध्या सी बसे नगरी हैं जितनी बात वहां सगरी॥
वह ही नौकर रहें चाकर यही करना मुनासिब है।
उठाकर ले चलो इनको सुलाओ राम नगरी में॥
करें आराम यह वहां पै यही करना मुनासिब है।

पहला मनुष्य—अच्छा महाराज अभी हुक्म की तामील होती है चलो भाई उठाओ, और राम नगरी में सुलाओ

सब यक्षों का रामचंद्र व सीता लछमन को राम नगरी में लेजाना गुरू का मंत्र पढ़कर परदे में फूक मारना परदे का फटना राम नगरी का दिखाई देना

तीसरा बाब दसवां सीन-रामपुरी

रामचंद्र जी का निद्रा से उठना अयुध्या समझकर अफ़सोसकरना

तर्ज जोगिया—
रामचंद्र—कैसी हम पर जहालत छाई, पहली बातें सभी दी भुलाई।
लछमन आंख खोलकर देखो, है यह अयुध्या भाई।
वड़ के तले हम सोये हुये थे, लाया यहां कौन उठाई॥ कैसी०॥

तुमही हो हमरे भूपाल, राज काज लो संभाल।
मैं रहूं चनों का दास, शरन तिहारी आयो ॥ तुम० ॥
बड़े २ राजन के मैं, मान हरा इक छिनक में।
तुमरे तो दर्शन ही से, रोमांच हो आयो ॥ तुम० ॥

रामचन्द्र—अय रुद्रभूत राजा बालखिल को अपनी कैद से छुड़ावो और यहां पर बुलावो।

रुद्रभूत—बहुत अच्छा महाराज अभी बुलाया जाता है।

रुद्रभूत का मंत्री से कहना

अय मंत्री जाओ और उसको आदर के साथ ले आवो।

मंत्री—बहुत अच्छा महाराज अभी लाते हैं।

मंत्री का जाना और रुद्रभूत का रामचन्द्र से कहना

रुद्रभूत—महाराज मेरा हाल सुनिये।

रामचंद्र—कहिये

रुद्रभूत—महाराज मैं ब्राह्मण का लड़का कोशांबी नगरी का अति कुशीला और चोर जार यानी सब तरह के ऐब मुझ में थे एक दफा राजा ने सूली का हुक्म दिया तो मुझको एक धर्मात्मा पुरुष ने छुड़ा लिया, अब पुन्य के उदय से इनका राजा हुआ हूं तो मैं धरम से विपरीत न्याय रहित अति मलीन किसी तरह का विचार मेरे नहीं है, पशु के समान जिंदगी व्यतीत होती है और न किसी का मांस खाने न खाने का मेरे विचार है।

रामचन्द्र—अय रुद्रभूत अब तो इस मलेच्छ अवस्था को त्याग दे और जो ब्राह्मण के धरम हैं उनको पाल और अपने आपको संभाल

रुद्रभूत—अच्छा महाराज मैंने आजसे मलेच्छपने का त्याग किया और ब्राह्मण धरम को धारण किया यह मेरे आज से मांस मदिरा का नेम है सब जो जो अकार्य्य न करने के थे आपकी कृपा से छोड़ दिये।

बालखिल का आना और अपने को देवी की भेंट समझकर पछताना अफ़सोस करना

बालखिल का गाना

तर्ज—बृज की होली जोगिया

कैसी मुझपै यह आफ़त आई, दिया देवी की भेंट चढ़ाई ।
मनुष्य जनम को पाकर मैंने, सारी उम्र गंवाई ।
शुभ और अशुभ कर्म को देखा, बिपत अनंती पाई ॥ कैसी० ॥
आज सजाकर मुझको लाये, देंगे यह भेंट चढ़ाई ॥
अय प्रभु आओ मुझको बचाओ, होहू बिपत सहाई ॥ कैसी० ॥

रामचन्द्र—अय बालखिल मनमें प्रसन्न हो, आज तुझको तेरा राज मिला और यह रुद्रभूत जिसने मलेच्छपने का त्याग किया तेरा मंत्री बना अपने राजको जाओ, और अपने मनमें खुशी मनाओ.

बालखिल का खुशी होकर गाना

तुमरे चर्नों में अय स्वामी, तन मन वारना जी ॥ तुम० ॥
बंदीग्रह में अति दुख पाया, आपने आकर मुझे छुड़ाया ।
गुण वर्णन करूं कहां तक तुमरे पारना जी ॥ तुम ० ॥
हाल सुनाऊं क्या मैं तुमको, तनक न भाया खाना मुझको ॥
दुख सहे मैं ऐसे जाको पारनाजी ॥ तुम ० ॥
चर्नों को धोकर पी जाऊं, नेत्रों से मैं इन्हें लगाऊं ॥
भवसागर से स्वामी मुझको, तारना जी ॥ तुम० ॥

बालखिल का रामचन्द्र जी के पैरों पर गिरना पर्दे का आहिस्ता आहिस्ता गिरना

सातवां सीन-कपिल ब्राह्मण का घर

रामचन्द्र व लछमन व सीता का नजर आना

सीता—प्राणपती जल की तृष्णा लगी है।

रामचन्द्र—अच्छा प्यारी अभी बस्ती नजदीक है वहां पर पानी की प्राप्ती होगी।

रामचन्द्र व लछमन व सीता का बस्ती के अन्दर जाना
रामचन्द्र व लछमन व सीता का कपिल ब्राह्मण के घर जाना
कपिल की स्त्री का आदर सत्कार करना और गाना

कहां से आप आये हो, जो यहां तशरीफ़ लाये हो।
करूं भक्ती मैं चनों की, मेरा तुम मन लुभाये हो॥
पधारो यज्ञशाला में लाऊं, जल और खाना मैं॥
करो आराम यहां पै तुम, परेशानी उठाये हो॥ कहां०॥
रूप सुन्दर बना ऐसा, स्वर्ग में इन्द्र हो जैसा।
मेरे शुभ कर्म आये हैं, जो यहां तशरीफ़ लाये हो॥ कहां०॥

रामचन्द्र व लछमन सीता का यज्ञशाला में बैठना बिराजना

लछमन—हमको तृष्णा लगी है सिर्फ पानी पिलाओ।

स्त्री का पानी पिलाना और कपिल ब्राह्मण का एक तरफ़ खड़ा होकर यह नज़ारा देखना और मन में गुस्सा करना

कपिल—यह क्या बेहूदा हरकत है मेरी यज्ञशाला क्यों अपवित्र कराई है।

गुस्सा करना गाना

तर्ज—जब के कलंदर बन बन फिर कर बंदर लेकर आवत हैं।

गाना—अनजान पुरुषों को कैसे बना लिए तूने महमान॥
यज्ञशाला मेरी अशुद्ध करी क्या समझ नहीं मूरख नादान॥

सुन बे औरत पगली मेरी, क्या तू भूत है शैतान ॥
तुझको गधों के स्थान पै बांधू, पकड़ूं दोनों कान ॥ अनजाने० ।

(डंडा लेकर चारो तरफ़ फिरना)

विद्वानों में शिरोमणी मैं हुआ मेरा अपमान ॥
नमस्कार मुझको नहीं करते ऐसा है अभिमान ॥ अन जाने० ॥

कपिल की स्त्री—पीतम मेरी बात सुनो तुम कहां गया तुमरा है ज्ञान ॥
भाग खुले आये घर पै हमरे यह तो हैं जोधा बलवान् ॥

कपिल—बक् बक् झक झक् करती है क्या सुन वे ओ नादान ॥
तेरी करूं हक़ीक़त ढीली सारी मारूं डंडा तान ॥ अनजाने० ॥

स्त्री का चीख़ मारना लोगों का जमा होना

एक मनुष्य—क्या है क्या है अय कपिल क्या है स्त्री अबला होती है इस पर हाथ उठाना उचित नहीं है ।

कपिल—चचा जी जावो तुम्हें इससे क्या मतलब मैं आज इसकी जान निकालूंगा, खुद अख़्त्यारी का मज़ा चखावूंगा, मेरी यज्ञशाला इसी मूरखा ने अपवित्र कराई है ।

चाचाजी—अबे जा, महा मूरख जा अरे बेवकूफ़ जो अपने मकान पर कोई शत्रु भी चला आवे तो उसकी भी ख़ातिर करते हैं । यही सज्जन और नेक आदमियों का काम है तू ऐसा निर्लज्ज और पाजी हमारे कुल में पैदा हुआ है जो स्त्री पर हाथ उठाता है सुन ।

बाल बृद्ध सुत नार को, कबहुं न मारै जान ॥
रक्षा इसके प्राण की, रक्खै आप समान ॥
रक्खै आप समान कपिल तू सोच रहा यह क्या मन में ।
इस क्रोध को पापी ठंडा कर नहीं आग लगाये यह तन में ॥
अरे देख तू आंख उठा कर के अचरज है इस सज्जन पन में ।
अब मेह बरस रहा बिजली चमकै इकले कहां जांय बन में ॥

कपिल—इनका सज्जन-पना देख रक्खा है चचा जी बस इसही में खैर है कि तुम सीधे साधे अपने घर को चले जाओ।

चचा जी—तो क्या मुझको भी मारने का इरादा है।

कपिल—हां हां हां (मारना)

चचा जी— कोई मोहल्ले में है जो इसकी मिज़ाजपर्सी करै।

बहुत से आदमियों का आना और कपिल को बुरा भला कहना मारना और दिक करना

एक मनुष्य—क्या है क्यों मोहल्ले को परेशान कर रक्खा है।

कपिल—जाओ जी जाओ तुम सबके सब चले जाओ वरना डंडे से मार कर सबको ठंडा कर दूंगा।

दूसरा मनुष्य—मारो २ इस कपिल की मिजाज़पर्सी करो देखो यह पापी ऐसे सज्जन पुर्षों को अपने मकान से निकालता है और अपने चचा का भी सामना करता है बस बस अब इसको हाथों हाथ अधर उठा लो।

(सब मिल उठा लेना)

कपिल को मारना पीटना और दिक करना कपिल का रोना

कपिल—अरे महा दुष्टो पापियो अब तो मेरे घर से निकल जाओ और कहीं जाकर मुंह छिपाओ।

लछमन—अरे दुष्ट यह क्या बकता है।

कपिल—बकना बकना कुछ नहीं, यह डंडा है और तुम्हारा सर है।

कपिल का डंडा लेकर दौड़ना लछमन का पकड़ कर धक्का देकर मारना चाहना रामचंद्र जी का बचाना

लछमन—देख तेरी यह जून छुटाय देता हूं और इस क्रोध का मज़ा चखाय देता हूं।

रामचंद्र—नहीं २ भ्रात ऐसा न करो इस पर दया करो दुनिया में जीव की प्रकृति भिन्न २ हैं। (पर्दा गिरना)

तीसरा बाब—(नवां सीन)
जंगल बयाबान

बारिश का बरसना बिजली का चमकना रामचंद्र लछमन व सीता का दिखाई देना और एक बड़ के तले सोना रामचंद्र व लछमन का गाना

बस्ती के अन्दर आज से ठहर कभी नहीं ।
बड़के तले चौमास गुजारेंगे बस यहीं ॥
जिससे कि निरादर हो अब वह काम क्यों करें ।
कलियुग का फेर आता है सत युग रहा नहीं ॥ बस्ती०
बिजली चमक रही है गो पानी बरस रहा ।
दुख सहन करेंगे हमें परवाह जरा नहीं ॥ बस्ती०

बारिश का बंद होना

रामचंद्र— अय लछमन निद्रा आती है सोने को जी चाहता है ।
लछमन—अच्छा महाराज सो जाइये आराम कीजिये मुझ को भी आलस ने दबाया है ।

तीनों का सोना और एक यक्ष का पेड़ पर चढ़ने के लिये आना इनका तेज देख कर मुताज्जिब होना

तर्ज़ः—तैंने तोकी बस हिमाक़त बड़ी अक्ल खोई गई कहां तेरी ।

यक्ष का गाना

अक्ल खोई गई कहां मोरी रे । हाय मुझको कैसा हुआ इजतराब
हैं यह तेजस्वी कैसे तपस्वी बेशक हैं यह लाजवाब ॥
लाऊं गरु को रहना यहां मुश्किल जाऊं न अभी शिताब

मैंने अवधी भी छोड़ी बहुतेरी रे ॥ अक्ल खोई० ॥
पेड़ के ऊपर कैसे चढूं मैं मेरी नहीं यह मजाल ।
हैं कोई औतारी या हैं मुरारी मेरा हुआ यह ख़याल ॥
बनूं इनका ही मैं दास चेरी रे ॥ अक्ल खोई रे० ॥

(यक्ष का जाना गुरू को लेकर आना)

गुरु का गाना—रचो इक राम नगरी तुम्हें यही करना मुनासिब है ॥
इन्हें आराम देना ही मुनासिब है मुनासिब है ।
यह हैं बल भद्र नारायण मैं अवधि से विचारा है ॥
न हो दिक्कत इन्हें प्यारो यही करना मुनासिब है ।
अयुध्या सी बसे नगरी हैं जितनी बात वहां सगरी ॥
वह ही नौकर रहें चाकर यही करना मुनासिब है ।
उठाकर ले चलो इनको सुलाओ राम नगरी में ॥
करें आराम यह वहां पै यही करना मुनासिब है ।

पहला मनुष्य—अच्छा महाराज अभी हुक्म की तामील होती है चलो भाई उठाओ, और राम नगरी में सुलाओ

सब यक्षों का रामचंद्र व सीता लछमन को राम नगरी में लेजाना गुरू का मंत्र पढ़कर परदे में फूक मारना परदे का फटना राम नगरी का दिखाई देना

तीसरा बाब दसवां सीन-रामपुरी

रामचंद्र जी का निद्रा से उठना अयुध्या समझकर अफ़सोसकरना

तर्ज जोगिया—

रामचंद्र—कैसी हम पर जहालत छाई, पहली बातें सभी दी भुलाई ।
लछमन आंख खोलकर देखो, है यह अयुध्या भाई ॥
वड़ के तले हम सोये हुये थे, लाया यहां कौन उठाई ॥ कैसी० ॥

राज भरत को दिया पिता ने, हम बनवास दिलाई ॥
उठ चलो जल्दी भोर होत है, होगी लोग हंसाई ॥ कैसी ० ॥

यक्ष के अधिपति का ज़ाहिर होकर वजह ज़ाहिर करना और सोयम प्रभा हार रामचन्द्र को पहनाना और मणि कुण्डल लछमन को देना कल्याण माला चूड़ामणि सीता को देना ।

गुरु का—महाराज यह अयुध्या नहीं है यह रामनगरी आपके आराम करने को रची गई है, आप यहां पर आराम कीजिए और जिस चीज़ की दरकार हो वह भंडारी से लेलीजिये सदाव्रत भूकों को दान दीजिये, जैसा कि अजुध्या में आप देते थे और मैं हर वक्त आपके चरणों की सेवा में हाज़िर हूं महाराज यह स्वयं प्रभा नामा हार आपकी भेंट करता हूं और मणि कुंडल चांद सूरज सामान लछमन की सेवा में देता हूं और कल्याण माला चूड़ामणी सीता को देता हूं अय रामनगरियो गावो और रामचन्द्र जी का दिल बहलावो ।

रामशारियों का गाना

हम सब वारियां जी ॥ तुम पर वारना जी ॥
सब मिल जुल कर शीश निवावें । हम सब वारना जी ॥ तुम ० ॥
देवों ने स्तुति तुम गाई । रामनगरी यहां आन बसाई ॥
बनी अयुध्या जैसी, तुम पर वारना जी ॥ हम ० ॥
बने तुम्हारे हम सब चाकर । मगन रहें नित दर्शन पाकर ॥
करेंगे सेवा ध्यान लगा कर, तुम पर वारना जी ॥ यह तन मन० ॥

एक औरत मर्द का दान लेने के लिये आना ।

मर्द औरत—महाराज हम दुखी जीवों को दान दीजिये । और हमारी आशा पूर्ण कीजिये ।

रामचन्द्र—अय भंडारी जावो और इनको कपड़ा वगैरा जो जो चीज़ें यह मांगें इनको दिलावो ।

औरत मर्द का भंडारी के साथ जाना (पर्दा गिरना)

तीसरा बाब-ग्यारवां सीन

पर्दा जंगल राम नगरी

कपिल ब्राह्मण का कुल्हाड़ी और रस्सी लेकर लकड़ी लेने को आना और रामनगरी को देखकर ताज्जुब करना और पूछना

कपिल (शेर) हैं हैं क्या मैं रास्ता भूल गया।
कैसा शहर यह आज आशकार होगया।
जो कल था बयाबान वह गुलजार होगया॥
क्या मुझको कुछ जनूं में खयाल होगया॥
अब लकड़ी ले के जाना महाल होगया॥
बैठे बिठाये कैसा मलाल होगया।
आवे तो कोई पूछूं क्या हाल होगया॥

औरत मर्द का आना

औरत मर्द—अरे क्या पूछता है ?

कपिल—हां हां यह बतलाओ जहां मैं लकड़ी लेने आता था वहां यह कैसा शहर नमूदार होगया।

औरत मर्द—अरे मूरख क्या तू नहीं जानता कि यह राम नगरी बसी है दुखी जन जो जाता है उसका दुख दूर होता है और देख यह कपड़ा वगैरा हम दान लाये हैं अगर तुझको भी कुछ जरूरत है तो जा मन मानी मन चिंता पूर्ण होगी।

कपिल—वाह खूब जरूर फायदा उठाना चाहिए।

कपिल ब्राह्मण का जाना—(पर्दा गिरना)

तीसरा बाब-बारवां सीन-राम नगरी

कपिल ब्राह्मण का दर्बार में आकर खड़ा होना और रामचन्द्र व लछमन को देखकर घबराना और भागना रामशगरियों का गाना ।

हो दीना बंधु दीनन के दुख दूर करो महाराज ।
स्वयंबर में तुम धनुष चढ़ाया, सिंघोदर का मान घटाया ।
चनों में हम शीश निवाया, विनती सुनो महाराज ॥ हो० ॥
दुखी जन जो तुम पर आवें, मनमानी सामग्री पावें ।
इन्द्र भी तुमको शीस निवावें, बना रहे सर ताज ॥ हो० ॥
पिता के तुमने वचन निभाये, घर जो छोड़ वनों को धाये ॥
कृपा हुई जो यहां पै आये, रक्खो हमरी लाज ॥ हो ० ॥

रामचन्द्र व लछमन का दान देना और कपिल ब्राह्मण का यह नज़ारा देख कर भागना लछमन का बुलाने के लिए हुक्म देना

लछमन—अय दर्बारी जाओ और इस भागे हुय मनुष्य को पकड़ लाओ

दर्बारी—अच्छा महाराज (दर्बारी का पकड़कर लाना)

लछमन—क्यों रे तू कौन है जो इस तरह यहां से भागा था ।

कपिल का गाना—(तर्ज सोहनी)

बख्श दो मेरी ख़ता को मैं ख़तावारों में हूं ।
दो मुझे इसकी सज़ा बेशक सज़ा वारों में हूं ॥
इस ज़ुबां को काट दूं और क्या कहूं गुफ्तार में ॥
मुंह तुम्हें कैसे दिखाऊं मैं शरमसारों में हूं ॥ बख्श दो ० ॥
मैं वही पापी कपिल हूं जिसको जाना आपने ।

है तुम्हें मालूम सब कुछ मैं गुनहगारों में हूं ॥ बख्श दो० ॥
सत्कार स्त्री ने किया मैंने न जाना आपको।
क्या हुआ मुझ से सितम हाय मैं सितमगारों में हूं ॥ बख्श दो० ॥

रामचन्द्र—अच्छा हमने तेरा कुसूर मुआफ़ किया।
और ले यह तुझको एक हज़ार रुपया इनाम दिया

(कपिल का रुपया लेकर खुश होना)

कपिल का गाना

जो दानी हो तो ऐसा हो गावो सब मिलके प्यारो तुम ॥ जो दानी हो० ॥
बुराई जो कुछ मैंने की, इन्होंने चश्मपोशी की ॥
गो सख्ती मैंने सब कुछ की, जो ज्ञानी हो तो ऐसा हो ॥ गावो ० ॥
न लाये रंज यह दिल में, यह शंका है मेरे मन में ॥
न कीना मान कुछ बन में, जो मानी हो तो ऐसा हो ॥ गावो० ॥
लगावो पार अब खेवा, हैं खिदमत में खड़े देवा ॥
करूं इन चर्नों की सेवा, जो स्वामी हो तो ऐसा हो ॥ गावो० ॥

कपिल का हाथ जोड़ कर शीस निवाना
और पर्दे का आहिस्ता २ गिरना

तीसरा बाब-तेरवां सीन

पर्दा जंगल मय फांसी
बनमाला का फांसी खाते दिखाई देना

बनमाला—आहा मैं कौन, मेरा नाम बनमाला अय लछमन तेरे वियोग ने बिस्मिल कर डाला।
(लछमन का एक तरफ़ खड़े होकर यह नज़ारा देखना)

नृत कारनी का आना (गाना)

राजा—थारे चरनों में न्यावें चौवीसो महाराज

थारे चरणों में न्यावें चौवीसो महाराज । थारे० । चौवीसो महाराज
चौवीसो महाराज ।। थारे० ।।
आदि नाथ और अजित मनाऊं, सम्भूनाथ को दिल से ध्याऊं ।
अभिनन्दन का ध्यान लगाऊं, सुमति नाथ महाराज ।। थारे० ।।
पद्म प्रभु शुभ नाम तिहारा, सुपार्श्वनाथ धन भाग हमारा ।
चन्दा प्रभु जग का उजयारा, पुष्पदंत महाराज ।। थारे० ।।
शीतलनाथ सुनो जी अरजी, श्रयांश नाथ करो मो मरजी,
वासपुज्य दो शिवपुर बरजी, विमलनाथ महाराज ।। थारे चरणों में० ।।
अनन्तनाथ दुख मेटन हारे, धर्म नाथ हम शरण तिहारे ।
शांत नाथ हरो कर्म्म हमारे, कुंथनाथ महाराज ।। थारे चरणों० ।।
अरह नाथ श्री मल्ल मनाओ, मुनि सुव्रत नमि नेम को ध्यावो ।
पारशनाथ का ध्यान लगाओ, जै २ महावीर महाराज ।। थारे० ।।

राजा—अय मंत्रियो इनको इनाम दो और खुश करो, वाह वाह क्या अच्छा गाना है ।

मंत्री—बहुत अच्छा अभी इनाम देते हैं ।

नृतकारनी का गाना

तू इनाम देने के काबिल नहीं जाके राजा भरत को शीश निवा ।
वह अयोध्या पति महाराजा समझ जा के चनों में उनके शीस निवा ।।
वहां जानेसे जां बख्शी होगी तेरी, वह नरसा हत जरा सी मान मेरी ।
इस पाखंड को अपने छोड़ यहीं, जा के राजा भरत को शीस निवा ।।
वरना बे मौत मारा जावेगा तू और अन्त समय पछतावेगा तू ।
संग्राम को मन से त्याग अभी, जा के राजा भरत को शीस निवा ।।

जवाब राजा का

वनमाला का गले में फांसी डालना और लछमनका बचाना

लछमन—गले से फांसी निकार, गले से फांसी निकार, लछमन प्यारे से करले तू प्यार ॥ मैं ही प्यारा लछमन तेरा सुनले मेरी गान मेरी पूजा कर तू क्यों खोवे है मान ॥ गल० ॥
गर तुझको कुछ शुबहा हो मुझ में, देख प्रत्यक्ष इस आन ।
रूप स्वरूप गुनों को लख के, करले अब इम्तिहान ॥ गल० ॥
चल तू भाई रामचन्द्र पै जहां है सीता माई ।
दुख यह दूर होय सब तेरे, ज़रा देर न आई ॥ गल० ॥

(दोनों का गले में गल बंईया डालकर गाना) और खुश होना

लछमन—दिल वरियां प्यारियां ॥

वनमाला—जाऊं मैं वारियां ॥

लछमन—नादानी यह क्या मरने की सोची प्यारियां ।
खुश हो के मेरी प्यारी गल बैंय्यां डारियां ॥ दिलवर० ॥

वनमाला—बिरहा की मोहे अग्नी ना प्यारे मारियां ।
तू ही चन्दा तू ही सूरज यह तन मन वारियां ॥ जाऊं मैं० ॥

लछमन—दिल वरियां प्यारियां ॥ गाते गाते चले जाना

वनमाला—जाऊं मैं वारियां ॥

रामचंद्र व सीता जी का आना

तू कहां गया

रामचन्द्र—अय लछमन अय लछमन कुछ मालूम नहीं होता कि यह बालक रात को अकेला उठकर कहां घूमा करता है ।

सीता—अय प्राण प्यारे लछमन कहीं यहीं पर होगा आप आइये, बैठिये तिष्ठिये ।

रामचन्द्र--प्राण प्यारी यह सब कुछ दुरुस्त है कि वह यहीं होगा मगर मुझको जब तक वह न मिललें चैन न होगा, अय लछमन भाई अय लछमन भाई इतनी देर कहां लगाई ।

दूसरी तरफ से लछमन का मय बनमाला के आना

लछमन--क्या है भाई, क्या है भाई ।

रामचन्द्र--कुछ नहीं, देखो तुम हम से कह कर जाया करो ।

बनमाला का सीता के पैरों पर गिरना और रामचंद्र को नमस्कार करना सीता का आशीर्वाद देना

सीता--अय बहन पूत सुहागन हो और लछमन जैसे तेरे भर्तार हों।

लछमन--महाराज आज यह फांसी खाने आई और मैंने इसकी जान बचाई ।

रामचन्द्र--बहुत अच्छा किया हमको चाहिए कि हम दुनियां के दुख दूर करें

बनमाला के सिपाही का आना

सिपाही--अरे यह क्या यहतो बनमाला, मालूम होती है कि रामचंद्र और लछमन और सीता के पास बैठी है, हमारे महाराज को लछमन की बड़ी तलाश थी, सो सहज ही में भाप्ती हुई, बस बस अब दर्बार में जाकर खबर करूं, और मुंह मांगा इनाम लूं।

बनमाला--अरे क्यों क्यों, क्यों क्यों आया ।

सिपाही--कुछ नहीं डेरा खाली देख कर हमको यह आश्चर्य हुआ कि राज कुंवरी हम से बिना कहे कहां चली गई ।

बनमाला--अच्छा अब तुम जाओ और देखो रामचंद्र और लछमन और सीता के बन आने की खबर दर्बार में पहुंचाओ ।

सिपाही--बहुत अच्छा

(सिपाही का जाना)

सीता—अय बहन यह क्या तुम फांसी खाने आज क्यों आई।

वनमाला—मेरी सीता माई, मैंने बालपने ही में लछमन के गुण सुने और यह सुनकर मन में नेम कर लिया, कि इस भव में अगर मेरा संयोग होगा तो लछमन से होगा, परन्तु मेरे पिता पृथ्वी धर ने आपको बनोवास जानकर, और यह समझ कर कि लछमन का मिलना दुश्वार है तब मुझको इन्द्र नगर के कुंवर बालमित्र को देना उचित समझा मगर मेरा तो नेम हो चुका था आज मैं वन क्रीड़ा का बहाना करके फांसी खाने आई, जहां शुभ कर्म के उदय होने से लछमन प्यारे ने मेरी जान बचाई।

पृथ्वीधर के दरबारी का आना

दरबारी—महाराज की जै हो, जै हो चलिये महाराज आपको मय सीता माई व लछमन के यह वनमाला के दरबार में बुलाया है।

वनमाला—चलिये, चलिये, महाराज चलिये।

रामचन्द—अच्छा अय लछमन चलो।

तीसरा बाब-चौदवां सीन
दर्बार राजा पृथ्वीधर

रामचन्द्र लछमन व सीता का बैठे दिखाई देना और पृथ्वीधर का लछमन से वनमाला का पानी ग्रहण करना

राजा पृथ्वीधर का गाना

तर्ज—इन्दर सभा

राम लखन के आने से खुशी हुई मोहे आज।
वनमाला कन्या देऊं लछमन हो सरताज॥

चिंतामणी जैसे रतन आय मिले स्वयमेव ।
तैसे मोहे लछमन मिले सुन देवों के देव ॥
गल फांसी पुत्री दई रहा न मो को ध्यान ।
लछमन जो मिलता नहीं खोए जाते प्रान ॥
लछमन से पानी ग्रहण करता हूं इस आन ।
वर कन्या दोनों मिले खुशी हुई यह महान ॥

राजा का लछमन व वनमाला का हाथ से हाथ मिलाना और दर्बारियों का मुबारिकबादी गाना

मंत्री—अय राम शगरियां गाओ और रामचंद्र व लछमन के आने की खुशी मनाओ ।

दर्बारियों का गाना

मुबारिक बादी मिल गाओ मुबारिक हो मुबारिक हो ।
यह जोड़ा चांद सूरज का मुबारिक हो मुबारिक हो ॥
छिपै है दिन में ज्यों सूरज हैं लछमन में भरे गुण वह ।
नहीं रखता कोई सानी मुबारिक हो मुबारिक हो ॥
निकल कर चन्द्रमा शीतल ज्यों शोभा रात को पावे ।
यह ही है रूप वनमाला मुबारिक हो मुबारिक हो ॥

चोबदार का आना

चोबदार—महाराज की जै हो नंदावर्त के महाराजा अति वीरज का दूत आया है कुछ कहना चाहता है ।

मंत्री--अच्छा आने दो ।

दूत का आना

दूत--श्री महाराज को नमस्कार है यह पर्चा महाराज अतिवीरज ने दिया है और आपको मय सेना लड़ने के वास्ते शीघ्र बुलाया है राजा भरत अयोध्या के अधिपति से संग्रामहोगा और उसको नीचा दिखाया जायागा

राजा--अय मंत्री पत्र लेकर पढ़ो और सुनाओ।

मंत्री का पत्र को पढ़कर सुनाना

मंत्री--अय श्रीजय नगर के राजा पृथ्वीधर तुम्हारे क्षेम कुशल का अभिलाषी नंदावर्त का राजा अति वीरज तुमको आज्ञा देता है कि शीघ्र मय सेना चले आओ देखो राजा विजय सार दल ८०० आठ सो हाथी ३००० तीन हजार घोड़े अनेक सांवतनी सहित आया है और अङ्गद देश का राजा अगध्वज कलेशर, वकेशरी, व पृथक ६०० हाथी लेकर आये हैं और देखो मगध देश का राजा अनेक राजन सहित आठ हजार हाथी लेकर आया है और मलेच्छों के अधिपति सो भद्र व मतिभद्र, व साधुभद्र महा पराक्रम के धारी व सिंहराज व सिंहरथ दोनों हमारे मामा बड़ी सैना सहित आये हैं और मस्त देश के स्वामी मोरदत्त दस चौहणी दल लेकर आये हैं तुम भी शीघ्र आओ और विलंब न करो जैसे किसान वर्षा को चाहता है तैसे मैं तेरा आना देख रहा हूं मुझको अयोध्यापति के महाराजा भरत का मान घटाना है और नीचा दिखाना है।

लछमन--अय दूत राजा भरत और अति वीरज का किस कारण विरोध हुआ सो हम सुनना चाहते हैं।

दूत- माहराज सुनिये हमारे माहराजा अति वीरज ने दूत को पठाया कि भरत अयुध्या के राजा से कहो कि वह मेरा सेवक होकर रहे और मुझको अपना शहन्शाह खयाल करे अगर वह न मंजूर करे तो अयोध्या छोड़ समन्दर पार चला जाये, शत्रुघ्न यह सुन कर अति क्रोध को प्राप्त हुआ और कहा कि अय मूढ़ दूत राजा भरत अति वीरज का सेवक होकर रहे या अति वीरज ही राजा भरत का सेवक होकर रहे उसने यह जान लिया है कि माहराजा दशरथ को वैराग और राम चन्द्र लछमन को वनोवास होगया है तभी ऐसी वार्ता करता है और दूत से कहा कि तू राजा अति वीरज से कहदे कि वह शीघ्रही राजा भरत की सेवा अङ्गीकार करै वरना मारा जायगा और अन्त को पछतायगा यह ही बात दूत ने अतिवीरज से आकर कही महाराजा

ने हजारों राजा इकट्ठे करके चढ़ने की तय्यारी की है वही विचारे शत्रुघन और भरत क्या कर सकते हैं, जितना उसके पास सामान है हमारे यहां एक २ राजा उससे ज्यादा सैना लाया है अब कुछ दिन में भरत राज रहित होगा और शत्रुघन का मान भंग होगा।

लछमन—अच्छा अच्छा दूत तुम जाकर कहो कि हम लोग बहुत जल्द सैना लेकर आरहे हैं।

दूत का जाना

पृथ्वीधर—कहिये श्रीरामचन्द्र अब क्या करना चाहिये।

रामचन्द्र—कुछ फिकर न करो बल्कि संग्राम के लिये अपने पुत्र और लछमन आपका जंवाई हमारे हमराह भेज दो।

पृथ्वीधर—यह मैं जानता हूं गो मैं अतिवीरज का सेवक हूं, परन्तु अतिवीरज महा नीच पुरुष है, मेरी कुल सेना ले जाकर अतिवीरज का मान ढीला करो और भरत को वहां का राज तिलक करो।

रामचन्द्र—खैर जैसा अवसर होगा किया जायगा।

रामचन्द्र व लछमन व पृथ्वीधर के पुत्र का जाना
पर्दे का गिरना

तीसरा बाब-पंद्रवां सीन

अतिवीरज का दर्बार
रामचन्द्र व लछमन का नृत कारिनी का रूप बना कर आना

चोबदार—महाराज की जै हो, द्वार पर दो नृत कारनी अयुध्या की आई हैं महाराज को गाना सुनाना चाहती हैं।

राजा—अच्छा हाजिर करो।

नृत कारनी का आना (गाना)

राजा—थारे चरनों में ध्यावें चौबीसों महाराज
थारे चरणों में ध्यावें चौबीसों महाराज । थारे० । चौबीसों महाराज
चौबीसों महाराज ॥ थारे० ॥
आदि नाथ और अजित मनाऊं, सम्भूनाथ को दिल से ध्याऊं ।
अभिनन्दन का ध्यान लगाऊं, सुमति नाथ महाराज ॥ थारे० ॥
पद्म प्रभु शुभ नाम तिहारा, सुपार्श्वनाथ मन माग हमारा ।
चन्द्रा प्रभु जग का उजयारा, पुष्पदंत महाराज ॥ थारे० ॥
शीतलनाथ सुनो जी अरजी, श्रेयांस नाथ करो मो परजी,
वासपुज्य दो शिवपुर बरजी, विमलनाथ महाराज ॥ थारे चरणों में० ॥
अनन्तनाथ दुख मेटन हारे, धर्म नाथ हम शरण तिहारे ।
शांत नाथ हरो कर्म्म हमारे. कुंथनाथ महाराज ॥ थारे चरणों० ॥
अरह नाथ श्री मल्ल मनाओ, मुनि सुव्रत नमि नेम को ध्यावो ।
पारशनाथ का ध्यान लगाओ, ॐ २ महावीर महाराज ॥ थारे० ॥

राजा—अय मंत्रियो इनको इनाम दो और खुश करो, वाह वाह क्या अच्छा गाना है ।
मंत्री—बहुत अच्छा अभी इनाम देते हैं ।

नृतकारनी का गाना

तू इनाम देने के काबिल नहीं जाके राजा भरत को शीश निवा ।
वह अयोध्या पति महाराजा समझ जा के चरनों में उनके शीश निवा ॥
यहां जानते जो बख्शी होगी तेरी, यह नसीहत जरा सी मान मेरी ।
इस पाखंड को अपने छोड़ यहां, जा के राजा भरत को शीस निवा ॥
वरना वे मौत मारा जायगा तू और अन्त समय पछतायगा तू ।
संग्राम को मन से त्याग अभी, जा के राजा भरत को शीस निवा ॥

जवाब राजा का

राजा—औ नृतकारनी क्या बक रही हो क्या नशे शराब में चढ़ रही हो

शेर—बैठ कर अपनी सभा में शत्रुघन अभिमान करे।
यह उसे जुरअत हुई मेरे दूत का अपमान करे॥
दो हजार राजा मेरे यहां आज हैं आये हुये।
एक के काबिल नहीं वह जिस पै फिर अभिमान करे॥
मेरे राजों की गरद में वह भरत मिल जायगा।
मौत उसकी आई है जो शत्रुघन अभिमान करे॥

नृत कारनी (कवित्त)

अरे मूढ़ तू है तुझे सूझत नाहिं ताल बेताल जु गावत है तू।
तू इनसे लड़ने के काबिल कहां अरे काहे को लोग हंसावत है तू॥
अरे थोड़े ही में बहुत समझ काहे जमके दूत बुलावत है तू।
अरे संग्राम को तज अपनी जान बचा काहे सोते नाग जगावत है तू॥

राजा—भाग जाओ जां बचा कर वरना मारी जाओगी।
इस जवां ज़ोरी से तुम फिर अंत को पछताओगी॥
क्या निडर होकर खड़ी हो खौफ़ कुछ आता नहीं।
दो दो टुकड़े मैं कराऊं देर अब लाता नहीं॥

नृत कारनी—अरे मूढ़ मुंह को थाम, आपे को संभाल।

राजा—अय बहादुरो आओ, और इनको जम का द्वार दिखाओ, जवां ज़ोरी का मज़ा चखाओ।

बहादुरों का इकट्ठे होकर आना और लछमन का खड्ग चमकाना तमाम दर्बारियों का देख कर भागना

नृतकारनी लछमन—अरे दुष्ट मैं देखती हूं कि कौन मेरी खड्ग के सामने आएगा, तेरे दो हजार राजाओं को इस खड्ग का एक वार काफ़ी है।

दर्बारीलोग—अरे भागो भागो भागो यह इन्सान नहीं है बल्कि देवी राजा भरत की मददगार बनके आई है।

सबका एकदम भागना लछमन का झपट कर अतिवीरज के सरके बाल बांधना

लछमन व नृत०—अरे पापी देख अब मैं तुझको भरत के पास तेरे सरके बाल बांध कर लेचलती हूं देखूं तुझको कौन छुड़ाता है, अपनी जान गंवाता है।

राजा का अफसोस करना गाना

नृतकारनी बांधे मुझे हाय हुवा कैसा गजब।
अभिमान के वश होके मैं अपयश लहा हाय गजब॥
इस मोह जाल को तोड़दूं दुनिया से रिश्ता छोड़दूं।
सारी उमर खोई यूंही हाये हुवा कैसा गजब॥
लक्ष्मी को मैं जूं जूं लही, तृष्णा मेरी बढ़ती रही।
बहुते गले कटवाए मैं, हाये हुवा कैसा गजब॥
बनमें तपस्या जाके मैं, चूकूं न अवसर पाके मैं।
भव भव बहुत रुलाता फिरा, हाय हुवा कैसा गजब॥

रामचन्द्र—अय अतिवीरज क्या ख्याल है।

राजाअतिवीरज—बस अब जिन दिक्षा लेने का ध्यान है। मुनिव्रत धारण करूं, बनमें जाकर तपस्या करूं।

रामचन्द्र—धन्य है धन्य है धन्य है अय अतिवीरज तुझको धन्य है, अय भ्रात अतिवीरज को बंधन रहित करो।

(पर्दा गिरना)

तीसरा बाब सोलहवां सीन

जङ्गल दंडक बन

दो मुनीश्वरों का आसमान से उतरना और देवों का फूल बरसाना रामचन्द्र जी का हाथ जोड़कर शीश निवाना

रामचन्द्र—महाराज इस दास पर कृपा करके धरम का व्याख्यान सुनाइये।

मुनीश्वर—अय रामचन्द्र क्या सुनायें, इस संसार में यह मूरख मनुष्य आकर कैसा कैसा उत्पात और पाप करता है, जिसको सुनकर अचरज प्राप्त होता है सुनो, जिस योनी में जीव पैदा होता है और नौ महीने पेट में रहता है, और जिन स्तनों का दूध पीकर शेर होता है, फिर योवन अवस्था में उन्हीं स्तनों को देखकर बेखुद बन जाता है, और उनकी चाह में जान तक गंवा देता है, क्या यह अचरज नहीं है।

रामचन्द्र—बेशक बेशक महाराज यह जीव बहुत गलती पर है।

आवाज का होना और एक जटायु पक्षी का आसमान से उतरना और रामचन्द्र व सीता का हैरत में आना, और पूछना

(जटायू का पैरों पर महाराज के गिरकर बार २ नमस्कार करना सिर निवाना)

रामचन्द्र—अरे दूर हो दूर हो अरे पक्षी दूर हो, और अपना रास्ता लो, जावो जावो।

सब का रौल मचाना और पक्षी का बार २ नमस्कार करना और सोने की चूंच और पंजे का होजाना

रामचन्द्र—महाराज यह गृद्ध पक्षी आपके चरणों पर गिरकर और रूप को प्राप्त होगया है, यह कौन जीव है, और क्या चाहता है, हम सब लोग इसके चरित्र सुनने के मुश्ताक़ हैं।

मुनीश्वर—अय रामचन्द्र सुन, यह इसही दंडक नामा नगर का एक बहुत बड़ा राजा था, एक मर्तबा इसने मुनीश्वर के गले में मरा सांप डाला और फिर कुछ दिन पीछे जाकर देखा तो मुनीश्वर का शरीर बहुत खिन्न खिन्न होगया है तब उसने सांप निकाला यह देख कर यह पत्ती का जीव जैन मत का श्रद्धानी हुवा। इसकी स्त्री जैन मत का श्रद्धान सुनकर क्रोध को प्राप्त हुई, और एक अपने साधु को बहका कर जैन मुनि का रूप धारण कराकर अपने मकान में बुलाया और उससे कहा कि तू मुझसे विकार भाव खराब चेष्टा करना, मैं यह हालत दिखाकर राजा को जैन मत का द्वेषी बनाऊंगी उस योगी ने ऐसाही किया राजा ने यह देख कर बहुत रंज किया और हुक्म दिया कि जो मुनी सामने आवे फौरन कोल्हू में पिलवादो, इसी तरह बहुत से मुनी उसने कोल्हू में पिलवाये, एक रोज़ एक मुनि जो शहर में आरहे थे, एक मनुष्य ने कहा कि अगर तुम अपनी खैर चाहते हो तो वापिस चले जावो, वर्ना कोल्हू में राजा पिलवादेगा इसने बहुत से मुनी कोल्हू में पिलवाये हैं। यह सुनकर मुनी को क्रोध उत्पन्न हुवा, और बदन से पुतला निकल कर तमाम शहर और बारह २ योजन जंगल को खाक स्याह कर दिया, और फिर मुनीश्वर के बदन को भी भस्म कर दिया, अय रामचन्द्र कुछ दिनों तक तो यहां घास भी उत्पन्न न हुई अब कुछ वर्ष से यहां मुनीश्वरों के आगमन से सब्जी दीख पड़ता है और इस राजा के जीव ने नर्क निगोद के अत्यन्त दुख सहन करके यहां का गृद्ध पत्ती जटायु हुआ है, अब इसका उद्धार होने को है सो इसको जाति स्मरण पैदा हुआ है, जैन धर्म का श्रद्धानी हुआ चाहता है।

रामचन्द्र—अच्छा महाराज इसको नेम दिलवाइये।

मुनीश्वर—देखो आज से तुम अहिंसा व्रत को पालन करो। और

अष्टमी चौदस को हरी न खाना व्रती रह कर भगवान का ध्यान करना।

जटायु—(सिर हिला कर मंजूर करता है।)

मुनीश्वर—और देखो रामचन्द्र इस जटायु को तुम अपने पास ही रक्खो ताकि इसका नेम धर्म होता रहे।

रामचन्द्र—बहुत अच्छा महाराज मुझको क्या उज्र है।

मुनीश्वर—अच्छा अब हम जाते हैं।

कुलभूषण व देशभूषण दोनों मुनीश्वरों का अहार करके एक दम आस्मान को जाना और सीता का जटायु से प्यार करना जटायु का नाचना कूदना

तीसरा बाब-सतरवां सीन

पर्दा—जंगल

शंभु कुमार का खड्ग साधन करते दिखाई देना चंद्रनखा का आना और खुशी मनाना और खड्ग का आन कर लटकना

चन्द्रनखा का गाना

मिली मिली मुझको कैसी खुशी यह मिली ॥
मेरे खड्ग तो सिद्ध होयगी अब तीन दिन में मिली ॥ मिली० ॥
मन में दिखायेगी अपने मोहर को चक्री की संपत मिली ॥ मिली० ॥
सौन भवे ही मुझको हुवे ये खाना जब लेकर चली ॥ मिली० ॥
शुक्र है तेरा अय मेरे ईश्वर अक्कुन यह माया मिली ॥ मिली० ॥

वार्ता—भगवान तेरा हजार २ बार शुक्र है जो मेरे बेटे को ऐसी अनमोल वस्तु सूर्य हाथ से खड्ग प्राप्त हुई जिसकी पना एक हजार

देव करने हैं दुनिया के शहन्शाह को नहीं तंग करेगा, बेखटके बैठ चक्री वन के राज करेगा।

ईश्वर की तरफ़ नज़र लगाकर चलते हुये गाना

तेरे अब भरोसे पै छोड़ा पिसर को, लगाऊं मैं छाती से प्यारे पिसर को।
हुते मुझको बारह वर्ष सेवा करते, गुज़र जांय यह तीन दिन भी पिसर को
खड्ग बांध कर जब के आयेगा बेटा, करूं जान कुर्बान प्यारे पिसर को॥

चंद्रनखा का जाना और लछमन का आना

लछमन—आहा यह वन में कैसी खुशबू नमूदार है, जिसकी सुगन्धी से दिल बेक़रार है।

खड्ग की तरफ़ देख कर गाना

हाय यह चमन में कैसा माहताब है,
कभी आंखों देखा न ऐसा सुना॥ यह चमन०॥
खड्ग को उठाऊं और आजमाऊं, बेशक इसे कोई भूला गया।

हाथ में उठाना

कैसी इसमें लचक और दमक यह बनी, दमक के अलावा है खुशबू घनी।
मुझको ये ही अजब पेंचताब है॥ यह चमन ०॥

वार्ता—आहा यह क्या तोफ़ा हाथ आया, जिसको देखकर दिल में यह समाया
आज़माना चाहिये इसी बाग़ बहार पर।
देखूं तो इसमें गुन है क्या मारूं मैं झाड़ पर॥

लछमन का झाड़ पर खड्ग मारना एक दम आवाज़ का होना और वन के दो टुकडे होजाना और शंभू कुमार का मर जाना देवों का आन कर आज्ञा मांगना।

देव—महाराज आज्ञा दीजिये क्या हुक्म है।

लछमन—तुम कौन हो, अपना परिचय दो।

देव—महाराज इस सूर्य खड्ग के हम एक हजार देव सेवक हैं इसी खड्ग को शंभु कुमार बारह वर्ष से साधन कर रहा था जो कि आज मस्त को प्राप्त हुआ है, और आपको खड्ग सिद्ध हुआ है।

लछमन—अच्छा जाओ जब आवश्यकता होगी बुलाये जाओगे।

(लछमन का चले जाना)

चन्द्रनखा का आना और यह नजारा देखकर पहले तो खुश होना और फिर लड़के को लाश को देखकर घबराना और जार जार रोना।

चंद्रनखा—हैं हैं अरे क्या मेरे बेटे ने पहिले बन में ही खड्ग चढ़ाई यह अच्छा नहीं किया, क्योंकि जिस जगह पर बारह वर्ष तप और फिर उसको खड्ग से काटा, यह उचित नहीं था, अब बेटा शंभु कुमार शंभु कुमार, हैं हैं खड्ग लेते ही ऐसी चस्म पोशी की क्या किसी शत्रु से पेश्तर लड़ने की तैय्यारी को देखूं तो कहां चला गया।

चन्द्रनखा का अन्दर जाना और बेटे को सरकटा पाना, घबराना

हाय हाय यह क्या हुआ यह क्या हुआ लुट गई २ गजब होगया २

गाना—अय गजब हाय सितम हाय क्या हुआ यह क्या हुआ।
मर जाऊं छाती पीट कर हाय क्या हुआ यह क्या हुआ।
मुंह से तो बेटा बोल तू मारा यहां किसने आनकर।
खिचवाऊं उसकी खाल को हाय क्या हुआ यह क्या हुआ॥
समझाया तैं मा बाप का बेटा जरा माना नहीं।
बारह बरस साधन किया हाय क्या हुआ यह क्या हुआ॥
इस बदन को त्याग दूं आंखों को अपनी फोड़ लूं।
इन आंखों से यह क्या देखती हाय क्या हुआ यह क्या हुआ॥
मामा तेरा रावण बली पाताल लंका है मिली।
तेरा बाप उसका है अधिपति हाय क्या हुआ यह क्या हुआ॥

आया न कोई काम भी इकलौ हा बेटा जान दी।
जोश हुआ तो हुआ करो हाय क्यों हुआ यह क्या हुवा ॥

वार्ता—अय जमीन फटजा, अय आसमान सिमटजा, अय फलक के तारे टूटजा, हाय मुझ अभागनी का बेटा छूटगा,

(गुस्से में होकर गाना) खंजर लेकर

जुलम तेरा आंखों में छाया। फलक पर बादल है आया ॥
इस खंजर खूंख्वार से करदूं तेरा खून।
मारे मुक्कों के तेरे हड्डी चकना चूर ॥
खून मेरे दिलको है भाया ॥ जुलम० ॥
बोटी बोटी के तेरे करदूं दक्षियां टूक।
निगल जाऊं पापी तुझे लगरही मोको भूक ॥
पापी तूने खौफ नहीं खाया ॥ जुलम० ॥

वार्ता—अय पापी तू जहां मिलेगा तेरा खून बहाऊंगी।
और अपने आपको अय बेटा कुर्बान करूंगी ॥

(हाथ में खंजर लेकर जाती है)

तीसरा बाब अठारवां सीन
(पर्दा जङ्गल)

रामचन्द्र और लछमन का बैठे दिखाई देना और चन्द्रनखा का खंजर और सरकटा लेकर आना और इनको देखकर चन्द्रनखा का मोहित होना-खराब चेष्टा करना

चन्द्रनखा वार्ता—आहा आहा आहा यह क्या हुवा अरे मेरा दिल इन पर क्यों मोहित होगया (हाथ मलकर) यह मनुष्य हैं या स्वर्गलोक के इन्द्र हैं इनके दर्शन से ही मब रंज दिल से दूर होगया।

गाना

लगाऊं दिलको किस किस से यह हैं शम्शो कमर दोनों।
न ऐसा हुस्न देखा था हैं आंखे मद भरी दोनों॥
भुलाया रंज मैं दिल से उठाऊं लुत्फ में इनसे।
हैं आंखें दाईं और बाईं बिठाऊं पहलू में दोनों॥
पुत्र का रंज भुलवाया यह अचरज है मुझे आया।
मोह मुझपर अति छाया भोली सूरत बनी दोनों॥

वार्ता—अब मैं क्वारी कन्या का सांग बनाऊं, अब इनको मोह के फंदे में लाऊं मैं इन पर हज़ार जान से कुर्बान हूं।

गाना

जाऊं मैं कुर्बान आं आं आं ऐ जान, तुम्ही हो मेरे दीन और ईमान।
शर्म हया ने जुल्फ दुता ने तुमरी अदा ने किया मुझे घायल।
आंख मिलाले दिलको चुराले किया मुझे मायल॥ अय जान॥ जाऊं०

शेर—सोच कर आई थी क्या यह बन गया।
यह लगा तीरे नज़र सीने में बिस्मिल बन गया॥
यह तमाशा देख कर जां अक्ल हैरां है मेरी।
कत्ल कातिल होगया मकतूल कातिल बन गया॥
तुझपै निसार बार बार अय जान ज़ार॥ अयजान॥ जाऊं०

(एक तर्फ बैठ कर रौला मचाना और रोना)

वार्ता—हाय हाय अय ईश्वर तू ही मेरी मदद कर ऐसे जंगल वीरान में तूही मेरी मदद कर।

सीता का आकर हाल पूछना और अपनी साथ लाना

रामचन्द्र—ऐसे जंगल वीरान में तू अबला स्त्री अकेले कैसे फिर रही है।

चन्द्रनखा का गाना

विरहा की मारी हूं मैं। कन्या कुंवारी हूं मैं ॥

बनों के बीचमें आई थी जान देने को, न आया शेर कोई मेरी जान लेनेको।
गले में फांसी भी डाली थी जान देनेको, न भेजा हाय वह जमदूत जान लेनेको
देखो क्या गोरी हूं मैं। कन्या कुंवारी हूं मैं ॥ विरहा० ॥
जवानी जोश भरी दिलमें उमंग लाती है। लूटो अब इसका मजा वरना गुजरी जाती है
मद भरी कैसी बनी देखो मेरी छाती है। सीने से सीना मिले दिलमें यही आती है॥

तुमरी ही दुलहन हूं मैं ॥ कन्या कुंवारी० ॥
पिता तो छोड़ मरे पहिलेही मुझको प्यारे। न रहा मातका भी मुझको सहारा प्यारे
सोचको दूर करो दिलमें जगह दो प्यारे। अबतो चर्नों का तुम्हारेही सहारा प्यारे
कर्मों की मारी हूं मैं ॥ कन्या कुंवारी हूं मैं० ॥

वार्ता—अय मेरे प्यारे, आंख ऊपर को उठाओ और मेरे हुस्न को देख कर दिल बहलावो, शर्म हया दूर करो, और मुझ अभागनी को कबूल करो हैं हैं अर अर क्या मैं पसंद नहीं हूं, अफ़सोस, अफ़सोस, हजार हजार अफ़सोस, क्या मैं यहां से चली जाऊं अपने जीको और जगह बहलाऊं, और क्या तुम इन्सान हो, या हैवान हो, जो बोलना भी नहीं जानते, देखो मैं सच कहती हूं अब भी समझ जावो।

गाना

मेरा यहां से जाना यह तुम जान लेना।
बचेगी तुम्हारी न जां मान लेना ॥
यह बातें हंसी की नहीं मान लेना।
उपद्रव हो भारी यह सच जान लेना ॥
देखो मैं जाती हूं और तुम पर आफ़त लाती हूं।

(रौला मचाना)

हाय हाय कोई हो तो दौड़ो, मेरे पुत्र को तो माराही था, मेरा शील भी भंग करते हैं। मुझको तंग करते हैं। (जाती है)

रामचन्द्र—शैलै शैले नमाणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहीं सर्वत्रं, चंदन न वने वने॥

लछमन—कोकिलां नां स्वरोरूपं, स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्।
विद्यारूपं कुरूपाणां, क्षमारूपं तपस्विनाम्॥

तीसरा बाब-उन्नीसवां सीन

(दर्बार खरदूशन)

(सब दर्बारियों का मिल कर गाना)

गाना—कैसा मुख पै चमकै दमकै तुम्हरे ताज शहाना।
मिल जुल गुइयां शीश निवावो। चर्नों में अब ध्यान लगावो॥
अजब तराना सब मिल गावो। शीशी भर-भर प्रेम की लावो।
नापो नापो पैमाना॥ कैसा०॥

शेर

एक शख्स—शीशी भरी गुलाब की अग्नि से फूंक दूं।
टूटै अगर न इस तरह बिरहा से फूंक दूं॥

दूसरा कहता है—सागिर नहीं ला साकी मैं बेताब हो चुका।
देखो तो दिल मिला के मैं सीमाब हो चुका॥

तीसरा कहता है—सीमाब की तरह से तड़पना मुझे मिला॥
हंसने का मौका अय मेरे साकी तुझे मिला।
अय प्रेम कटोरा भरने को अब हाथ बढ़ाना॥ कैसा०।

एक दम रोने की आवाज़ सुन कर राजा का मुतहय्यर होना और राजा का सकते में होना

आवाज़—हाय हाय सितम हाय हाय ग़ज़ब हाय हाय यह क्या हुआ सितम टूटा, आस्मान फूटा, हां हां कुंवर का चोला छूटा।

ख़ौफ़ज़दा—अब राजन तेरी क़िस्मत का सितारा टूटा।

राजा का कुर्सी पर से खड़ा होना

वज़ीर—अरे क्या है क्या है क्या है कुछ मुंह से तो कहो।

ख़ौफ़ज़दा—अ······र रा······नी

आ······ती······है

रानी का आना एक दम सबका हाय हाय करना और रौला मचाना, और कुंवर के सर को रानी का मेज़ पर रखना रानी का रोते हुए क्रोध करना

चंद्रनखा—(रोकर) हाय हाय आज क़िस्मत फूटी, देखो दंडकबन में दो मनुष्यों ने मेरे पुत्र से सूर्य खड्ग हाथ से छीन कर मार डाला, और सर तन से जुदा कर डाला, ऐसे राज करने पर धिक्कार है, जो तेरे राज में मेरे पुत्र पर दो मनुष्यों को शस्त्र चलाने की हिम्मत हुई, खड्ग छीन लेने की जुरअत हुई, वह दोनों दंडकबन में अब तक बेख़ौफ़ बैठे हैं, और देखो काम चेष्टा करके मेरे तमाम शरीर को नोच डाला स्तनों को विदार डाला, मुश्किल से शील बचा कर यहां पर आई हूं, अब मैं अपने पुत्र के साथ अग्नि में प्रवेश करूंगी, अग्नि माता से फ़ैसला करूंगी।

(रानी का जाना)

राजा का ग़ज़ब नाक गुस्से में होना और मारने के लिये हुक्म देना; मंत्रियों का समझाना और रावण पर दूत पठाना

राजा—हां हां तो क्या मेरा खौफ़ नहीं खाया ।

शेर—खौफ़ से मेरे फ़रिश्तों का भी दम नाक में है ।
शोर है मेरा ये अब गुम बिदे फ़लाक में है ।

वार्ता—हाय हाय यह क्या हुआ क्या वह मेरे पुत्र का सर सन्मुख रक्खा हुआ है ।

(हाथ में सर लेकर)

अय राज दुलारे, आंखों के तारे किस्मत के सितारे, ज़िन्दगी के सहारे कुछ तो मुंह से बोल, दिल की घुण्डी खोल ।

शेर—किसने किया है कत्ल उस इन्सान पै हैरत ।
कैसा हुआ वह संग दिल इंसान पै हैरत ॥
क़ातिल बनी वह ही खड्ग इस ध्यान पै हैरत ।
आई हुई खोई गई अरमान पै हैरत ।

वार्ता—अय दुलारे आंखें खोल, कुछ तो मुंह से बोल, सज़ाये ज़ालिम शान तराज़ू से तोल, अय पुत्र अच्छा यही होता जो तू अपने हाथ से ज़ालिमों को जम का द्वार दिखाता ।

शेर—अब जो तू कहे पुत्र वही उनको सज़ा दें ।
हड्डी को चूर चूर के ड्योंढी में गड़ा दें ।

(बहादुरों की तरफ़ मुखातिब होना)

बहादुरो सब म्यान से तलवार निकालो ।
भागें न ताके जल्द चलो जान निकालो ॥
मर जां तड़प के तीक्षण वह बान निकालो ।
दोनों हुये घमण्डी अभिमान निकालो ।
चुकटी से खैंच २ के है खाल निकालो ।
जा करके दंडक बन में यह जंजाल निकालो ॥

वार्ता—अब बहादुरो जाओ, और दोनों का सर उतार लाओ।

बहादुर—अच्छा महाराज अभी जाते हैं और दोनों का सर उतार लाते हैं।

राजा—ठैरो ठैरो हमभी साथ चलते हैं, ।

मंत्री—महाराज हम कुछ अर्ज करना चाहते हैं।

शेर—अफ़सोस कुंवरा जी छुटे हाय हुवा कैसा गजब।
वाकई उन कातिलों को क़त्ल करना चाहिये ॥
हैं नहीं सामान्य वह अद्भुत पुरुष आये हुये।
इकले वहां पर नहीं है आप जाना चाहिये ॥
जिस खड्ग को कुंवर ने बारह वर्ष साधन किया।
वह किसी नारायन प्रति नारायन पै होना चाहिये ॥
बे परिश्रम के खड्ग जिन हाथ है आया हुवा।
उनसे लड़ने के लिये रावन बुलाना चाहिये ॥

राजा—अच्छा रावण पर दूत भेजो, और सब राजों को जल्द बुलावो,

मंत्री—अरे ओ दूत।

दूत—श्री महाराज।

मंत्री—देखो तुम बहुत तेज जावो, और रावण को शंभू के मारे जाने की खबर पहुंचावो, और कहो कि दो मनुष्य दंडक वन में आये हुये हैं जिन्होंने सूर्य्य खड्ग हाथ से छीनकर कुंवर का सर बिदारा है, सो आपको शीघ्र आना उचित है, भानजे का बदला लेना मुनासिब है ।

दूत—अच्छा महाराज अभी बुलाकर लाता हैं, और बहुत तेज जाता हूं,

मंत्री—और देखो वापसी में विराधित वगैरा राजाओं को भी हमराह लेते आओ।

दूत—अच्छा महाराज।

दूत का जाना राजा का कुछ देर सोच कर क्रोध में होना मारने के लिये जाना

राजा शेर—ना सहा तेरी नसीहत ने जिगर ठंडा किया।
दिलको क्या ठंडा किया खूंने पिसर ठंडा किया॥

वार्ता—अय शहज़ोरी जवांमर्दी कहां गई, अय शुजाअत दलेरी कहां गई अय खंजरे आबदार तेरी जुरअत कहां गई, अय मेरे बहादुरो तुम्हारी हिम्मत कहां गई, पुत्र का सर कटा देख रहे हो, और दूसरों का सहारा तक रहे हो,

शेर—सहारा ढूंढता वह है जो हो कायर ज़माने में।
विजय पाई है हरजा पर मैं हूं ज़ाहिर ज़माने में॥
बली मुझसा नहीं है आज कल कोई ज़माने में।
मदद मांगी है गैरों से अक़ल खोई ज़माने में॥
बताये ये पुरुष अद्भुत नहीं ऐसे ज़माने में।
बनाऊं मैं उन्हें कायर न हों जैसे ज़माने में॥
अय खंजर हाथ में आकर जौहर दिखला ज़माने में।
ले उनसे खून का बदला मज़ा दिखला ज़माने में॥

वार्ता—अय खंजरे खूंख्वार तू जब तक उनका सर न उतार लायेगा म्यान के अन्दर न आयेगा, अय बहादुरो मेरे साथ आवो, और अपने २ हाथ दिखलावो।

(सबका लड़ने के लिये जाना)

तीसरा बाब-बीसवां सीन

पर्दा दंडक वन

रामचन्द्र व लछमन व सीता का बैठे दिखाई देना, और मारो २ की आवाज़ सुन कर गुतहय्यर होना

आवाज़--अरे आवो आवो जल्दी आवो, देर न लगावो, सबके सब एक दम चले आवो।

सीता--अय प्राण पती यह कैसी आवाज़ आई।

रामचन्द्र--नहीं नहीं प्यारी कोई बात नहीं मालूम होती है स्वर्गों के देव नंदीश्वर जारहे हैं, और वह ही आवाज़ कर रहे हैं।

(एक दम बंदूकों का चलना)

आवाज़--अरे मारो मारो मारो, आवो आवो दोनों का सर उतारो, देखो कहीं भाग न जांय।

(सीता का डर कर रामचन्द्र से लिपटना)

सीता--हाय हाय यह तो कोई हमको ही मारने चले आरहे हैं।

रामचन्द्र--अय प्रिय मत घबराओ, मालूम होता है कि उस व्यभिचारणी स्त्री ने ही परपंच रचा है जिसका लड़का खड्ग से मारा गया है अब मैं जाता हूं, और सबको ठिकाने लगाता हूं।

लछमन--महाराज मेरे होते आप परिश्रम न कीजिये, मुझको लड़ने की इजाज़त दीजिये, और आप यहीं पर सीता सहित विसराम कीजिये।

रामचन्द्र--अच्छा भ्रात जावो, और विजय पाकर आवो, अगर कुछ सहायता की आवश्यक्ता हुई तो मुझे कैसे खबर होगी।

लछमन--महाराज मैं जिस समय सिंघनाद करूं शीघ्र मेरी सहायता करना, मुझपर कष्ट समझना।

रामचन्द्र—देखो सावधानी से काम लेना।

लछमन—अच्छा अब मैं जाता हूं, और उनका घमंड मिटाता हूं।

(लछमन जाता है)

रावण को विमान में बैठ कर आना और सीता को देख कर मोहित होना

तीसरा बाब-इक्कीसवां सीन
(पर्दा जङ्गल)

रावण का विद्या को याद करना, और सीता का हाल पूछना

रावण—अय क्या मैं चक्री नहीं हूं, या बलवान विद्याधर नहीं हूं, क्या मैं कामदेव रूपवान् नहीं हूं, नहीं नहीं मैं सब कुछ हूं, हां हां अलबत्ता नहीं हूं तो ऐसी स्त्री का प्राण पती नहीं हूं, जैसी कि आज मैंने दंडक वन में एक मनुष्य के साथ बैठी देखी है, अब जिस तरह होसके ऐसी चन्द्रमुखी स्त्री से संसर्ग करना चाहिये, वर्ना जीना मेरा नापाक है, जिन्दगी मेरी खाक है, अय प्यारी तेरी चितवन का यह दिल मुश्ताक है।

गाना—हाय कैसी नैनों ने मारी कटारी ॥ हाय०॥
हाय कैसा मारा जिगर में तीर ॥ हाय० ॥
हाय जानी, बनाऊं पटरानी, सतावे काहे मोरी जान्।
अब काहे को सतावे, जी तरसावे, कल्पावे।
हाय प्यारी, है सज धज तेरी न्यारी, सतावे काहे मोरी जान ॥कैसी०

वार्ता—करूं तो क्या करूं मालूम नहीं होता कि वह चन्द्रमुखी कौन है बस अब मैं अपनी विद्या को याद करता हूं और बुलाता हूं।

विद्या को याद करना और एक थम पर फूंक मारना थम का फटना विद्या का निकलना।

विद्या—अय रावण क्यों याद किया।

रावण—यह बतलाओ कि यह स्त्री चंद्रमुखीजो कि एक मनुष्य को साथ लिए दंडक बन में बैठी है। उसका क्या नाम है और यहां क्या काम है।

विद्या—अय रावण यह स्त्री सीता, और रामचन्द्र जो कि इसके पास बैठे हैं वह उसके भरतार हैं, और लछमन खरदूशन से लड़ने गया है और कह गया है कि जब मुझ पर कोई कष्ट आयेगा तो मैं सिंघनाद करूंगा, आप मेरी सहायता कीजिये।
बस और कुछ काम था ?

रावण—जाइये।

(विद्या का जाना, रावण का खुश होकर गाना)

मिला मुझको कैसा यह अवसर पियारा।
हुवा काम पूरन मैं जो कुछ विचारा॥
मुझे आते जाते किसी ने न देखा।
करूं दिलको कुर्बान तुझपै दिलारा॥ मिला०॥
गया लड़ने लछमन वहां रघुवर भी जाये।
करूं अब मैं सिंघनाद यह मन विचारा॥ मिला०॥
खरदूशन बलीसा नहीं राजा जगमें।
छिनक एक में उसने दोनों को मारा॥ मिला०

वार्ता—अहा! हा!! हा!!! क्या अच्छा मौका हाथ आया, रामचन्द्र और लछमन को तो खरदूशन अवश्य प्राण रहित करही देगा, मामला साफ होजायगा अब मैं सीता को लेजाऊं, लंका में जाकर ऐश उड़ाऊं लो अब मैं सिंहनाद करता हूं ताकि रामचन्द्र लछमन के पास जायें और मुझको सीता के लेजाने का मौका हाथ आवे,

(रावण का सिंघनाद करते २ चला जाना)

तीसरा बाब-बाइसवां सीन
(पर्दा दंडक बन)
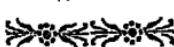
रामचन्द्र सीता का सिंघनाद की आवाज़ सुनकर व्याकुल होना रामचन्द्र का लछमन की सहायता को जाना और रावण का सीता को बिमान में बिठा कर ले जाना जटायू का मारा जाना

आवाज़—सिंघनाद

रामचन्द्र—हाय हाय ऐ ! भगवान यह कैसी आवाज़ आई, क्या कोई लछमन पर बिपत आई, अररर, फिर सिंघनाद की आवाज़ आई।

आवाज़—सिंघनाद, हायराम, हायराम, हायराम,

रामचन्द्र—अय लछमन सावधान रहो अभी आता हूं

सीता—अय ईश्वर यह क्या अशुभ कर्म उदय आया। जो वन में आकर भी एक छिन कल न पाया। अब कहां चले जायें, जो इस चोले को जाकर छिपायें, हाय !

शेर—बन बन हम इकले फिरें कोई नहीं गमख्वार है।
अय विधाता क्या किया क्या ग़म गले का हार है॥
मैं भी तुमरे संग हूं लूं हाथ में तलवार है।
इकले यहां रहना बगर मेरा बहुत दुश्वार है॥

रामचन्द्र—नहीं नहीं प्यारी दुश्मन के सामने स्त्री का लेजाना उचित नहीं है, इस लिये अय प्रिय मन में धीर्य धरो, और भगवान को याद करो, देखो तुमको इन पुष्प मालाओं में छिपाता हूं और जल्दी विजय पाकर आता हूं।

रामचंद्र का सीता को पुष्पमाला में छिपाना और जटायु को निगहबान बनाना

रामचंद्र—अय मित्र जटायू देखो स्त्री अबला होती है और यह वन अनेक उपद्रव का भरा हुआ है तुम सावधानी से इसकी खबर रखना देखो हम तुम्हारे भरोसे पर ही अपनी प्राण प्यारी को छोड़ जाते हैं,

जटायू—(सिर हिला कर मंजूर करता है, और चौकसी के लिए तय्यार हो कर बैठता है,)

रामचंद्र--(नाक के हाथ लगा कर, अररर, दाहना सुर चलता है, जिससे कि शगुन अच्छा नहीं मालूम होता।

(आवाज़ सिंघनाद)

हाय हाय राम इतनी देर कहां लगाई, जल्दी करो मेरी सहाई।

रामचन्द्र—बस बस अब सगुन अच्छे हों या बुरे भ्राता की सहायता करनी चाहिए, और वहां जाना चाहिए, अय जटायू होशियार रहना।

रामचन्द्र का बान और खड्ग लेकर लड़ने जाना, और रावण का आना

रावण—दिल छीन कर अय नाज़मी अब तू किधर गई।
मुझको किया बेचैन अय प्यारी किधर गई॥
हैं हैं किधर चली गई, अरे तो क्या यह पक्षी का रूप धारण कर लिया, नहीं नहीं नहीं, ऐसा नहीं हुआ जरूर कहीं यहीं मालूम होती है, अच्छा अन्दर पुष्प माला के जाकर देखूं।

रावण का अन्दर की तरफ जाना और पक्षी जटायू का एक दम हमला करना

रावण—अरे मूरख पक्षी तू क्यों अपनी जान खोता है, जा चला जा,

पक्षी—(फिर दूसरे झपटा मारना)

रावण—अरे भाग जायगा, अन्त को पछितायगा, जा दूर होजा ।

पक्षी—(चोंच मारना और हाथ में खून निकालना)

रावण-अरे इस पक्षी ने तो कमाल कर दिया, जो तमाम लाल २ कर दिया ऐसा न हो कि कभी इसका भरतार आजाये, तो सब करी कराई मिहनत मिट्टी में मिल जाये, अब इसके एक चपेट मारना चाहिए ताके यह प्राण रहित हो, और अपना मतलब सिद्ध हो ।

रावण का अन्दर को आना और पक्षी का मुकाबिला करना रावण का चपेट मारना. जटायू का सिसक कर गिरना

रावण—अब अन्दर जाकर देखूं जरूर सीता इसी में छिपी है।

रावण का अन्दर जाकर कांधे पकड़ कर सीता को बिमान में बिठा कर जबरदस्ती हरण करना।

सीता—हाय हाय हाय हाय, अय प्राणपती कहां चले गये, हाय अय लछमन तुम भी मुझ अभागिनी को अकेला छोड़ कर चले गये, देखो २ एक राक्षस वंशी मुझको उठाये लिये जाता है, अय प्राण पती मुझे आकर छुड़ाओ, इसके चंगुल से बचाओ, बचाओ, बचाओ, बचाओ ।

(रावण का सीता को उड़ा कर ले जाना)

ड्राप सीन का गिरना।

इति सीता-हरण

अथ लंका गमन चौथा परिच्छेद
पहला सीन-पर्दा जंगल

लछमन का खरदूशण की सेना से लड़ते दिखाई देना और विराधित का विमान में बैठ कर देखना फिर नीचे उतर कर लछमन को नमस्कार करना।

लछमन—अरे दुष्टो कहां भागे जाते हो, सामने आओ और अपना २ बल दिखाओ।

लछमन का तीरों की बौछार करना

देखो यह गिरा चित वह गिरा पट ।

सिपाहियों का गिरना भागना और दूसरे सिपाहियों का हमला करना।

सिपाही—अरे आओ आओ आओ सबके सब आओ, और एक दम चिपट जाओ,

लछमन— (शेर)—ले आओ मदद जल्द जाके अपने पीर से।
मारूं तमाम सैना को मैं एक तीर से॥

सब सिपाहियोंका कहना—अररर भागो भागो भागो यार यह मनुष्य नहीं है. कोई देव आया है भागो वर्ना खाया है।

सबका एक दम भागना विराधित का आकर लछमन के पैरों पर गिरना

लछमन—अरे भाई तुम कौन हो अपना परिचय दीजिए, मुझको संतुष्ट कीजिए।

विराधित—महाराज मैं चन्द्रोदय का पुत्र विराधित हूं आज खरदूशन से अपने बाप का बदला लेने आया हूं ।

लछमन—अच्छा कुछ भय न कर, मेरे पीछे खड़ा तमाशा देख ।

विराधित—नहीं २ महाराज मेरी सेना उसकी सेना से लड़ेगी, और आज मैं खरदूशन का सर उतारूंगा, अपने दिल को ठंडा करूंगा ।

लछमन—खैर अच्छा जैसा अवसर होगा ।

(रामचन्द्र जी का आना)

रामचन्द्र—क्या है क्या है भ्राता क्या है, मुझको क्यों बुलाया है ।

लछमन (लछमन का सर पकड़ना) —हाय हाय यह क्या गज़ब हुआ, मैंने तो आपको नहीं बुलाया, न सिंहनाद बजाया ।

रामचन्द्र—मैं तेरे सिंहनाद की ही आवाज़ सुन कर यहां पर आया प्रिय को वन में अकेली छोड़ आया ।

लछमन—यह आपने बहुत बुरा किया, अच्छा नहीं किया, जरूर किसी दुष्ट ने सिंहनाद करके आपको धोखा दिया, आप जल्द जाइये, और सीता महारानी के निकट पधारिये ।

रामचन्द्र—हाय हाय यह क्याधोखा खाया, मेरे दिल में यह क्या समाया देखिये इसका असर क्या होता है, अच्छा भ्राता मैं जाता हूं, देखो सावधानी से काम लेना ।

(रामचन्द्र का जाना)

खरदूशण का विमान में बैठ कर आना और विमान का टूटना

खरदूषण—अय पापी दुष्ट आत्मा आज मुझसे बच कर कहां जायगा । देख अब जमका द्वार दिखाऊंगा, मौत का मज़ा चखाऊंगा,

शेर—आज तेरी मौत आई है यह पापी जानले ॥

खून से खंजर रगा यह वचन सच मानले ।

शेर—आज तेरी मौत आई है यह पापी जान ले।
खून से खंजर रंगूंगा यह वचन सच मान ले॥
बेखता कुंवरा को मारा क्या बुरा नंग किया।
ठोकरें खायेंगी तेरी लहाश अब ये जानले॥
स्त्री कुच मर्दन किये तूने रे पापी बेहया।
आगया यमराज तेरे सरपै अब यह जानले॥

वार्ता—देख इस तीर से तेरा किस्सा तमाम होता है।

खरदूपण का तीर मारना—तीरका नाकामयाब होकर गिरना

लछमन—अरे मूढ़ क्यों वृथा गाज रहा है, देख सुन।

शेर—जिस खड्ग से दुष्ट सुन बेटा तेरा मारा गया।
उस खड्ग सेही समझ बस सर तेरा तारा गया॥

वार्ता—तेरा तीर नाकामयाब गया, और मेरा एक तीर तेरे विमान को टुकड़े २ करता है, जिसपर तू अभिमान का दम भरता है।

लछमन का तीर मारना विमान का टुकड़े २ होना खरदूपन का नीचे आना—विराधित का तीर से रोकना

विराधित—(तीर मारना) देख पहिले मेरा वार रोक।

खरदूपण—अरे मूर्ख क्या मेरा सेवक होकर मुझपर ही तीर चलाता है। कुछ भय नहीं खाता है।

शेर—गीदड़ के सहारे से तू अब बच नहीं सकता।
जब शेर तुझपै झपटेगा कुछ कर नहीं सकता॥

विराधित—अरे जा भागजा।

शेर—भागजा पाताल लंका से क्यों खोवे जानको।
वर्ना मारा जायगा अब छोड़दे अभिमान को॥
न्याय शास्त्र के विरुद्ध स्त्री हरी तूने गंवार।
फिर कहै उसको सती जाहिर किया अपमान को॥

रावण से डर कर भगा पाताल लंका में घुसा ।
क्या कहूं मैं पेट में था वर्ना लेता जान को ॥
बाप का बदला लेऊं पापी तेरा सरतार के ।
अपने वचनें का फिकर कर देखलूं अब भान को ॥

खरदूपन—अरे बेवकूफ़ मालूम होता है तेरी ज़बान बहक रही है, देख पहिले तेरे मददगीर को ही यमलोक भेजता हूं फिर तेरा सर उतारता हूं ।

(खरदूपण का लछमन से लड़ना)

खरदूपन—अरे पापी मेरा तीर संभाल ।

लछमन—अरे मूढ़ ऐसे ऐसे तीरों से क्या होता है, देख मेरा तीर संभाल

खरदूशन—अरे पापी तूने मेरे बेटे पर खड़ग चलाया, क्या मेरा भय नहीं खाया ।

लछमन—देख जिस खड़ग से तेरा पुत्र मारा गया है, वह ही खड़ग तेरा सर उतारती है, और तुझको यमराज का मज़ा दिखाती है ।

लछमन का खड़ग मारना और आवाज़ का होना खरदूशन का तड़प कर मरजाना

खरदूशन—अरे ज़ालिम तूने मुझको तो मारा ही है पर याद रख रावण तुझको न छोड़ेगा ।

पर्दे का आहिस्ता २ गिरना

चौथा बाब-दूसरा सीन
(पर्दा जङ्गल)

रावण का विमान में बिठा कर सीता को ले जाते दिखाई देना और रतन जटी भामंडल के सेवक का मिलना

सीता—अय मेरे प्यारे आओ आओ और मुझ अभागनी सीता को बचाओ अय लक्ष्मन तुमही मेरी सहायता करो, अय भाई भामंडल क्या तुम भी मुझको भूल गये।

रतनजटी—अय बहन सीता क्या है, घबराओ मत देखो मैं अभी इस राक्षस से तुमको बचाता हूं, अरे ओ राक्षस मुझ से बच कर तू कहां जायगा।

तीर का मारना—ले देख इस बान को देख।

रावण—(हंस कर) हैं हैं क्या दिखाता है, मैं तुझको अभी जम का द्वार दिखाता हूं, परन्तु क्या कहूं कुछ कहा नहीं जाता, बस तेरे लिए यह ही दंड है कि तुझको विमान रहित करता हूं।

रतनजटी के विमान का टुकडे २ होना रतनजटी का नीचे आना रावण का विमान उड़ा कर ले जाना।

रतनजटी—हाय अफसोस अफसोस यह क्या मैं कौन से टापू में आगिरा।

तर्ज कवाली

गाना—जाके यह जल्द खबर राम को देवे कोई।
लंका में जा के अभी सीता को लावे कोई॥
हाय इस पापी ने विद्या भी तो मेरी छीनी।
मेरी मजबूरी का जा हाल सुनावे कोई॥ जाके०॥
मुझको महाराज ने भेजा था खबर लेने को।

सिया हरने की खबर उनसे यह कहदे कोई ॥ जाके० ॥
गो कि रावन है बली जान तक मैं दे देता ।
दिल के दिल में ही है अर्मान न निकला कोई ॥ जाके०॥
कां मैं हूं कौन हूं कौन जजीरा टापू ।
यहां पै वे मौत मरा आके जिलाये कोई ॥ जाके० ॥

वार्ता—हाय कहां जाऊं क्या खाकर मर जाऊं, अय भामंडल तुझको क्या हाल सुनाऊं बस बस अब मैं मजबूर हुआ इस जिन्दगी से तंग हुआ ।

चौथा बाब-तीसरा सीन
(पर्दा दंडक बन)

रामचन्द्र का आना-और सीता को न देख कर अफ़सोस करना

रामचन्द्र—हाय हाय यह क्या होगया ।

तर्ज-सोहनी

गाना—है नहीं सीता यहां पर हाय यह क्या होगया ।
उड़गया यहां से जटायू हाय यह क्या होगया ॥
प्यारी सीता कहां छिपी तू जल्द आकर दर्श दे ।
सबके सब यहां से गये तुम हाय यह क्या होगया ॥ है नहीं० ॥
पत्ती तो नादान था बेशक उड़ा आसमान को ।
तुझमें तो प्यारी समझ थी हाय यह क्या होगया ॥ है नहीं० ॥
जल्द बचनालाप कर अरु लब हिलाकर बात कर ।
छोड़दे मुझसे हंसी तू हाय यह क्या होगया ॥ है नहीं० ॥
इस समय तेरी हंसी यह दुख का कारण होगई ।
मुझको तो धोखा लगा था हाय यह क्या होगया ॥ है नहीं० ॥

वार्ता - हाय हाय यह क्या मुझको सन्नाटा चढ़ा आता है, कलेजा मुंहको आता है, अय प्यारी सीता क्या न अजका होकर कहाँ चली गई जो मुझको छोड़ दिया रिश्ता प्रेम तोड़ दिया।| हैं हैं यह क्या तिलिस्मात है देखूं तो मेरी प्यारी मेरा कहां छिप कर तमाशा देख रही है।

रामचन्द्र का पुष्प माला के अन्दर जाना और जटायू को सिसकता देखना

रामचन्द्र हाय हाय गजब हाय हाय सितम (हाथ मलना) जरूर कोई दुष्ट हर कर लेगया, जो जटायू को भी नवेंदम कर गया, अब जटायू को नमोकार मंत्र देना चाहिये ताकि इसकी शुभ गति हो, अब जटायू देख ध्यान लगाकर सुन मन में पंच परमेष्टी का ध्यान धर किसी प्राणी मात्र से बैर भाव क्लेश भाव मित्र भाव न कर, समता भाव धारण कर, देख यह तेरा अंतिम समय है अगर अच्छे भाव से चोला छुटेगा तो शुभ गति मिलेगी तूने इस जटायू की जून में बहुत दुख सहन किये हैं, जो मैं तुझको नमोकार मंत्र सुनाऊं उस पर खयाल कर ध्यान धर

रामचन्द्र का नमोकार मंत्र देना जटायू का मर कर स्वर्ग लोक जाना

रामचन्द्र—अय जटायू अय जटायू क्या प्राण रहित हुआ तो क्या दुनिया से कूंच कर गया।

शेर—इन्द्र कैसे आलमत हाय क्या तमाशा होगया।
अय दिलें बेताब कैसा बेतहाशा होगया॥

(रामचन्द्र का क्रोध करना तीर का चढ़ाना आवाज़ का होना)

रामचन्द्र—अरे ओ पापी सीता के हरने वाले जटायू के मारने वाले, देख अब मेरे सामने आ, आंख मिला, अपने जौहर दिखा।

शेर – क्या मेरे इस तीर को जाना नहीं तूने गुलाम ।
वंस को मैं नष्ट करदूं प्राण लेलूं बद कलाम ॥

वार्ता – हैं हैं इस तीर के छोड़ने से भी कुछ मतलब सिद्ध न हुवा बल्कि तमाम जंगल के जानवरों को परेशान किया । यह मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे अशुभ कर्म उदय आये हैं जो मुझको ये दुख दिखाये हैं परन्तु क्या करूं धैर्य नहीं आता, शरीर तमाम विखरा जाता है, सर चकराता है, अय प्यारी सीता अय प्यारी सीता अय प्यारी सीता आवो आवो देर न लगावो, इस दिले बेताब को समझावो, हाय हाय जवाब तक नदारद ।

गाना

सिया किस धाम गई मुझसे बतादे कोई ।
दर्शने जानकी इकबार दिखादे कोई ॥
जानकी जो न मिली जी से गुज़र जाऊंगा ।
प्यारी का जल्द मुझे हाल बतादे कोई ।
हाय लछमन भी गया रण में अकेला लड़ने ।
मौत आती है नज़र प्राण बचादे कोई ॥
बनों के वृक्षो सुनो मुंह से तो मुझसे बोलो ।
कौनसी सिम्त गई यह ही बतादे कोई ॥

वार्ता—(बेखुद होकर) अय प्यारी सीता अय प्यारी सीता, अहा वो हंस रही है बैठी रहना मैं आता हूं (जाना हाथ लगाकर) हाय हाय यह तो एक पत्थर का निशान है मुझको यह क्या होगया मेरा कहां ध्यान है ।

गाना

सिया हाल कहो आके ।
सुनो सुनोरे बनके दरख्तो, सुनो मेरी फर्याद
कहां गई वह मेरी दिलशाद, मैं हूं हैरान, हुवा बरबाद, हां हां हां ॥सिया०॥
सुनो सुनोरे बनके पखेरू, क्यों हुये मगरूर
कहां गई वह रश्के हूर, मैं हूं मजबूर, हां हां हां ॥ सिया० ॥

वार्ता—अय प्यारी सीता अय प्यारी सीता, अय प्यारी सीता, आवो २ मुझे अपना दर्श दो, वर्ना यह शरीर मिस्ल पारा हुवा जाता है। हाय प्यारी, हाय प्यारी।

(गिरकर बेहोश होना)(लछमन का आना संभालना)

लछमन—हाय यह क्या धोका हुवा; अय भ्राता होश में आवो। भ्राता भ्राता यह क्या बेहोशी है, होश में आवो, और तबियत न घबरावो।

रामचन्द्र—हा क्या लछमन विजय पाकर आगया।

लछमन—हां हां भ्राता आगया, यह क्या हाल है, क्यों इस कदर मलाल है

रामचंद्र गाना (लछमन के गले में हाथ डालकर)

तर्ज—(सोहनी)

भ्राता बताओ तो सही वह मेरी प्यारी कहां।
वन वन फिरा मैं ढूंढता हाय वह मेरी प्यारी कहां॥
गर ना मिली तो मैं जान दूं और इस शरीर को त्याग दूं।
जीना मुझे भाता नहीं हाय वह मेरी प्यारी कहां॥
हाय जटायू भी मरा मृतक है वह देखो पड़ा।
मारा उसे किस दुष्ट ने हाय वह मेरी प्यारी कहां॥
हर कर उसे कोई ले गया कैसा मुझे दुख देगया।
मर जाऊं छाती पीट कर हाय वह मेरी प्यारी कहां॥
उसका पता जो लायेगा मुंह मांगा मुझसे पायेगा।
अहसां को मैं भूलूं नहीं हाय वह मेरी प्यारी कहां॥

लछमन गाना—तर्ज चले सियाराम लखन बन को० ॥

धैर्य मत तजो मेरे भ्राता सिया को ढूंढ अभी लाता॥
मुझ से बच कर जायेगा, कहां पापी नादान।
कसम भ्रात तेरी मुझे, ले लूं उसकी जान॥
किये की सजा अभी पाता॥ धैर्य मत० ॥

न्यौछावर तन मन करूं, तुम पर अपना भ्रात।
तुमरे जी जीवन मेरा, समझो यह ही बात ॥
लखन के तुमही पितु माता ॥ धैर्य मत० ॥

आवाज़ का आना रामचंद्र जी का पूछना

रामचन्द्र—अय लछमन, यह आवाज़ कैसी आई। क्या किसी शत्रु ने फिर की चढ़ाई।

लछमन—नहीं नहीं महाराज यह मेरा मित्र विराधित विजय पाकर आ रहा है।

विराधित का आना रामचन्द्र के पैरों पर गिरना

रामचन्द्र—अय लछमन इनसे कैसे मित्रता हुई।

लछमन—महाराज आगे इसका पिता ही पाताल लंका का राजा था परन्तु यह दुष्ट खरदूशण जो आज मरन को प्राप्त हुआ, रावण की बहिन चन्द्रनखा को हर कर, और रावण से डर कर इसके पिता को मार कर पाताल लंका में आ घुसा, जिस का बदला आज विराधित ने उसकी सेना और उससे लिया।

रामचन्द्र—हाय प्यारी सीता, हाय प्यारी सीता, तुझको कहां पाऊं, कौनसा कारण बनाऊं, या गला घोट कर मर जाऊं।

गले को घोटना

लछमन—हाय हाय भ्राता यह क्या करते हो संतोष धारन कीजिये, अय विराधित।

विराधित—हां महाराज।

लछमन का गाना

है रामचन्द्र का हाथ लखन के जीना है जब तक।
यह हो पित माता मेरे, यह ही सज्जन भ्रात।

इनके मोह में लखन ने, छोड़ी गोनों प्रान।
न ऐसा दुख पाया अब तक लखन के जीता है जब तक ॥ हे राम० ॥
भाइयों के संग भ्रात के मेरे भी हैं प्राण।
गर सदमा इनको हुआ, खोदूं अपनी जान,
सदमें यह जांव सहूं कब तक ॥ लखन० ॥

विराधित—महाराज ऐसे धीर वीर होकर न घबराइये।

गाना—खबर सीता की मैं इस दम मंगाऊं, नहीं अब एक मिनट की देर लाऊं
जो हो आस्मान में छिन भर में लाऊं, जमीं को फाड़ कर पाताल आऊं।
बहादुर लोग मेरे यहां हैं ऐसे, विमानों को उड़ावें इन्द्र जैसे।

वार्ता—अब बहादुरो आओ, सीता महारानी की खबर लावो, कि कौन दुष्ट आत्मा उनको यहां से ले गया, और देखो मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं जो खबर सीता की लायेगा, उसको राज गद्दी बिठाऊंगा।

बहादुर—बहुत अच्छा महाराज अभी जाते हैं, सीता महारानी की खबर लाते हैं।

(सब बहादुरों का जाना)

मसखरापन करना

विदूशक—हैं हैं राज गद्दी, अरे राजगद्दी, इसको सुन कर तो मुंह में पानी भर आया, सीता की खबर एक मिनट में लाया।

विराधित—अब पाताल लंका चलिये वहीं पर आराम कीजिये क्योंकि खरदूशण के मरने की वार्ता सुन कर तमाम विद्याधर क्रोध को प्राप्त होंगे, और बहुत मुमकिन है जो रावण या हनुमान या सुग्रीव आकर संग्राम करें, इस समय आपका चित्त प्रसन्न नहीं है इसलिये पाताल लंका जाना उचित है।

लछमन—बहुत मुनासिब है (रामचन्द्र की तरफ़ मुखातिब होकर) चलिये महाराज चलिये।

रामचन्द्र—हाय प्यारी सीता की कोई भी खबर न लाया, और न हवा से ही सीता का चिन्ह पाया। अय प्यारी सीता अय प्यारी सीता

(तीनों का पाताल लंका चला जाना)

पांचवां सीन-चौथा बाब
प्रमोदनामा वन-अशोक वाटिका

रावण को सीता से राग भाव करना डराना धमकाना

रावण गाना—अय प्यारी नैन रसीलों से अब मारो खंजर तान।
यह तन मन तोपै वारूं सगरा बोलो मेरी जान ॥

सीता गाना—जारे पापी दुष्ट यहां से क्या बकता नादान।

रावण—किसी ने दुष्ट कहा नहीं मुझको तू कहले मेरी जान ॥ अय० ॥

सीता—मुझको बहन समझ मन पापी क्यों खोता है मान।

रावण—बहन भाई का रिश्ता कैसा मार कटारी बान ॥ अय० ॥

सीता—आह से मेरी भस्म होय जा राज पाट इस आन।

रावण—पटरानी मैं तोहे बनाऊं दिल में ले यह जान ॥ अय० ॥

सीता—राम लखन अन्याई तेरे ले लें छिन में प्रान।

रावण—दोनों की मैं जान लेऊंगा मारूं एक ही बान ॥ अय प्यारी० ॥

सीता वार्ता—अरे दुष्ट महा नीच यहां से दूर हो।

रावण का गाना—आहा प्यारी तेरी अदा ने सताया।
आंख मिलाले, दिलको बहलाले, उनको दे मनसे
भुलाया ॥ आहा० ॥

शेर—अब उनकी याद को तू दिल से भुलादे प्यारी।
मिलना उनका नहीं आसान सुनो अय प्यारी ॥
वह भूमगोचरी विद्याधर हूं मैं सुन प्यारी।
दिले बेताब को पहलू में बिठाले प्यारी ॥
आह देख चिन्तामनी हाथ आया ॥ आहा प्यारी० ॥
गिर कैलाश को उंगली पै घुमाया मैंने।
इन्दर राजा को भी नीचा ही दिखाया मैंने ॥

चक्रवर्ती हूं मैं नाम यह पाया मैंने।
स्त्री की नथनी में भी तीर चलाया मैंने॥
शाहा मुझ से देवों ने भी खौफ़ खाया ॥ आहा प्यारी० ॥
सोने के लंक पनी की तू कहावे रानी।
आठ दस सहस्त्र तुझे आय कहें पटरानी॥
महलों में हुक्म करो ऐश करो मन मानी।
लाऊं जाकर अभी मैं ग्रहन करो जल पानी॥
आह तेरे मनका न मैं पार पाया, ॥ आह प्यारी० ॥

सीता गाना

अरे पापी हया तुझको नहीं है, चाह पटरानी की मुझको नहीं है॥
सुनाई तेरे मज़लूमाने नहीं है, तू अन्याई हुआ न्याई नहीं है।
आठ दस सहस्र रानी तेरे मुख्य, और तिसपर भी तू संतोषी नहीं है।
तू अपने को कहे है चक्रवर्ती, अरे पापी तू इस लायक़ नहीं है॥
लखन और राम तेरा सर उतारें, इस सर को तू समझ सर पर नहीं है।

रावण गाना

कहना ले यह मान, "जानकी० कहना ले यह मान।
पिशु समान मलूं चुटकी से, क्यों खोवे उनकी जान ॥ जानकी० ॥
राम लखन बन २ फिरें मारे, सुन तू चतुर सुजान।
अद्भुत मारूपी विद्याधर, करता फ़िदा है जान ॥ जानकी० ॥
टेढ़ी भृकुटी मेरी होने से अंधकार हो जहान।
उनकी तो कुछ असल नहीं है मारूं खंजर तान ॥ जानकी० ॥
मेरी भुजा अवलम्बन कर तू तज दे शोच महान।
राक्षस नाम वंश का मेरे मन मोहे उत्तम जान ॥ जानकी० ॥

सीता का गाना—मेरी आह का यह असर देख लेना।
कि सर से जुदा अपना तन देख लेना॥
तड़पेगी अभी जान खाके कटारी।
नरक और निगोद अपना घर देख लेना ॥ मेरी० ॥

शेर—शक्ल को अपनी छिपाले दूर हो दुष्ट आत्मा।
करनी अपनी का नरक फल पायेगा दुष्ट आत्मा ॥
आह से मेरी अभी तू खाक स्याह होजायगा।
मत जली को तू जलावे दूर हो दुष्ट आत्मा।
प्राण के मालिक हुये इस भव में मेरे रामचन्द्र।
तू बके उल्टी जबां खैंचूं तेरी दुष्ट आत्मा!

रावण का क्रोध करना

शेर—इस जबां ज़ोरी का मैं तुझको मज़ा दिखलाऊंगा।
मुझ में गुन क्या २ भरे हैं तुझको अब बतलाऊंगा ॥
सांप बिच्छू मिलके अब मिट्टी करें बरबाद सब।
फैंक दूं तुझको मसां में चोंच मारें कव्वे जब ॥
करनी अपनी का तभी तुझको मज़ा मिल जायगा।
देख कर मुझको तेरी हालत सबर आजायगा ॥

सीता का गाना

अरे पापी ये धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का खौफो खतर ही नहीं।
मुझे मारेगा क्या अपनी जान बचा इस बात की तुझको खबर ही नहीं ॥
क्या तू विद्या का अपनी गुमान करे और सोने की लंका पै मान करे।
मैं क़सम अपने प्यारे की खाके कहूं मेरे सामने मिट्टी का घर ही नहीं।
अब शंका को दिल से दूर करूं, परमेष्ठी का मन में ध्यान धरूं।
मेरे मन का समेरू हिलावे कोई, ऐसा दुनिया में कोई बशर ही नहीं।

रावण—अच्छा अब तेरे मन का समेरू देखता हूं तैयार हो जा।

सीता—अरे नीचों के नीच यहां से दूर हो जा।

रावण—चुप हो जा मानले।

सीता—अरे पापी अपना काल आया जानले।

रावण—तू मारी जायेगी।

सीता—मुझको मुक्ती होजायगी।

रावण—अजब ज़बान ज़ोर है तू।

सीता—चोर और सीना ज़ोर है तू।

रावण—अच्छा २ देख इस हठग्राही का लुत्फ़ देख अब मेरे बहादुरो आओ और अपना २ डर दिखावो।

परदे का फटना, आवाज़ का होना और बहुत से राक्षसों भूत पिशाच का आना, सीता को डराना धमकाना अन्त को हार मान कर चले जाना

सब राक्षस मिल कर गाते हैं

गाना—खावो २ सब मिल खाओ तनक न लागे देर।
भाग न जाये बच कर हमसे चारों ओर ले घेर।
हमको हुक्म दिया, स्त्री है बेहया, शरण नहीं लिया।
डरपाओ अब जिया।
आओ २ जल्दी आओ करो न हेरा फेर॥ खावो खावो

नाचना कूदना सीता के चारों तरफ़ कूदना

पहिला—ईं ईं ईं ईं खाऊं खाऊं खाऊं

दूसरा—जलाऊं जलाऊं जलाऊं।

तीसरा—उठाऊं उठाऊं उठाऊं।

चौथा—मारूं मारूं मारूं

पांचवा—अरे सांपो भक्षण कर जावो।

छटा—(मुंह से आग निकाल कर) आईं तुझको खाऊं। बहुत भूक लगी है। आज खाना नहीं मिला है। अरे यह इसके मुंह पर तेजस्वी चमक कैसी है। जो नज़दीक नहीं आने देती है

अवश्य यह कोई सती है। अब हम लोग हैरान हैं। क्या करें अब हमको महाराज से कहना चाहिये। महाराज।

सब राक्षसों का मिलकर कहना रावण का आना

महाराज—महाराज

रावण—क्या है।

राक्षस—महाराज बहुत डर दिखाया, परन्तु सीता ने भय न खाया, अब हमको आज्ञा हो।

रावण—अच्छा जाओ।

द्वारपाल का आना

द्वारपाल—महाराज, राजा विभीक्षण आरहे हैं।

रावण—अच्छा आने दो।

द्वारपाल का जाना और विभीक्षण और मारीच मंत्री का आना

विभीक्षण—शोक महाशोक खरदूषण मरन को प्राप्त हुवा। और विराधित पाताल लंका का राजा हुवा।

रावण—अवश्य बुरा हुवा।

सीता का रंज करना बिभीक्षण का हाल पूछना सीता का गाना

तर्ज—सोहनी

छोड़कर मुझको गये हाय मैं तड़फती रहगई।
रोना सुन २ कर मेरा बारिश बरसती रहगई॥
छोड़कर मुझको अकेली चलदिये स्वामी कहां।
रो रो के मैं रोका प्रभू दामन झटकती रह गई॥ छो०॥
एकली छोड़ी मुझे मन से भुलाया प्रेमको।
प्रेम रस आंखों से हा, आंसू टपकती रह गई॥ छो०॥

वंदीग्रह में हूं पड़ी बेड़ी हैं मेरे हाथ में।
दर्श दो आकर के हा, आंखे तरसती रह गई ॥ छो० ॥

वार्ता—अय प्राण प्यारे क्या मुझको भूल गये। अय मेरे भाई भामंडल मुझको यहां से निकालो। अय लच्मन तुमही मेरी सहायता करो अय मेरे प्राण प्यारे आवो आवो आवो और मेरे शील को बचावो।

बिभीक्षण का पूछना

शेर—कौन मजलूमा है ये क्या दुख भरी फ़रियाद है।
शोक को परघट करे क्या दुख भरी फ़रियाद है॥
ऐसी स्त्री पर मेरे राजन दया रक्खा करो।
बख्श दो इसकी खता क्या दुख भरी फ़रियाद है॥
है सती अपने पती को याद करती दम बदम।
संग भी तो मोम हो क्या दुख भरी फ़रियाद है॥

वार्ता—अय बहन तू कौन है। जो इस तरह ज़ार बेज़ार है।

सीता वार्ता—अय भाई मेरा नाम जानकी, राजा जनक की पुत्री रामचन्द्र मेरे भर्तार राजा दशरथ मेरे ससुर और लछमन मेरा देवर सो खरदूषन से लड़ने को गया, उसकी सहायता को मेरा भर्तार रणभूमि में मुझको इकली छोड़कर चला गया, इस दुराचारी कुशीले ने मुझको हर कर यहां ला बिठाया, अय भाई यदि तू वात्सल्य अंग का धारी है तो शीघ्र ही मेरे भर्तार रामचन्द्र से मिलावो, देर न लगावो, नहीं तो मेरा प्राणपती मेरे बिना प्राण रहित होगा, हाय हाय मेरा कहीं ठिकाना न होगा।

बिभीक्षण—बहन संतोश धारन कर।

रावण की ओर मुखातिब होकर कहना

बिभी० गाना—अय राजन् है यह पर स्त्री दया कीजे दया कीजे।
असर नहीं आहे का अच्छा दया कीजे दया कीजे॥

(महाराज ने फरमाया था)

उचित जो वार्ता देखो वही आकर कहो हमसे ।
भयंकर सर्प पर नारी दया कीजे दया कीजे ॥ अय० ॥
हमारे कुल की मर्यादा सभी है आपके ऊपर ।
करो यश बेल की रक्षा दया कीजे दया कीजे ॥ अय० ॥
हैं चक्री आप महाराजा व विद्याधर महेश्वर हो ।
रक्खो अब शील को कायम दया कीजे दया कीजे ॥अय०॥
यह पर नारी है पर वस्तू इसे यहां से अलग कीजे ।
जहां हैं राम वहां भेजो दया कीजे दया कीजे ॥ अय ० ॥

रावण—आहा अरे भाई यह पर वस्तू कैसी संसार में जो अच्छी वस्तू हैं उनका मैं स्वामी हूं आइये २ मुझको और भी कुछ कहना है ।

(रावण विभीक्षण का जाना)

मारीच – देखिये ऐसे ज्ञानवान विद्वान रावण की कैसी बुद्धि भ्रष्ट हुई है पर स्त्री का लंपटी हुआ, ज्ञानवान् पुरुष सवेरे उठते ही अपनी कुशल मनाते हैं । देखिये क्या होता है ।

(मारीच जाता है पर्दा गिरता है)

विभीक्षण का दर्बार (मय मंत्रियों के दिखाई देना)

पर्दा दीवानखाना-छठा-सीन

विभीक्षण गाना – सब ऊंच नीच समझाया जी ॥ लाखन बार० ॥
लाख कही मोरी एकहु न मानी, समझकर पछताया जी ॥लाखन बार०
राजा तो भ्रष्ट भया, कुमता से नेह किया ।
यह भटक भटक भव पाया जी ॥ लाखन बार० ॥

वार्ता—अय मंत्रियो राजा की जब यह दशा है तो अपने को क्या करना उचित है, अपने २ भाव प्रगट करो ।

संभिन्न मंत्री—शेर

हमको यह बिगड़ी दशा आती नज़र है आज कल।
वह सितारा तेज का मानो छिपा है आज कल।
रावण की दाहनी भुजा खरदूषण भी तो मारा गया।
पाताल लंका का हुआ राजा विराधित आज कल।
जिस खडग को शंभु ने बारह वर्ष साधन किया।
सहज ही में लखन को वह सिद्ध हुई है आज कल।
ज़ोर से सेवक हुये हैं सब यह बानर वंसियां॥
है नहीं इनका यकीं शत्रु बनें यह आज कल।
है नहीं यह न्याय रावण ने जो पर स्त्री हरी।
पाप की अंगारी लंका में लगाई आज कल।

पंचमुखी—बुज़दिली की बात क्या मुंह से निकाली आज कल।
शूरवीरी मानो लंका से निकाली आज कल॥
एक खरदूषन मरा रावण का क्या कुछ घट गया।
सैकड़ों खरदूषन से सेवक हुये हैं आज कल॥
वह विराधित आनकर पाताल लंका क्या घुसा।
मौत उसके सर पै गूंजे है यह समझो आज कल॥
गर खड़ग इक सिद्ध लछमन को हुई तो क्या हुवा।
ऐसी विद्या सैकड़ों राजा पै हमरे आज कल॥
सैंकड़ों स्त्री हरें राजों का यह कर्तव्य है।
क्या बुरा उसने किया सीता हरी जो आज कल॥
तीन खंड की अच्छी वस्तु का है वह स्वामी बना।
फिर किसे अधिकार जो सीता को रक्खे आज कल॥

सहस्रमती—यह क्या अर्थ हीन वार्ता करते हो।

शेर—जिसमें स्वामी का भला हो काम करना चाहिये।
माया मई चारों तरफ़ इक कोट रचना चाहिये॥
बाहर की शय अंदर न जा न अन्दर की बाहर आसके।
चारों दिशा माया मई चौकी बिठाना चाहिये॥

याद में सीता के रघुवर भी मरन को प्राप्त हों।
एकले रहते हुये लछमन न बचना चाहिये॥
जब यह दोनों ही मरें सीता भी लंका में रुकै।
फिर विराधित खुद ही वहां से भाग जाना चाहिये॥

वार्ता—कहिये २ महाराज क्या आज्ञा है।

विभीखण—हां हां यही करना उचित है माया मई जोधान को बुलावो और उनको अच्छी तरह समझावो।

मंत्री—अय द्वारपाल।

द्वारपाल—श्री महाराज।

मंत्री—देखो माया मई जोधान को बुला लावो।

द्वारपाल—अच्छा महाराज अभी बुलाये लाता हूं।

(द्वार पाल का जाना माया मई जोधान का आना)

मायामई जोधा—कहिये महाराज क्या आज्ञा है।

मंत्री—देखो लंका के चारो ओर पृथ्वी से गगन तक मायामई कोट रचो और चारोंही तरफ अपनी २ चौकी रक्खो बाहर का कोई मनुष्य अन्दर न आसके न अन्दर का बाहर जा सके।

जोधा—बहुत अच्छा महाराज ऐसाही होगा जो लंका में प्रवेश करेगा अपनी जिंदगी से हाथ धोयेगा।

(जोधावों का जाना)

पर्देका गिरना

चौथा बाब (सातवां सीन)

पर्दा जंगल

(सहस्त्र मती विद्याधर का सुतारा की याद में आना)

सहस्त्रमती—सुतारा सुतारा अय प्यारी सुतारा।

गाना—बचपन ही से शैदा हुवा हैं दिल पर सुतारा।
बेचैन हुवा याद में अय प्यारी सुतारा॥
बारह बरष में सिद्ध भई बैतालनी विद्या।
क्या क्या न परिश्रम सहे अय प्यारी सुतारा॥
दुनिया में कोई शयन हो तुझसी नज़र पड़ा।
करदूं निसार जिंदगी अय प्यारी सुतारा॥
तेरे पिता ने हक़ मेरा सुग्रीव को दिया।
सुग्रीव का ही रूप धरूं प्यारी सुतारा॥
जाकर के उस के राज में अब राज करूं मैं।
सुग्रीव को तहे तेग करूं प्यारी सुतारा॥

वार्ता—आहा क्या अवसर हाथ आया बैतालनी विद्या से सुग्रीव का रूप धारन करूं और उसके राज में जाकर दर्बार करूं।

सहस्त्र मती का जाना—पर्दे का गिरना

चौथा बाब-आठवां सीन-दर्बार सुग्रीव

(नकली सुग्रीव का तख्त शाहा पर बैठे दिखाई देना)

रामशगर्दियों का गाना—तन मन धन-सब राजन तुम पर वारना जी।
तुम तो हो सरताज हमारे, हम सब हैं प्रभु दास तुम्हारे॥
गुन बरनन करें कहां तक, तुमरे पारना जी॥ तनमन॥

विराधित-शेर—मुझ गदा को राज के काबिल बनाया आपने ।
राई को मानिन्द परवत कर दिखाया आपने ।
जर्रे को ताकत नहीं जो आसमा तक दे चमक ।
सूर्य के संसर्ग से देता है वह कैसी दमक ॥

द्वारपाल—श्री महाराज की जय हो द्वार पर कहकन्दापुर के महाराजा सुग्रीव खड़े हैं सो आपसे मिलना मांगते हैं ।

विराधित—अरे कहकन्दापुर के महाराजा सुग्रीव और मैं तुच्छ चंद्रोदय का पुत्र विराधित—वह कहां और मैं कहां । किसी कवीने सच कहा है ।

दोहा—रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल ।
सबही जानत बढ़त हैं, वृक्ष बराबर बेल ॥
लघू बड़ेन के साथ में, पदवी लहत अतोल ।
पड़े सीप ज्यों जलद जल, मुक्ता; होय अमोल

वार्ता—अय द्वारपाल महाराज को बाइज्जत ले आओ ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज ।

द्वारपाल का जाना सुग्रीव को लेकर आना विराधित का आदर करना बग़लगीर होना और सुग्रीव का रामचन्द्र के पैरों पर गिरना ।

सुग्रीव—(हाथ जोड़ कर रामचन्द्र की तरफ मुखातिब होकर) महाराज को नमस्कार है नमस्कार है नमस्कार है बल्कि आपको बारम्बार नमस्कार है । (चरनों को छूना)

रामचन्द्र—अरे सुग्रीव यह क्या करते हो कहिये कहिये अपनी क्षेम कुशल सुनाइये ।

सुग्रीव-शेर—दर्द दिल में क्या कहूं हाय किसको मेरा दर्द है ।
दर्द को लिख कर के जिस पहलू से उलटो दर्द है ॥

वार्ता—श्री महाराज मेरा दर्द मेरा मंत्री बयान करेगा ।

मन्त्री-गाना—इसी सूरत का इक सुग्रीव है बनकर आया ।
यही नक्शा है यही रूप वह धरकर आया ॥

(सब दर्बारियों का कहना)

असली सुग्रीव—अरे चांडाल आ आ शीघ्र आ तुझ को मौत का मजा चखाऊं जम का द्वार दिखाऊं।

नकली सुग्रीव—ठहर ठहर आता हूं और तुझ को नकली सुग्रीव बनने का तमाशा दिखाता हूं।

(दोनों का आपस में झपटना)

मन्त्री—महाराज ठहरिये ठहरिये।

असली सुग्रीव—अरे ज़ालिम खबरदार जो सिंघासनपर पैर रक्खा मेरे सामने आ और अपना बल दिखा देख देख मेरे वार को देख।

(तलवार लेकर झपटना—मन्त्री का रोकना)

मन्त्री—ठहरिये ठहरिये महाराज कृपा कीजिये, हम सब को सोचने का मौका दीजिये। (सब मंत्रियों का गाना)

करें तो क्या करें भगवन हमारी हर तरह मुशकिल।
है दो पाटों के बीच में जां हमारी हर तरह मुशकिल॥
न देखा और न सुना था हमने अबतक माजरा ऐसा।
कहें हम किस को अब राजा हमारी हर तरह मुशकिल॥
हैं एकही रूप में दोनों बने सुग्रीव महाराजा।
नहीं कुछ ध्यान में आता हमारी हर तरह मुशकिल॥
महारानी जो फुंवरा भी यहां पर आज हैं तिष्टे।
राय इनकी ही लो पहले हमारी हर तरह मुशकिल॥

मन्त्री-वार्ता—महारानी जी आप भी अपने भाव प्रगट कीजिये और असली नकली सुग्रीव का पर्दा दीजिये।

नकली सुग्रीव—आइये आइये महारानी जी सिंहासन पर विराजिये।

चौथा बाब-(ग्यारहवां सीन)

केहकंदापुर

नकली सुग्रीव का बैठे दिखाई देना और द्वारपाल का आना

द्वारपाल—महाराज सावधान हुइये सावधान हुइये ।

शेर—आज वह सुग्रीव फिर आता है लड़ने के लिये ।
दो मनुष्य के साथ आया है वह मरने के लिये ॥

न० सुग्रीव—अरे पापी चाण्डाल तेरी यह चाल ।

शेर—फ़ैसला करदूंगा तेरा आज पापी जानले ।
यह मेरा खूंख्वार खंजर आज तेरे प्रान ले ॥

वार्ता—अय द्वारपाल आने दो रोकना नहीं मैं अभी आता हूं ।

(नक़ली सुग्रीव का जाना और रामचन्द्र का आना)

रामचन्द्र—अरे सुग्रीव कहां रह गया ।

लछमन—(पीछे को देखकर) महाराज आता होगा ।

एक तरफ़ से नक़ली सुग्रीव आता है दूसरी तरफ़ से असली सुग्रीव आता है-दोनों एक से देख कर रामचन्द्र का मुतहयर होना

अ० सुग्रीव—श्री महाराज आइये मेरे शत्रु को नीचा दिखाइये ।

न० सुग्रीव—आइये आइये महाराज इस नक़ली सुग्रीव को दूर कीजिये
मेरा राज मुझको दिलवाइये ।

लछमन—(चिल्ला चढ़ाना) रामचन्द्र जी का रोकना ।

रामचन्द्र—ठहरो ठहरो लक्ष्मण ठहरो ।

अंगद गाना

मुझे तो पिता जी सहारा तुम्हारा ।
है चर्नों का सेवक यह बेटा तुम्हारा ॥
अगर सूर्य पूरब से पश्चिम जा निकले ।
नहीं मुंह को मोड़े यह बेटा तुम्हारा ॥
मुझे ताज शाही की ख्वाहिश नहीं है ।
रक्खो मुझपै साया यह बेटा तुम्हारा ॥

मन्त्री शेर—राय मां बेटों की नहीं मिलती नया इक ढंग है ।
असली नकली क्या कहें अब अक्ल अपनी दंग है ॥
आधा आधा राज अब दोनों को देना चाहिये ।
पूरब पश्चिम राज अब दोनों को करना चाहिये ॥
रानी कुंवरा मंत्री गन हैं आज सब बैठे हुये ।
मेरी नाकिस राय की ताईद करनी चाहिये ॥

दर्बारी लोग—आपकी राय बहुत मुनासिब है हम लोग ताईद करते हैं ।
शेर—जिनको इनके साथ रहना है वह इनके साथ रहें ।
जिनको उनके साथ रहना है वह उनके साथ रहें ॥

(दर्बारी लोगों का एक एक की तर्फ होना)

असली सुग्रीव—अय प्यारी सुतारा आओ,

शेर—आह के नालों से अपने अस्मां रंगदेंगे हम ।
ओ सितमगर कर सितम तेरा सभी सहलेंगे हम ॥
छोड़कर हम राजको जंगल बयाबां में रहें ।
दुख जो वहां प्यारी सुतारा होगा वह सहलेंगे हम ॥

नकली सुग्रीव—ओ प्यारी सुतारा के बच्चे क्या बकता है ।
शेर—छूट जाये राज गो मुझसे पियारा भी छुटे ।
जान तक देदूं मगर मुझसे सुतारा कब छुटे ॥

देख प्यारी सुतारा किसको याद करती है। किसका दम भरती है मैं अभी आता हूं।

(नकली सुग्रीव का सुतारा की तरफ़ को आना)

असली सुग्रीव—अरे चांडाल आ आ तेरी मृत्यु आई है, जो तेरे दिलमें यह समाई है।

दोनों का सुतारा की तरफ़ को लपकना, वाल का पुत्र चन्द्ररसमी का रोकना

चन्द्ररसमी—ख़बरदार दोनो में किसी ने भी हाथ लगाया तो यह खंजरे खूंख्वार सर पर आया।

शेर—खाई मैंने यह क़सम दोनों में गर कोई आएगा।
सर करूं उसका क़लम इन हाथों से मारा जाएगा॥
असली नक़ली का हमें खुलता नहीं कुछ भेद है।
राज मंदिर जो घुसा तलवार मेरी खाएगा॥
शील को दृढ़ पालना स्त्री का यह ही धर्म है।
इसलिये रनवास में कोई न जाने पाएगा॥

सब दर्बारियों का सक्ते में होना, और दोनों सुग्रीवों का अफसोस की निगाह से देखना

पर्दे का गिरना

चौथा बाब-नौवां सीन
(पर्दा जंगल)

असली सुग्रीव का सुतारा की याद में अफ़सोस करते नज़र आना

असली सुग्रीव, गाना

बद क़िस्मती से होगये सामां नये नये।
जंगल नये नये हैं बयां बां नये नये॥
घर बार शत्रु होगया हाय पुत्र मंत्रियां।
पैदा हुवे हैं जान के ख्वाहां नये नये॥
दुनियां ने रंग बदल लिया अपने पराये सब।
मेरे लिये सब होगये इन्सां नये नये॥
प्यारी सुतारा तूने तो मेराही दम भरा।
दिलके ही दिलमें रहगये अरमां नये नये॥

शेर—अय प्यारी सुतारा मेरे गर साथ तू होती।
इस जंगले वीरान में फूलों की तू होती॥
पर्वाह नहीं राज की नहीं ताज से मतलब।
सबको मैं भुला देता अगर साथ तू होती॥
दिन को न चैन नींद नहीं रात को आती।
बेचैनी मेरी देखती गर साथ तू होती॥

वार्ता—अय भगवन किस पर जाऊं, क्या कारण बनाऊं, हनुमान को बुलाकर लाया तो उसको भी असली नक़ली सुग्रीव का पता न पाया अब अगर रावण पर जाता हूं, तो मुझको यह भय उत्पन्न होता है कि वह कुशीला है ऐसा न हो कि वह मुझको ही जमपुर द्वार दिखाए।

शेर—असली नक़ली दोनों की वह जान निकाले।
प्यारी मेरी से दिलके फिर अरमान निकाले॥

वार्ता—बस बस अब मैं खरदूषन के राज में आया, जोकि पाताल लंका का राजा है, परन्तु मेरा मंत्री अब तक कुछ ख़बर न लाया।

(मन्त्री का आना)

मन्त्री—महाराज गज़ब हुवा।

सुग्रीव—क्या हुवा।

मन्त्री—खरदूषन राम लक्ष्मन के हाथों मारा गया। और विराधित पाताल लंका का राजा हुवा।

सुग्रीव—खरदूषन का मरना, और विराधित पाताल लंका का राजा होना यह असम्भव है।

मन्त्री—नहीं नहीं महाराज मैं सत्य कहता हूं, मेरे वचन को प्रमान कीजिये

सुग्रीव—अच्छा चलो, यदि खरदूषन को राम लखन ने मारा है तो मेरा काम भी उन्हीं से होनेवाला है।

(जाते हैं)

पर्दे का गिरना

चौथा बाब-दसवां सीन पाताल लंका

(विराधित का दर्बार)

(लक्ष्मन का ताज लेकर विराधित के सर पर रखना)

लछमन-शेर—राक्षस मारा गया सोचाथा जो कुछ होगया।
पाताल लङ्का का सुनो राजा विराधित होगया।

वार्ता—अब विराधित तो यह ताज शाही पहनो और अपने को पाताल लङ्का का राजा जानो।

विराधित–शेर—मुझ गदा को राज के काबिल बनाया आपने।
राई को मानिन्द परवत कर दिखाया आपने।
जर्रे को ताकत नहीं जो आसमा तक दे चमक।
सूर्य के संसर्ग से देता है वह कैसी दमक॥

द्वारपाल—श्री महाराज की जय हो द्वार पर कहकन्दापुर के महाराजा सुग्रीव खड़े हैं सो आपसे मिलना मांगते हैं।

विराधित—अरे कहकन्दापुर के महाराजा सुग्रीव और मैं तुच्छ चंद्रोदय का पुत्र विराधित—वह कहां और मैं कहां। किसी कवीने सच कहा है।

दोहा—रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त हैं, वृक्ष बराबर बेल॥
लघू बड़ेन के साथ में, पदवी लहत अतोल।
पड़े सीप ज्यों जलद जल, मुक्ता; होय अमोल

वार्ता—अय द्वारपाल महाराज को बाइज्जत ले आओ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज।

द्वारपाल का जाना सुग्रीव को लेकर आना विराधित का आदर करना बग़लगीर होना और सुग्रीव का रामचन्द्र के पैरों पर गिरना।

सुग्रीव—(हाथ जोड़ कर रामचन्द्र की तरफ मुखातिब होकर) महाराज को नमस्कार है नमस्कार है नमस्कार है बल्कि आपको वारम्बार नमस्कार है। (चरनों को छूना)

रामचन्द्र—अरे सुग्रीव यह क्या करते हो कहिये कहिये अपनी क्षेम कुशल सुनाइये।

सुग्रीव–शेर—दर्द दिल में क्या कहूं हाय किसको मेरा दर्द है।
दर्द को लिख कर के जिस पहलू से उलटो दर्द है॥

वार्ता—श्री महाराज मेरा दर्द मेरा मंत्री बयान करेगा।

मन्त्री-गाना—इसी सूरत का इक सुग्रीव है बनकर आया।
यही नक्शा है यही रूप वह धरकर आया॥

यह जां तड़फ़ तड़फ़ के जो निकले तो इस तरह ।
पहलू में मेरे तू हो किसी को ख़बर न हो ॥
प्राणों को मेरे चाहती तो जल्द कर वह काम ।
राजी करो सिया को किसी को खबर न हो ॥

मन्दोदरी—अय प्राण नाथ सीता क्या चीज़ है हजारों सीता आपकी सेवा में हाजिर कर सकती हूं परन्तू खेद है कि वह आपसे त्रिखंडी विद्याधर के महेश्वर को छोड़कर क्या चाहती है यह कुछ मेरी समझ में नहीं आती है ।

रावण—बहुत कुछ तरकीब खेली, कुछ समझ आती नहीं ।
वह न आई दाम में, अब कुछ कही जाती नहीं ॥
मंदोदरी—दाम में स्याद लाना चाहिये तदबीर से ।
देव होते हैं गुलाम इन्सान की तस्वीर से ॥
रावण—माया मई मैंने बहुतसा जाल दिखलाया उसे ।
पर न आई जाल में सब कहके समझाया उसे ॥
मंदोदरी—अब बलात् कारे उसे सेवन करो क्या देर है ।
प्रेम रसको चूसलो भौंरा बनो क्या देर है ॥
रावण—कर नहीं सकता जबरदस्ती मैं इसमें भेद है ।
लेलिया मैं नियम मुनियों से यही इक खेद है ॥

मन्दोदरी का गाना

करदूं तन मन अय प्यारे ये तुमपर निसार ।
आओ आओ करो प्यारे दासी से प्यार ॥
तुमरे चर्नों का सुरमा लगाती हूं मैं ।
सिया नागन को छोड़ो छुड़ाती हूं मैं ॥
लाऊं सीता सी नारी मैं प्यारे हजार ॥ करदूं० ॥

रावण गाना

कैसी पदमन ला सीता मैं जानू नहीं, लावो सीता को हरगिज मैं मानूं न
लम्बे लब वह करे हरदम मेरा विचार ॥ करदूं० ॥

चौथा बाब-(ग्यारहवां सीन)

केहकंदापुर

नकली सुग्रीव का बैठे दिखाई देना और द्वारपाल का आना

द्वारपाल—महाराज सावधान हुइये सावधान हुइये।

शेर—आज वह सुग्रीव फिर आता है लड़ने के लिये।
दो मनुष्य के साथ आया है वह मरने के लिये॥

न० सुग्रीव—अरे पापी चाण्डाल तेरी यह चाल।

शेर—फैसला करदूंगा तेरा आज पापी जानले।
यह मेरा खूंख्वार खंजर आज तेरे प्रान ले॥

वार्ता—अय द्वारपाल आने दो रोकना नहीं मैं अभी आता हूं।

(नक़ली सुग्रीव का जाना और रामचन्द्र का आना)

रामचन्द्र—अरे सुग्रीव कहां रह गया।

लछमन—(पीछे को देखकर) महाराज आता होगा।

एक तरफ़ से नक़ली सुग्रीव आता है दूसरी तरफ़ से असली सुग्रीव आता है-दोनों एक से देख कर रामचन्द्र का मुत्हयर होना

अ० सुग्रीव—श्री महाराज आइये मेरे शत्रु को नीचा दिखाइये।

न० सुग्रीव—आइये आइये महाराज इस नक़ली सुग्रीव को दूर कीजिये मेरा राज मुझको दिलवाइये।

लछमन—(चिल्ला चढ़ाना) रामचन्द्र जी का रोकना।

रामचन्द्र—ठहरो ठहरो लछमण ठहरो।

शेर—एक ही है रूप दोनों के जुदा क़ालिब बने ।
किसको मारें किसको छोड़ें किसके हम तालिब बने ।

वार्ता—ऐ भ्राता कहीं ऐसा न हो कि असली सुग्रीव ही हमसे मारा जाये

नकली सुग्रीव का गदा मारना असली सुग्रीव का बेहोश होना

न० सुग्रीव—(लात मारना)

शेर—थू है तेरी जिन्दगी पर अब तो चल परलोक तू ।
धोके क्या देता रहा बस अबतो चल यमलोक तू ॥

(लात मारकर जाना)

रामचन्द्र—अय भ्राता सुग्रीव को संभालो और इसकी नब्ज़ टटोलो
अवश्य हमको धोखा हुवा-नकली सुग्रीव अपना काम कर गया

लछमन का सुग्रीव को होश में लाना सुग्रीव का अफ़सोस करना

सुग्रीव शेर—क़हर की मुझपर नज़र थी देखताही रह गया ।
मारकर भागा मुझे मैं देखता ही रहगया ॥
आपसे उम्मीद कामिल मुझको थी संसार में ।
बस छुटी प्यारी सुतारा देखता ही रहगया ॥
जिन्दगी निर्लज्ज है अपयश भरी फ़र्याद है ।
काम शत्रु करगया मैं देखता ही रहगया ॥

रामचन्द्र—एक से दोनों बने हम देखते ही रहगये ।
किसको मारें किसको छोड़ें सोचते ही रहगये ॥
लग न जाये तीर असली के कहीं ऐसा न हो ।
दोनों की हम शक्ल को बस देखते ही रहगये ॥

वार्ता—परन्तु अय सुग्रीव धीर वीर हो-तेरा स्वार्थ अवश्य पूरा होगा
अय लछमन सुग्रीव को तुम अपने पास रक्खो और मैं नकली
सुग्रीव से संग्राम करूं ।

लछमन—बहुत अच्छा महाराज।

रामचन्द्र—द्वारपाल।

द्वारपाल—श्री महाराज।

रामचन्द्र—देखो शीघ्र जावो और नक़ली सुग्रीव से कहदो कि वह संग्राम करने फ़ौरन आये विलम्भ न लगाये।

द्वारपाल—अच्छा श्री महाराज। (जाता है)

रामचन्द्र—लछमन देखो संग्राम के समय असली सुग्रीव को कदाचित न आने देना।

लछमन—अच्छा महाराज ऐसा ही होगा।

द्वारपाल—श्री महाराज नक़ली सुग्रीव आता है।

नक़ली सुग्रीव का लड़ने को आना

शेर

न० सुग्रीव—आज पापी मैं तेरी हस्ती मिटादूं तो सही।
हड्डी पसली को तेरी मिट्टी दिखादूं तो सही॥
जायका इस रूप धरने का चखादूं तो सही।
जीते जी मैं तुझको अग्नी में जलादूं तो सही॥

(नक़ली सुग्रीव की सैना का आना)

शेर—कर दिया हैरान हमको आज क़िस्सा पाक हो।
आज इस सुग्रीव की मुट्ठी भरी इक ख़ाक हो॥

न० सुग्रीव—अरे पापी चांडाल आ-आ-आ।

रामचन्द्र—देख सिंभल और मेरा वार रोक-(तीर मारना)

न० सुग्रीव—महाराज आप क्यों परिश्रम करते हैं इस भेष धारी सुग्रीव को आने दीजिये।

रामचन्द्र—यह भी आयेगा परन्तु तू पहिले मेरा वार रोक।

दोनों का लड़ना अंत को बैतालनी विद्या का भागना और नकली सुग्रीव का सहस्रमती विद्याधर होना सब सैना का एकदम लौटना और सहस्रमती से युद्ध करने को तैयार होना

सेना के लोग

अरे यह क्या देखो तो यह श्याम वरन् कौन आगया। अवश्य हमारे राज को धोखा दे गया॥ परन्तु अब तू कहां जायगा।

(शेर) असली स्वामी जो है वह मारा फिरे है आज कल।
बे शरम निर्लज्ज काला मुंह किये है आज कल॥
आज रानी की जगह मृत्यू सुला आगोश में।
ले सिंभाल इस तीर को आजा जरा अब होश में॥

वार्ता—अरे घेरो-घेरो-घेरो चारों तरफ़ से मारो। (लड़ना)

(सब सेना का लड़ना और हार मान कर भागना)

न० सुग्रीव—अरे पापी चांडाल सुग्रीव शीघ्र आ जम का द्वार दिखाऊं मौत का मजा चखाऊं।

अ० सुग्रीव—छोड़ दो, छोड़ दो, महाराज मुझ को छोड़ दो।

लछमन—नहीं नहीं तुम नहीं छूट सकते हो।

सहस्रमती—आ आ सुग्रीव आ, सुतारा का चाहने वाला जान देने को तैयार है।

रामचन्द्र—अरे दुष्ट पापी क्या बकता है क्यों मान करता है बे हयाई के बचन मुह से निकालता है। ले संभाल तीर आता है यह पापी दुष्ट आत्मा नर्क में जाता है।

तीर मारना सहस्रमती का तड़पना और अंत को प्राण रहितहोना

सहस्रमती—तड़पतेहुवे

चौपाई—आप को हुवा सुग्रीव पियारा। कारन कौन नाथ मोहि मारा।

रामचन्द्र—ज्वारी चोर कुशीला मानी। इन संग हमने मीत न जानी।
पर स्त्री लंपट अभिमानी। इनको हते होत नहिं हानी॥

सस्त्रमती का तड़प कर मरेना

लक्ष्मण—ऐ बहोदुरो आवो इस पापी की दग्ध क्रिया करो और रानी अंगद आदि को बुला लाओ।

लाश का लेजाना और सुतारा वगैरा का आना।

रानी वगैरा—बोलो श्रीरामचन्द्र की जै! जै हो जै हो जै हो रघुपतिकी जैहो

गाना—हुवा हुवा बड़ा अहसान निसारें तन मन धन कुरबान हुआ,
हुआ, बड़ा (अहसान)
आज्ञा हो सर पर राखें, हाजिरी हमरी जान॥ हुआ २॥
राजधानी कहकंधापुर की रक्खी आपने शान॥ हुवा हुवा०॥
चरणो की रज धो कर पीवें शूर बीर बलवान॥ हवा हुवा० ॥
पापी पाखण्डी को मारा कृपा हुई भगवान॥ हुवा हुवा० ॥

सुग्रीव रामचन्द्र की तरफ मुखातिब होकर

सुग्रीव—श्री महाराज १३ कन्या आपकी सेवा में देता हूं ग्रहण कीजिये

राम—अच्छा आप की खुशी।

चौथा बाब-बारवां सीन
पर्दा रावण का महल ।

रावन का सीता की याद में बेकरार नज़र आना मन्दोदरी का हाल पूछना ॥

मन्दोदरि (शेर)—यह चेहरे पर उदासी क्यों आशकार है ।
इस उदासी का तुम्हारे कुछ पता लगता नहीं ॥
किस लिए यह रंज है कुछ यह पता चलता नहीं ।
सर से चोटी तक मेरी यह जान तक कुरबान है ॥
जां निकल जायेगी मेरी दो घड़ी महमान है ।
मर गए रन में चचा तब रंज कुछ माना नहीं ॥
खाना पीना छोड़ना पर आज तक जाना नहीं ।
रन में लड़ कर के मरें यह क्षत्रियों का धर्म है ।
पीठ दिखलाते नहीं यह क्षत्रियों का मर्म है ॥
चन्द्रनखा का रण में बेशक ले लिया सरताज है ।
मालूम होता है यही कुछ उसका सदमा आज है ।
रण में लड़के वह मरें अब रंज कुछ करते नहीं ॥
मरने वाला मर चुका अब साथ कुछ मरते नहीं ।

गले में हाथ डाल कर मंदोदरि का इज़हार मुहब्बत करना

मन्दोदरि—हैं हैं यह क्या, अय प्राण पति जवाब तक नदारद—बस बस आज यह अभागनी चोला छोड़ती है ज़िंदगी से मुंह मोड़ती है ।

रावण—नहीं नहीं प्यारी अगर तू सुनना चाहती है तो ले सुन ।

गाना—उलफ़त की कानो कान किसी को ख़बर न हो ।
कर लूं मैं प्यार उन से और उनको खबर न हो ।
आह सी चश्म हैं तेरी दंदा यमन के लाल ।
मारो कलेजे तीर किसी को ख़बर न हो ॥

यह जां तड़फ़ तड़फ़ के जो निकले तो इस तरह ।
पहलू में मेरे तू हो किसी को खबर न हो ॥
प्राणों को मेरे चाहती तो जल्द कर वह काम ।
राजी करो सिया को किसी को खबर न हो ॥

मन्दोदरी—अय प्राण नाथ सीता क्या चीज़ है हजारों सीता आपकी सेवा में हाजिर कर सकती हूं परन्तु खेद है कि वह आपसे त्रिखंडी विद्याधर के महेश्वर को छोड़कर क्या चाहती है यह कुछ मेरी समझ में नहीं आती है ।

रावण—बहुत कुछ तरकीब खेली, कुछ समझ आती नहीं ।
वह न आई दाम में, अब कुछ कही जाती नहीं ॥
मंदोदरी—दाम में स्याद लाना चाहिये तदवीर से ।
देव होते हैं गुलाम इन्सान की तस्वीर से ॥
रावण—माया मई मैंने बहुतसा जाल दिखलाया उसे ।
पर न आई जाल में सब कहके समझाया उसे ॥
मंदोदरी—अब बलात् कारे उसे सेवन करो क्या देर है ।
प्रेम रसको चूसलो भौंरा बनों क्या देर है ॥
रावण—कर नहीं सकता जबरदस्ती मैं इसमें भेद है ।
लेलिया मैं नियम मुनियों से यही इक खेद है ॥

मन्दोदरी का गाना

करदूं तन मन अय प्यारे ये तुमपर निसार ।
आओ आओ करो प्यारे दासी से प्यार ॥
तुमरे चनों का सुरमा लगाती हूं मैं ।
सिया नागन को छोड़ो छुड़ाती हूं मैं ॥
लाऊं सीता सी नारी मैं प्यारे हजार ॥ करदूं० ॥

रावण गाना

कैसी पदमन ला सीता मैं जानूं नहीं, लावो सीता को हरगिज़ मैं मानूं नहीं ।
लब्बे लब वह करे हरदम मेरा विचार ॥ करदूं० ॥

मन्दोदरी गाना

पिया प्यारे की हरदम खुशी में खुशी, जाऊं लाऊं करूं प्यारे मनकी खुशी
चलो जलपान करलें है खाना त्यार ॥ करदूं तन मन० ॥

दोनों का जाना—पर्दे का गिरना

चौथा बाब-तेरहवां सीन
पर्दा जंगल

रामचन्द्र का सीता की याद में बेक़रार नज़र आना और लछमन का सुग्रीव पर क्रोध करके झपटना

रामचन्द्र का गाना

जल्दी आ प्यारी दर्श दे मनसे क्यों इसको भुलादिया ।
नस नस फरकती है याद में हस्ती को अपनी मिटा लिया ॥
पृथ्वी हवा गगन अगन किस जां पै है प्यारी कोमल चरण ।
आवो आवो प्यारी प्यारी फवन सीभाब दिल ने घटा दिया ॥ ज० ॥
किस जा पै है प्यारी साया तेरा, चूमूं उसे दिल ये चाहा मेरा ।
ज़ख़्म जिगर था सो हुवा हरा मरहम फ़ाया हटा दिया ॥ ज० ॥

शेर

सात दिन भी होचुके सुग्रीव क्यों आया नहीं ।
ढूंढता फिरता है क्या उसको पता पाया नहीं ॥
जिन्दगी बेकार है जीने को जी चाहता नहीं ।
हाय प्यारी की खबर भी तो कोई लाता नहीं ॥
राज पा सुग्रीव भी है ऐश में अब मुबत्तला ।
हमरा दुख उसने भुलाया जाने उसकी अब बला ॥

होगई। क्या अरजका दुनिया से तू मुंह मोड़ कर।
कहां गई प्यारी मेरी तू मुझसे रिश्ता तोड़ कर ॥
गुम हुई जिस जा पै अब उस जा पै जाना चाहिये।
पत्ते पत्ते से पता तेरा लगाना चाहिये ॥
आंख से देखूं तुझे बस जब हों आंखे कामकी
वरना ये आंखे नहीं है आंख हैं यह नाम की।
जी में आता है बहायें अशक आंखें इस तरह ॥
आवे चश्मा यह उबलकर कोह हिलावे जिस तरह।
चश्म ये दोनों निसारूं जो खबर लाये तेरी।
दिल उमड़ता है रुलाती हैं यही आंखें मेरी ॥

वार्ता—हा ! ऐ प्यारी आओ इस दुष्ट आत्मा ने तुम को दंडकबन में इकला छोड़ा है इसको दंडदो और खूब तड़फा तड़फा कर रुलाओ

शेर—जो किया अपराध उसको दो नतीजा आन कर।
हाथ से खोया है प्यारी इसने तुझ को जान कर ॥

आंख में पानी आना लछमन को यह देखकर क्रोध करना

लछमन—सुग्रीव सुग्रीव ओ पापी सुग्रीव अभीमानी सुग्रीव
शेर—मार कर शत्रु हटाया भूला तू इस ध्यान को।
राज पा लेकर सतारा चढ़ गया अभिमान को ॥
आ निकल तलवार तू अब छोड़ दे इस म्यान को
आज उस सुग्रीव के शोले उड़े आसमान को ॥

लछमन का नंगी तलवार लेकर झपटना
पर्दे का गिरना

चौथा बाब सतरवां सीन कोटशिला

रामचन्द्र मय विद्याधरों के आना

गाना राम लछमन

आज प्रभु रक्खो हमारी लाज ॥ आज० ॥
कोटशिला से जप तप करके गये मुक्ती मुनीराज।
चरणार्विन्द को शीश निवावें। जै जै जै जिनराज ॥ आज ० ॥
वानर वंशी लेन परीक्षा हमरी आये आज।
कारज सुफल करो प्रभु हमरा बिगड़े संवारो काज ॥ आज० ॥
जल चन्दन अक्षत शुभ लेकर दीप धूप फल साज।
कोट शिला उठने की शक्ति ददो भुजा में आज ॥ आज० ॥

चारों तरफ परकम्मा देना नमोकार मंत्र पढ़कर उठाना सबका जय जयकार करना

विद्याधर—बोल श्री जिनेन्द्रदेव की जय।

दू० वि०—बोल श्री रामचन्द्र की जय। (पैरों पर गिरना)

सब० वि०—बस बस महाराज होचुके होचुके आज से इन चरणों के सेवक होचुके आपकी दिली मंशा पूरी होगी रावण की मृत्यु आप के हाथ होगी।

प० वि० धर—परन्तू हमको क्या करना चाहिये।

दू० वि०—लंका में जाकर सीता को लाना चाहिये।

ती० वि०—मगर वहां पर रावण का ही कृपा पात्र जाना चाहिये।

सुग्रीव—बस-बस-वहां भेजने को हनूमान बुलाना चाहिये।

जामवन्त—अवश्य, वह रावण को समझा कर सीता महारानी को ले आएगा अरे कोई है।

लछमन—अय सुग्रीव यदि तेरा यही विचार है तो हम तुझको माफ़ करते हैं। अपने मनको तेरी तरफ़ से साफ़ करते हैं।

सुग्रीव का दर्बारियों की तरफ़ देखकर
सुग्रीव गाना

खबर सीता की लाने में चाहे यह जान भी जाये।
नहीं पर्वाह कुछ हमको चाहे यह मान भी जाये॥ चाहे०॥
मेरे इस ध्यान पर लानत, मेरे अभिमान पर लानत।
मेरी इस आन पर लानत, चाहे यह जान भी जाये॥ खबर॥
सब सैना संगीगन जावो, खबर सीता की लेआवो।
शीघ्र श्रीराम पहुंचावो, अगर यह जान भी जाये॥ खबर०॥
गगन पाताल में जाकर, देवो उसका पता लाकर।
लेवो इनाम मुंह मांगा, चाहे यह जान भी जाये॥ खबर०॥

सुग्रीव—देखो हम भी सीता की खबर लेने को जाते हैं सब लोग शीघ्र खबर लावो मुंह मांगा इनाम पावो।

दर्बारी—अच्छा श्री महाराज अभी जाते हैं।

दर्बारी लोगों का जाना सुतारा आदि रानियों का अर्घ उतारन करना और लछमन को आरता करना
सुतारा रानी का गाना

कुल रूपी डूबी जाती, म्हारी नैय्या लगाई पार जी।
एवज इसका क्या हम देवें, हम प्रभु तुच्छ गंवार जी॥
कदम कदम पर आंख बिछादें, कृपा यह अपरम्पार जी॥ कुल०॥
इस भव तो कुछ बन नहीं आता, ऐसा है वह कहा न जाता।
दबे हुये हैं बहुत प्रभू हम, उतरे यह सर से भार जी॥ कुल०॥

पर्दे का गिरना

दूत—चन्द्रनखा श्रीरामचन्द्र व लक्षमन को देख कर काम बान से पीड़ित भई परन्तु रामचन्द्र लक्षमण को मौन सहित देख कर क्रोध को उतपन्न हुई ।

हनूमान—अवश्य ऐसाही हुवा होगा ।

दूत—अन्नदाता मैं सत्य कहता हूं फिर चन्द्रनखा आडम्बर बना कर खरदूषण के पास गई पुत्र को मारने और शील भंग होनेका दोष प्रगट किया खरदूषण क्रोधित हुवा रावण आदि राजों पर दूत पठाया रावण रण संग्राम में आ रहाथा रास्ते में सीता को देख कर मोहित हुवा मायामई सिंहनाद बजाया जिसको सुनकर रामचन्द्र जी का दिल घबराया ॥

हनूमान—रामचन्द्र का मन क्यों घबराया ?

दूत—श्री महाराज जिस समय लक्षमण खरदूषण से संग्राम करने गया था उस समय कह गया था कि जब मुझ पर कोई कष्ट का समय होगा तो मैं सिंघनाद बजाकर तुमको सूचित करूंगा । रावण झूंठा सिंघानाद बजाया ।

हनूमान—लक्षमण की वार्ता की रावण को कैसे खबर हुई ।

दूत—श्रीमहाराज उसने विद्या से बुझा कर पूछ लिया था सिंहनाद को सुन कर रामचन्द्र लछमन की सहायता को गये इस पापी ने जटायू को आकर प्राण रहित किया और सीता सती को विमान में बैठा कर हर ले गया ।

हनूमान—शर्म्म है ! शर्म्म है !! रावण के ऐसे कार्य्य पर शर्म्म है !!!

दूत—फिर पाताल लङ्का का राजा विराधित बनाया गया । तमाम बानर वंशियों ने लछमन से कोट शिला उठाने को कहा ।

हनूमान—तो क्या उन्होने उठाई ?

आवाज रतनजटी—उस दुष्ट का नाम रावण है।

(रतनजटी का जाहिर होना)

सुग्रीव—(बगलगीर होकर) कहिये कहिये यहां पर कैसे विचर रहे हो।

रतनजटी-गाना-जल्दी खबरदो रघुवर को, मेरो जन्म सफल भयो आज जी।

रावण सीता को हर लाया ज्यूं झपटा हो बाज़ जी।

खबर राम पर पहुंचाने की आसा पूरहुई आज जी॥ जल्दी०॥

सदा लखन और राम राम थी रोती खो खो लाज जी

मैं झपटा मेरी विद्या छीनी तुम दर्शन भयो आज जी॥जल्दी०॥

सुग्रीव रतनजटी—विराजिये विराजिये शीघ्र चलिये।

जाना परदे का गिरना

चौथा बाब सोलहवां सीन

सुग्रीव का महल

रामचन्द्र लछमन का बैठे दिखाई देना सुग्रीव का रतनजटी को लेकर आना

सुग्रीव—श्री महाराज की जैहो सीता महारानी का पता लग गया।

शेर—दुष्ट रावण ले गया लंका में सीता आन कर।

रतन जटी विद्या हरी तोड़ा विमान अभिमान कर॥

सुग्रीव—श्री महाराज यह रतन जटी सीता का कुल हाल सुनायगा।

रामचन्द्र—धन्य है धन्य है धन्य है रतनजटी तुझ को धन्य है।

मेरी प्राण प्यारी की खबर लाया कुमला हुआ फूल खिलाया

शीघ्र बताओ कि वह क्या कहती जाती थी सुनावो सुनावो

रतनजटी—सुनियेर श्री महाराज सुनिये मैं महाराजा भामंडल का भेजा

हुआ आपकी क्षेम कुशल लेने आ रहा था सो रास्ते में रावण

सीता को विमान में विठाये लिये जाता मिला सीता महारानी बार २ यही कहती थीं।

गाना—रोना सुन सन के सीना फिगार है जी।
मालिक असमत का परवरदिगार है जी॥
सीता जाती थी रटती सदा राम राम कहती रावन से मौत
तेरी आई गुलाम। तूने रखा गुनाहों का बार है जी॥ रोना सुन२॥
तूने माया से सिंघनाद झूठा किया, पापीचाण्डाल तूने यह धोखा किया।
डरा मरने से पापी सिया रहै जी॥ रोना सुन सुन के०॥
भामंडल लखन राम आकर के अब, लेओ २ छुड़ा फेर आवोगे कब।
अवसर बीते क्या सोचो विचार है जी॥ रोना ०॥
मैंने सुन के यह रावन का रोका विमान, उसने विद्या हरो मारकर एक बान
सेवक करता यह तन मन निसार है जी॥ रोना०॥
स्वामी यह आरज़ू लंका जावो सभी, मारो चाण्डाल को सिया लाओ अभी
रोती जाती थी वह ज़ार २ है जी॥ रोना०॥

रामचन्द्र—ऐ लछमन बान और कटार उठावो, ऐ विद्याधरो हमको लंका का रास्ता बताओ। (सुग्रीव आदि का चुप होना)
(कुछ देर में)

रामचन्द्र—हैं हैं तुम लोग चुप क्यों हो गये। (खड़े होना)

विद्याधर—श्री महाराज पधारिये पधारिये।
(रामचन्द्र का बैठना) कुछ देर में

रामचन्द्र—क्यों क्यों यह क्यों यह क्या उदासी है।

शेर—जुबां मुंह में नहीं पत्थर कैसी मूरत बने हो तुम।
उड़ी चेहरे की लाली और पज़ मुरदा बने हो तुम। (चुप रहना)

लछमन—भरी है आज क्या मिल कर के रुई सब ने कानों में।
असुर के खौफ़ ने क्या ठोंक दीं कीलें ज़बानों में॥
लगाकर डाट बैठे हो तुम सब अपने दहानों में।
बहादुर हो या सब मिट्टी के पुतले हो दुकानों में॥

एक विद्याधर – श्री महाराज यदि इस सेवक को आज्ञा हो तो अपने मन के भाव प्रगट करे।

रामचंद्र (शेर) दिलों की उलझनों को आज मिल कर खोल डालो तुम।
न रक्खो दिल में कुछ हसरत ज़बां से बोल डालो तुम॥

विद्याधर गाना

कमर तक चकवा चकवी का गुज़र होना असम्भव है।
सिया लंका से अब आनी असंभव है असम्भव है॥कमर०॥
लायें सीता सी कन्या हम हजारों आपको लेकिन।
लड़ें रावण से हम जाकर असंभव है असंभव है॥ कमर०॥
पुत्र ने इन्द्र को जीता खिताब इंद्रजीत है उसका।
फ़तह पाना नहीं उनसे असंभव है असंभव है॥ कमर०॥
है भाई कुम्भकरण उनका जो है त्रिशूल का धारी।
हमारी जीत हो उससे असम्भव है असम्भव है॥ कमर०॥
लघु भाई विभीषण है हैं विद्यायें अजब उसकी।
नहीं ताक़त डटे कोई असंभव है असंभव है॥ कमर०॥
यह चक्री और धनुषधारी त्रीखंडी राज रावण है।
हमारा स्वार्थपुर होना असम्भव है असम्भव है॥ कमर॥

दू० वि०—अवश्य महाराज ये वचन प्रमाण हैं।

शेर—न आवे बस ज़ुबां पर नाम सीता खैर इस में है॥
वह पर वस्तु हुई समझो भुलाओ खैर इस में है।
रचा चारों तरफ है कोट रावन ने इसी कारन॥
न जाकर वहां बचे कोई न जाना खैर इस में है।

लछमन शेर—डरे लंकेश से क्यों इस क़दर कायर हुए हो तुम।
यह चोला सिंह का क्यों छोड़ कर सायर हुए हो तुम॥
गजों के झुन्ड में जाता हुआ भी शेर देखा है।
कोई मद मस्त हाथी भी लिए शमशेर देखा है॥

वनों में झूमते मग़रूर देखे हैं दरख्तों को।
मगर अगनी की चिंगारी न जा छोड़े परिंदों को॥
वज्र को तोड़ देती है मनुष्य को चोंक होती है।
असल ही बान की क्या है जरासी नोक होती है॥

रामचंद्र० वार्ता—ऐ वानर वंशियो मैं अपने अंतः करण से हट ग्राही एवं पक्ष पात को छोड़ कर अपनी आत्मा का न्यायमार्ग की साक्षीदेकर ये असम्भव समझता हूं कि हमारी न्याय रूपी खड्ग और धर्म रूपी ढाल का वार खाली जाये।

रामचंद्र कवित्त—न्याय शस्त्र का वार कभी नहीं खाली जाये॥
दुरा चारी व्यभिचारी पुरुष का वार ही खाली जाये।
वार ही खाली जाये समझ रहा दुनियां में वह क्या अपना।
पर उपकारी नाम कहावे भगवन् नाम सदा जपना।
दंडक वन में छिप कर आया शूर वीर बस है इतना॥
घाव लगाता या तन खाता क्षत्रि पन दिखला अपना।

विद्याधर—श्री महाराज मुझको एक समय अन्तनाथ श्री केवली के पास जाने का अवसर मिला, सेवक का वहां यह प्रश्न हुआ कि श्री महाराज रावण की मृत्यू किसके हाथ होगी, तब मुनि महाराज ने फरमाया गद गद बानी से कह कर समझाया।

शेर—उठायेगा बहादुर कोट शिला जाकर के जो बन में।
वही मारेगा रावण को न शंका कुछ करो मन में॥

लछमन गाना—चलो चलो करो मत देर॥ चलो २॥
आसापुर करदो सन्तों की सुनो सुनो प्रभू टेर॥चलो२ करो२॥
कोट शिला गर उठी न मुझ से समझो जग अन्धेर॥
वानर वंशी रामचन्द्र को मुंह न दिखाऊं फेर॥ चलो२॥

रामचन्द्र—ऐ मित्रो आओ और कोट शिला दिखाओ।

सब का जाना

चौथा बाब सतरवां सीन कोटशिला

रामचन्द्र मय विद्याधरों के आना

गाना राम लछमन

आज प्रभु रक्खो हमारी लाज ॥ आज० ॥
कोटशिला से जप तप करके गये मुक्ती मुनीराज।
चरणाविन्द को शीश निवावें। जै जै जै जिनराज ॥ आज ० ॥
वानर वंशी लेन परीक्षा हमरी आये आज।
कारज सुफल करो प्रभु हमरा बिगड़े संवारो काज ॥ आज० ॥
जल चन्दन अक्षत शुभ लेकर दीप धूप फल साज।
कोट शिला उठने की शक्ति ददो भुजा में आज ॥ आज० ॥

चारों तरफ परकम्मा देना नमोकार मंत्र पढ़कर उठाना सबका जय जयकार करना

विद्याधर—बोल श्री जिनेन्द्रदेव की जय।

दू० वि०—बोल श्री रामचन्द्र की जय। (पैरों पर गिरना)

सब० वि०—बस बस महाराज होचुके होचुके आज से इन चरणों के सेवक होचुके आपकी दिलई मंशा पूरी होगी रावण की मृत्यु आप के हाथ होगी।

प० वि० धर—परन्तू हमको क्या करना चाहिये।

दू० वि०—लंका में जाकर सीता को लाना चाहिये।

ती० वि०—मगर वहां पर रावण काही कृपा पात्र जाना चाहिये।

सुग्रीव—बस-बस-वहां भेजने को हनूमान बुलाना चाहिये।

जामवन्त—अवश्य, वह रावण को समझा कर सीता महारानी को ले आएगा अरे कोई है।

दूत—महाराज क्या आज्ञा है।

जामवन्त—देखो शीघ्र जाओ और हनूमान को ऊंच नीच समझा कर अपने हमराह ले आओ।

दूत—अच्छा श्री महाराज अभी जाता हूं। (जाना)

(रामचंद्र लछमन आदि का जाना)

सुग्रीव—चलिये २ महाराज चलिये। (जाना) (पर्दे का गिरना)

चौथा बाब अठारवां सीन

हनूमान-का महल।

हनूमान का अपनी रानी सहित बैठे दिखाइ देना दत का आना

दूत—जिनेंद्र देव रक्षा करें हरें शोक संताप।
सूरज चन्द्र चौगना दिन दिन बढ़ै प्रताप॥

वार्ता—महाराज की जै हो किष्किधापुर के महाराज सुग्रीव ने आपको याद किया है और शीघ्र ही बुलाया है।

हनुमान—मुझ को किस लिये याद किया है।

दूत—श्रीमहाराज आदि से अन्त तक सब वार्ता सुनाना चाहता हूं।

हनुमान—सुनावो मैं भी सुनना चाहता हूं।

दूत—श्री महाराज दंडक वन में अचानक लछमन के हाथ खड़ग आई उन्हों ने बंसवरी में एक झाड़पर बहाई जिससे शम्भुकुमारने मृत्यु पाई।

हनूमान—तो क्या लछमन निरदोष है।?

दूत—श्री महाराज बेखता।

हनमान—फिर क्या हुवा।

दूत—चन्द्रनखा श्रीरामचन्द्र व लक्षमन को देख कर काम वान से पीड़ित भई परन्तु रामचन्द्र लक्षमण को मौन सहित देख कर क्रोध को उतपन्न हुई ।

हनूमान—अवश्य ऐसाही हुवा होगा ।

दूत—अन्नदाता मैं सत्य कहता हूं फिर चन्द्रनखा आडम्बर बना कर खरदूषण के पास गई पुत्र को मारने और शील भंग होनेका दोष प्रगट किया खरदूषण क्रोधित हुवा रावण आदि राजों पर दूत पठाया रावण रण संग्राम में आ रहाथा रास्ते में सीता को देख कर मोहित हुवा मायामई सिंहनाद बजाया जिसको सुनकर रामचन्द्र जी का दिल घबराया ॥

हनूमान—रामचन्द्र का मन क्यों घबराया ?

दूत—श्री महाराज जिस समय लक्षमण खरदूषण से संग्राम करने गया था उस समय कह गया था कि जब मुझ पर कोई कष्ट का समय होगा तो मैं सिंघनाद बजाकर तुमको सूचित करूंगा । रावण झूंठा सिंघानाद बजाया ।

हनूमान—लक्षमण की वार्ता की रावण को कैसे खबर हुई ।

दूत—श्रीमहाराज उसने विद्या से बुझा कर पूछ लिया था सिंहनाद को सुन कर रामचन्द्र लछमन की सहायता को गये इस पापी ने जटायू को आकर प्राण रहित किया और सीता सती को विमान में बैठा कर हर ले गया ।

हनूमान—शर्म्म है ! शर्म्म है !! रावण के ऐसे कार्य्य पर शर्म्म है !!!

दूत—फिर पाताल लङ्का का राजा विराधित बनाया गया । तमाम बानर वंशयों ने लछमन से कोट शिला उठाने को कहा ।

हनूमान—तो क्या उन्होने उठाई ?

दूत—जी हां उन्हों ने उठा दिखाई जिस से जाना कि रावण की मृत्यू इन के हाथ आई श्रीमहाराज मुझको इस लिये भेजा है कि महाराजा हनूमान को अपने साथ लावो एक वह ही जाकर लंका में रावन को समझा सक्ते हैं सीता महारानी की भी खबर यदि ला सक्ते हैं तो वही ला सक्ते हैं। इसलिये श्री महाराज को शीघ्र बुलाया है।

हनूमान—मुझ को खेद है ! कि रावण ने पण्डित होकर यह क्या अनुचित कार्य्य किया मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूं। . (प्रस्थान)

चौथा बाब १९ सीन-सुग्रीव का दर्बार

दूत—श्री महाराज हनूमान आरहे हैं।

हनूमान का आना रामचन्द्र जी का उठकर बगलगीर होना

हनूमान—नमस्कार है नमस्कार है। (रामचन्द्र का मिलना)

रामचन्द्र—विराजिये ! विराजिये !!

हनूमान—पधारिये आप पधारिये ॥ (दोनों का बैठना)

हनूमान गाना—शास्त्र के हैं विरुध करनीं बड़ाई मुह व मुह।
क्या करूं माने नहीं तबियत कहे यह मुह व मुह ॥
देखतेही दर्श को पानी हुवा यह खून है।
जान तक कुरबान है कहता हूं मैं यह मुह व मुह ॥शास्त्र०।
उपकार पर उपकार करते देखे दुनिया में बहुत।
उपकार बिन स्वारथ करे उसकी बड़ाई मुह व मुह ॥
आज से चरणों का सेवक होगया हनूमन्त यह।
स्वामी की करने बड़ाई कहां से लाऊं मुह व मुह ॥
रावणादिक और बहुत राजों के देखा मान को।
प्रेम दृष्टी और समभाविक न देखी मुह व मुह ॥ शास्त्र०
(ताज शाही उतार कर)
ताज शाही त्याग दी जब तक न लाऊं जानकी।
स्वामी का चाकर बना आज्ञा करो अब मुह व मुह। शास्त्र०

रामचन्द्र जी का गाना—वार्ता अनमोल सुनकर दिल मेरा शैदा हुवा।
भ्रात लक्षमण के बराबर दूसरा पैदा हुवा॥
दुनिया में भ्रमते फिरे देखा नहीं इस शान का।
मेघ रस की बूंद गिर कर मुक्ताफल पैदा हुवा। वार्ता०
देखते चाह इसकदर पहिली शनाशाई नहीं।
पहिले भवका है जरूर संसर्ग यह पैदा हुवा॥ वार्ता०

हनूमान—श्री महाराज आप के ऐसे विचार हैं यह और भी बड़ाई के इजहार हैं आज्ञा कीजे आज्ञा कीजे।

रामचन्द्र-गाना—लङ्का में प्राण प्यारी से जाके यह कहो तुम।
पुरुपार्थ हीन वह है यह दुखड़े जो सहो तुम। लङ्का०
लङ्केश मार लङ्का में जब तक न आयें हम।
रघुवंश शूर वीर वह क्षत्री न कहो तुम। लंका०।
शुभ और अशुभ कर्म को सम भाव से सहना।
यह शील की परिक्षा है पीछे न हटो तुम॥ लंका॥
सैना इकत्र करके अब आते हैं कुछ दिन में॥
संतोष मन में रखो अब कायर न बनो तुम॥ लंका०॥
अंगुशतरी यह हाथ की देना मेरी उनको। (अंगूठी देना)
फिर हाल बेकरारी का मेरी यह कहो तुम॥
चूड़ामणी ले आइयो उनका निशा मुझ को।
गुजरे उन क्या सितम आकर यह कहो तुम॥ लंका०॥

हनूमान—श्री महाराज दास अभी सीता महारानी की खबर ले आता है।

चौथा परिच्छेद २० सीन लङ्का

हनूमान का कोट देखकर मुताज्जिब होना

हनूमान—अररे यह क्या रावण ने तो यह अद्भुत कोट रचा है।

शेर—घुस न जाये शील यहां चारों तरफ ही कोट है।
पाप सब होता रहे माया मई यह कोट है॥
अभिमान वश होकर के रावण ने यह समझा ही नहीं।
धर्म्म के आगे भला माया मई क्या कोट है।
प्रेम दृष्टी न्याय रूपी देखी रघुवर सी नहीं।
जान तक वारूं अभी माया मई क्या कोट है॥
कूद कर मारूं गदा जाकर मगर के पेट में।
अभिमान रावन का हरूं मायामई क्या कोट है॥

गदा घुमाकर मगर के पेट में मारना कोटका टूटना आवाज का होना

राक्षस वज्रमुख—अरे पापी क्या समझकर कोट तोड़ा ले मेरी गदा खा मौत का मजा पा।

हनुमान-शेर—अरे दुष्ट—पाप की नय्या कि तू बैठा निगहबानी करे।
डर नहीं पर लोक का और हटभी मन मानी करे॥

वज्रमुख-शेर—पाप पुन जाने नहीं आज्ञा का पालन हम करें।
जा यहां से भाग वरना प्राण तेरे हम हरें॥

हनूमान—तेरे स्वामी के अकल की अब निकालूं डाट को।
भेजता लानत हूं मैं इस राज को इस पाट को॥

राक्षस वार्ता—अरे तो क्या हमारे महाराज से लड़ने का इरादा है।

वज्रमुख—गदाको घुमाकर मारना ले मेरा वार रोक।

दोनो का लड़ना आवाज का होना राक्षस का मरना लंका सुन्दरी का क्रोध में भर कर आना

लंकासुन्दरी—अरे ठहर ठहर कहां जाता है।

शेर—खालको खीचूं तेरी तूने ये पापी क्या किया।
बाप का सनमुख मेरे तैं दाग मुझ को देदिया॥

खून से पैदा हुई हूं गर पिता के आन मैं।
मार कर तीरों से पापी प्राण ले लूं आज मैं ।।

हनूमान--बस बस जुबां को थाम ले बकना नहीं अच्छा ।
मरदों के सामने तुझे लड़ना नहीं अच्छा ।।

लंकासुन्दरी—मर्दों को मैंने आज तक जाना नहीं रणमें।
(जमीन में ठोकर मार कर)
लाखों के सर कुचल के भय खाया नहीं मन में ।।

वार्ता—ले मेरा वार रोक ।

हनूमान—(तीर से तीर को रोकता है) कर दूसरा वार भी कर ।

लंकासुन्दरी—ले दूसरा वार भी रोक ।

हनूमान—(रोकता है) कर कर तीसरा वार भी कर ।

लङ्का सुन्दरी—ले यह तीसरा वारभी रोक ।

हनूमान—(रोकता है) कर कर चौथा वार भी कर ।

लङ्कासुन्दरी—बस २ अब तू अपना वार कर ।

हनूमान—वार वार अरे कैसा वार किसका वार क्या वार दूं ।

शेर—क्या वार दूं मैं आज इस चेहरे पै डाल कर ।
मारा है काम बान ने दिल को हलाल कर ।।
दुनिया की लक्ष्मी वारदूं तोभी तो कम है यह ।
तन मन जिगर तो दे चुका वारूं क्या गम है यह ।।

वार्ता—बस २ तुमही अपना वार करो ।
स्त्री बालक वृद्ध पर करुणा ही क्षत्री धर्म है ।
वार तुम करती रहो इसमें ही बस एक मर्म है ।।

लङ्कासुन्दरी—अच्छा अच्छा मैं अभी तीक्षण बान ले आती हूं जाना नहीं

हनूमान—ले आवो लेआवो मैं कहीं नहीं जाता ।   (जाती है)

(हनूमान का काम पीड़ा से व्याकुल होना)

हनूमान--गाना—ये भोली भाली सूरत हाय क्यों मन में समाई है ।
इधर देखूं तो कूवा है उधर देखूं तो खाई है ॥
नहीं ताकत है हाथों को न वह चुकटी रही मेरी ।
गोया लड़ने की उन से बस कसम अब इसने खाई है । ये०
करे एक बार में दो वार नेत्रों से मेरे ऊपर ।
लगे तन मनमें यह जाकर वस अब मुश्किल रिहाई है । ये०
वो तीक्षण बाण मारे हैं मैं समझूं हूं गुलाब उनको ।
मानो शादी से पहिले रसम संटी मन को भाई है ॥ ये० ॥
है रनभूमी की वेशक सबही विद्यायें भरी उनमें ।
हुवा बेकल जिगर मेरा न कल अब इसने पाई है ॥ ये०

वार्ता—आह ! करूं तो क्या करूं क्या कारन बनाऊं क्या कह कर समझाऊं बस २ मैं अब छिपता हूं देखूं तो प्राण प्यारी आकर क्या भावना करती है । (छिपना)

लंका सुन्दरी का आकर मुतहय्यर होकर काम पीड़ा से व्याकुल होना ।

लंकासुन्दरी—हैं हैं कहां चला गया यह अनमोल मोती कहां चला गया ।

शेर—पहनती अनमोल मोती को गुंदा कर कान में ।
वार देती आज यह तन मन मैं उनकी शान में ॥
मेरे इकले छोड़ जानाही गजब यह होगया ।
हाय कहां देखूं तुझे कैसा गजब यह होगया ॥
अब तुम्हारे प्रेम रस को मैं कहां से देख लूं ।
शूर बीरी अब तेरी प्यारे कहां से देख लूं ॥

वार्ता—बस ! बस !! हो चुका, हो चुका,, रण संग्राम हो चुका । अय प्यारे तू आज से इस शरीर का नाथ हो चुका ।

शेर—था प्रण मेरा यही जीतेगा जो रण में।
प्यारा पति मेरा बने बस था यही मन में॥

वार्ता—परन्तु कदापि नहीं कदापि नहीं रण संग्राम को छोड़ कर जाना क्षत्रियों का धर्म्म नहीं, अवश्य किसी कार्य्य वश गये होंगे। शीघ्र ही आते होंगे।

गाना तर्ज— प्यारो री मेरा उमंग भरा जोबना।
लागोरी मेरे बान, बान, बान, बान,
वारो री मेरी जान, जान, जान, जान,
प्रेम रस में पत्री लिख यह वारो री॥ मेरी जान०॥
वार गो मुझ से नहीं तीर का तुमने कीना।
तीर वह जाके लगा पार हुआ यह सीना॥ वारो री मेरी०॥
तीर की नोक पै यह बांध के पत्री प्यारे।
चरनों की सेवा करे दासी यह तुमरी प्यारे॥ वारो री मेरी०॥

(हनूमान प्रत्यक्ष होना)

हनूमान—मारो २ तीक्षण बान मारो।

लंका—नहीं, नहीं अब आप अपना वार कीजिये।

हनूमान शेर—इष्ट वस्तु छीन ली पापी हुआ हूं जान कर।
रहम को बस त्याग दो मारो कमा को तान कर॥

लंका—(मुसकरा कर) लो लो संभालो यह आखिरी वार तुम पर करती हूं।

लंकासुन्दरी—लोलो सिंभालो ये आखिरी वार तुमपर करती हूं।

(तीरका मारना तीर में चिट्ठी देखकर हनूमान का पढ़ना)

हनूमान—हैं हैं यह तीर में चिट्ठी कैसी सांप के मुह में चिन्तामणी कैसी खोल के देखूं इसमें क्या लिखा है॥ (खुश होकर पढ़ना) बस २ क्या और कोई वार करना बाकी है।

(लंका सुन्दरी का पैरों में गिरना)

लंकासुन्दरी—नहीं नहीं प्यारे और कोई बात बाकी नहीं है। आज से यह आपकी दासी है चरणों की सेवा में लीजिये मुझको कृतार्थ कीजिये।

हनुमान—अच्छा २ प्यारी सन्तुष्ट हूजिये और मेरी बाईं भुजाकी ओर आकर बगलगीर हूजिये॥

लंकासुंदरी,गाना कैसे आना हुवा कैसे आना हुवा प्यारे दिलदार॥कैसे०॥
मुझको हैरत है यह आये हो तुम यहां पै क्योंकर।
कोट को तोड़ के आये हो तुम प्यारे क्योंकर॥कैसे०॥

हनूमान गाना—आया सीता को देने अंगूठी यह मैं।
देऊं रघुवर को चूड़ामणी जाके मैं॥
जाऊं रावण को समझाऊं बोधूं अभी।
कहना मानेगा भेजेगा सीता अभी॥
करो रत्ता धर्म्म की सुनाऊंगा मैं॥ आया०
मेरे कहने को हरगिज न टालेगा वह॥
कहूं जो कुछ अवश्य मेरी मानेगा वह॥
जाके अच्छी बुरी को सुनाऊंगा मैं॥ आया०

लंकासुन्दरी—आपका ख्याल गलत है।

गाना—तुम्हारी और रावण की रसाई गैरमुमकिन है।
कदूरत होगई दिल में सफाई गैर मुमकिन है॥
देओ अंगुश्तरी मुझको, लाऊं चूड़ा मणी तुमको।
फंसे गर आप वहां जाके रिहाई गैर मुमकिन है॥ तुम्हारी॥
कहूं सीता से यह जाकर, खबर दूं राम की जाकर।
मिलेंगे राम अब तुम से जुदाई गैर मुमकिन है॥ तुम्हारी०॥
जो रिश्ता था दशानन से करो वह तर्क अब मन से।
नहीं दिल में मुहब्बत आशनाई गैरमुमकिन है॥ तुम्हारी॥

हनूमान गाना—कहूं और ना सुने रावण यह जाना गैर मुमकिन है ।
करेगा कुछ नहीं हुज्जत बढ़ाना गैर मुमकिन है ॥
कहूंगा मैं दया कर के वो पण्डित है नहीं मूरख ।
सिया को राम पर भेजे यहां रहना गैर मुमकिन है । कहूं०
करूं दर्शन मैं माता के यही दिल में तमन्ना है ।
आऊं और मुंह छिपाऊं मुझ से होना गैर मुमकिन है । कहूं

वार्ता—ऐ प्यारी मैं अवश्य सीता महारानी के पास जाऊंगा । मैं प्रथम विभीक्षण के पास जाना चाहता हूं ।

लंका०—खैर, आपकी इच्छा । सीता महारानी तो अशोक वन में हैं । और विभीषण अपने महल में हैं ॥ चलो मैं भी चलती हूं ।

(प्रस्थान)

चौथा बाब इक्कीसवां सीन

विभीषण का महल

हनुमान का आना

हनुमान—जय जिनेन्द्र देव की ।

विभीषण—जै जिनेन्द्र जै जिनेन्द्र आइये २ पधारिये २ कहो चित प्रसन्न है ।

हनुमान—कुछ नहीं चित को चिन्ता है । सुनो ! आपके कुल की प्रशंसा केवल आर्य खंड में ही नहीं बल्कि इन्द्र भी सभा में बैठ कर महिमा करते हैं । परन्तु आपके भाई दशानन ने यह क्या अनुचित कार्य किया कुल रूपी यश को दाग दिया सज्जनताई को तिलांजली दिया तसकरों की तरह सीता सती को इकले वन से हर लाया शर्म्म है ! शर्म्म है !! क्या आप ने भी उनको नहीं रोका ?

बिभीषण—सुनो मित्र !

भजन गाना

सुन मेरे मित्र कहूं मैं मन की, अन्तःकरण मेरा दुखदाई ।
सीता सती को ग्यारह दिन हुये निराजल खाना बिनखाई ॥
रावण को करुणा नहीं आई, पंडित होकर अकल गंवाई ।
ऊंच नीच सब कुछ समझाई, एक दया नहीं मन में आई ॥ सुन० ॥
लंका में अब कुशल नहीं है, जहां कुशील तहां धर्म नहीं है ।
मेरे मन में खुटका यह है, लंकपति की मृत्यु आई ॥ सुन० ॥
राम की जब तक खबर न आवे, सीता जल अंगुल नहीं पावे ।
पतिभक्ता स्त्री का दुख यह, मुझ से भ्रात न देखा जाई ॥ सुन० ॥

हनुमान—शोक है ! शोक है !! रावण की बुद्धि पर शोक है !!!
बस २ अब शीघ्र मैं सीता के पास जाता हूं । रामचन्द्र की क्षेम कुशल सुनाता हूं ।

बिभीषण—अच्छा मैं भी भोजन तैय्यार कराता हूं ।

(दोनों का प्रस्थान)

चौथा बाब-बाईसवां सीन

अशोक वाटिका

हनुमान का सीता को देखकर अन्तरंग दुख मानना छिप कर अंगूठी डालना ।

हनुमान—(सीता को देख कर) धन्य है ! धन्य है !! सीता माता के पतिव्रत धर्म को धन्य है !!! (छिपता है)

राक्षसी का आना

राक्षसी—ऐ मेरी भोली भाली सीता मन का रंज दूर करो।
हमारे महाराज की सेवा कुबूल करो।

शेर—देख तो दुनिया में रावण से बड़ा अब कौन है।
भूख से व्याकुल मरेगी अब बचाता कौन है॥
माया मई रावण का अब चारों तरफ़ ही कोट है।
तेरी अब इमदाद को आता भला यहां कौन है।
लाऊं जल पानी करो रघुवर के छोड़ो ध्यान को।
बावली इस शील की रक्षा को आता कौन है॥

वार्ता—हैं हैं! कैसा शील किसका शील सब ढकोसले हैं। मनुष्य जन्म ईश्वर ने ऐश आराम के लिये बनाया है न के दुख उठाने को अकाल मृत्यू मर जाने को।

दू० राक्षसी—ग्यारह दिन भी होचुके आया भला यहां कौन है।
चाहें गुज़रें दो बरस यहां रहम खाता कौन है॥

वार्ता—बस! बस!! शरण लो शरण लो हमारे महाराज की शरण लो।

सीता—अरी राक्षसियो! ज़बान बंद करो बंद करो।

शेर—ग्यारह दिन भी क्या अगर बारह बरस भी आ लगें।
प्रान गो जाते रहें सीता धर्म्म से कब डिगें॥
तुमरे इस अभिमान को हरलेगा मेरा नाथ अब।
कोई छिन में मारने लंकेश आता नाथ अब॥

वा०-अरी चांडालनियो अपने व्यभिचारी महाराज की अब कुछ समय में मृत्यु देखना।

राक्षसी—अरी पापनी फिर वही अपवाद भरी बकवाद।

शेर—आज नस नस तोड़ दें मारेंगे ऐसी मार को।
प्रान ले लें आज लंका ले उतारें भार को॥

सीता—अरी डंकनियो जाओ निकल जाओ क्यों मेरे सामने तुम्हारी मृत्यु आई है।

राक्षसी—मारो, मारो। (मारने को तैय्यार होना)

इरा राक्षसी—खबरदार खबरदार।

शेर—बन्दीग्रह में मारना लिक्खा कहां है धर्म में।
है नहीं लिखा कहीं ये क्षत्रियों के कर्म में॥
जो हाथ सती पर चले हाथ वह कट जा।
अन्याय जहां होता रहे पृथ्वी वहां पलट जा॥
परवाह नहीं माता कि गो माया मेरी लुट जा।
चोला मेरा गो आज यह सीता ही पै मिट जा॥
जो शस्त्र हाथ में हो तो, उस हाथ पै लानत।
जो क्रूर दृष्टि आंख हो तो आंख पै लानत॥

वार्ता—खेद, है! खेद है!! एक पतिव्रता सती के साथ यह अनुचित व्यवहार खेद है!!

राक्षसी—ये तेरी हमदरदी हम महाराज से कहेंगी।

इरा राक्षसी—अवश्य कहो अरी बावलियो क्या तुम नहीं जानती।

शेर—छिपती नहीं छिपाये जो हीरे की किरन हो।
शोभा है उसके रक्षा की खाये तो मरन हो॥

सीता—हाय! हाय!! ये क्या अशुभ कर्म उदय हुए मेरे प्राणपति मुझ से दूर हुए।

गाना—पिया आओ दर्श दिखाओ, इस अभागन को आके बचाओ।
हो कहां मेरे स्वामी बताओ, कोई आकर कुशल को सुनाओ॥
अपने मरन होने से पहिले, प्रीतम हाल सुनाओ॥
चारों तरफ यां मार २ है, राक्षस मन कलपाओ॥ पि० आ०॥
चोला छूटे यह सन्मुख तुमरे, तुम घृत दाग लगाओ।
मृतक मेरा छुवे नहीं यहां, कोई ऐसा उपाय बताओ॥ पि०आ०
गो मैं अलग हूं स्वामी तुम से, धर्म न मन से भुलाओ।
धीर वीर हो शूर बीर हो, लंका में घुस आओ॥ पि० आ०॥

हनूमान का अंगूठी डालना सीता का आगे को बढ़ कर उठाना

सीता—हैं ! हैं !! ये क्या ये क्या मेरे पति की अंगूठी है (चौंक कर)

शेर—निशानी है पति की आज ये मेरे सर आंखों पर।
न्योछावर आज क्या करदूं रक्खूं इसको सर आंखों पर॥
हुआ है हर्ष यह मुझको मिली है सम्पदा मेरी।
जो लाया है निशानी को मेरे वो है सर आंखों पर।

(आश्चर्य से अंगूठी को उलट पलट कर देखना)

राक्षसी—अरे हर्ष ! हर्ष ! यह कैसा हर्ष मालूम होता है कि हमारे महाराज से मिलने का हर्ष हुवा है अब मैं महारानी को बुलाकर लाऊं और मन माना ईनाम पाऊं क्योंकि मुझको हुक्म हुवा था कि जब सीता को हर्षित देखो हमको सूचित करो।

राक्षसी का जाना तथा मन्दोदरी आदि का गाना

हुवा हम पर अनुग्रह यह हर्ष मनमें तुम्हारे है।
करो हमपर दया सीता दया मनमें तुम्हारे है॥ हुआ०॥
यहां लंका निवासी सब तुम्हारी आस करते हैं।
बोलो अमृत बचन बोलो दया मनमें तुम्हारे है॥ हुआ०॥
आठ दस सहस्र रानी पर बनो लंका की महारानी।
देखो लंकेश को आनंद दया दिलमें तुम्हारे है॥ हुवा०॥

सीता०—अरी खेचरानी कैसी दया किसकी दया शर्म कर ! शर्म कर !! पतिव्रता होकर शर्म कर आज मेरे स्वामी की निशानी आई है। इस कारण मेरे मनमें खुशी समाई है।

शेर—निशानी नाथ की आई हुवा अब हर्ष है मुझको।
तू पापन बक रही है क्या शर्म आती नहीं तुझको॥

मंदोदरी शेर—यहां ग्यारह दिन व्यतीते हैं बिना अंजुल किये तुझको।
अगन तनमें भड़क उठी और पापन तू कहे मुझको॥

परिन्दा पर नहीं मारे यहां पर आन लंका में ।
जो आवे वे समझ यहां पर गंवावे आण लंका में ॥

वार्ता—अरी तू मूढ़ है जो ऐसा ख्वाब खयाल है याद रख यह ख्वाब ही तेरी जान का जंजाल है तू मृत्यु की मेरी ही बस अब शीघ्र आया काज है ।

सीता—नहीं परवाह सीस को दुधारा सरपे चल जाये ।
धर्म में मारा जाते भी सुहाग मेरा अटल जाये ॥
पाप अंधेर हो ऐसा जमीं लरज़े से हिल जाये ।
रहेगा शील पर कायम यह तन मिट्टी में मिल जाये ॥

वार्ता—ऐ मेरे भ्राता वात्सल्य के धारी शीघ्र आकर प्रत्यक्ष हो, ताकि ताकि मंदोदरी का मान गलत हो । आओ, आओ, आओ ।

मंदोदरी—हैं हैं क्या प्यारी २ आओ, २ है

शेर—भड़क उठी अगन तनमें क्या बहकी बात करती है ।
मानो शरसाम से पागल को भी तू मात करती है ॥
क्या पाला है कबूतर को करी क्या आओ २ सीता ।
यहां नाहर की नहीं शक्ती करी क्या आओ २ सीता ।

दूसरी रानी गाना

मान ले कहना सिया लंका की रानी होजा ।
हटको दे छोड़ सिया सिया सियानी होजा ॥ मान ॥
भाग तेरे हैं खुले ऐश करो मनमानी ।
क्रोध को त्याग सिया ठंडी हो पानी होजा ॥ मान० ॥
कोट शास्त्र का मथन रक्षा करो तन धनकी ।
बोलो बोलो तो सिया मिठी यह बानी होजा ॥ मान० ।
मात पित भी अगर कुछ याद तुझे आते हैं ।
भेजेंगे तुझको सिया आनी व जानी होजा ॥ ॥ मान०

सीता—आओ आओ शीघ्र आओ ।

मन्दोदरी-कवित्त--मूढ़ भई तोहे मूझत नाहीं माण को कौन गवांवत है।
जहां इन्द्र भी लड़कर हार थके यहां कौन पुरुष अब आवत है॥
नहिं शूर वीर दुनिया में है जो आके मात यहां खावत है।
जो आन घुसा यां लंका में निःसन्देह मृत्यु को पावत है॥

सीता—मेरे पति की निशानी लानेवाले भ्राता शीघ्र प्रत्यक्ष हो आओ जीते जीपर मृत का दाग न लगाओ।

हनुमान—(छुपाहुवा) शेर-उपकार कर भयसे छिपे कहिये अधम उसे।
परवा नहीं यहां जान की अब भय लगे किसे॥

वार्ता—बस २ अब मैं सीताके अन्तरंग भाव समझ कर प्रगट होता हूं।

हनुमान का आसमान से उतरना रानियों का आश्चर्य से देखना।

हनुमान—(हाथजोड़कर) नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार है, माता आपके पतिव्रता धर्म को नमस्कार है।

सीता—आनन्द रहो, खुशरहो, चिरंजीव रहो, कहिये भ्राता आपका क्या नाम है कहां धाम है आपकी और मेरे भरतार की कैसे मित्रता हुई मैं सुनना चाहती हूं।

हनुमान—सुनो माता मैं वानर वंश में हूं हनुमान मेरा नाम है वानर द्वीप मेरा धाम है। श्री रामचन्द्र जीने हम वानर वंशियों पर बड़ा उपकार किया है।

शेर—उपकार जो हमपर हुआ वर्णन करें कहां तक।
तन मन बना है सेवक सेवा करें जहां तक॥

वार्ता-सुनो! माता सहस्रमती विद्याधर सुग्रीव का रूप बैतालनी विद्यासे धर कर आया और असली सुग्रीव को मार भगाया सुतारा से विकार भाव प्रकट किया परन्तु श्रीरामचन्द्र ने हमारी पक्षकी और नकली सुग्रीव की विद्या इनको देखते २ ही भाग गई सहस्रमती को मृत्यु हुई और

कहकन्धापुर की ताजशाही असली सुग्रीव को हुई गया हुआ राज फिर हाथ आया सुतारा का पतिव्रत धर्म बचाया और इससे अधिक क्या उपकार होसक्ता है।

सीता—अय भ्राता यह क्या उपकार है। दूसरे के दुख दूर करना यह वात्सल्य धारी मनुष्यों का काम है।

हनुमान—धन्य है धन्य है माता तुम्हारे विचारों को धन्य है।

सीता—और लक्ष्मण जो रण संग्राम में गये थे उन्होने कैसे विजय पाई। अब कहां विश्राम है।

हनुमान—हां हां माता उन्होंने खरदूषण को मार कर विजय पाई अब कहकन्धापुर श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण का स्थान है।

सीता—मुझको आश्चर्य है कि आप समुद्र पार कैसे आये। क्योंकि यह समुद्र तो अनेक जीवन कर भरा हुआ है। मेरे भ्राता सच कहना कि मेरे नाथ को तुम ने कहां देखा। और कैसे देखा, और यह अंगूठी तुम ने कैसे पाई। ऐसा तो नहीं हुआ कि कहीं मेरे नाथ के हाथ से गिर गई हो और तुम ने मेरे पास ला देदी हो।

हनूमान—नहीं, नहीं माता मेरे वचन प्रमाण कीजे वह कुशल से हैं और अंगूठी निशानी के लिए उन्होंनेही दी है धर्म्म को मन में लगाये रखिये यही शिक्षा दी है, और सुनो माता।

चौपाई

रावन अधिक दयालू माता, मुझ को समझ रहा मन भ्राता।
लोक अपवाद का डर वह माने, दयावान करुणा मन ठाने॥
जोधा शूरवीर श्रुत ज्ञानी, जो मैं कहूं माने मन मानी॥
रामचन्द्र ढिग छिन में जाओ, लऊं हुक्म अब तुम सुख पाओ॥

सीता—सुफल हों! सुफल हों!! आपके वचनालाप सुफल हों!!!
परन्तु यह तो कहिये कि तुम सारिखे मेरे भरतार के पास कितने शूरवीर हैं।

मन्दोदरी— हैं हैं।

चौपाई

जानत नाहीं अकल कहां खोई, या सम शूर वीर नहिं कोई।
पवनंजय का पुत्र हनुमन्ता, पुत्र कपुत्र जननि जिन जन्ता ॥
लंक पती का भनज जवांई, दूत बना कहां अकल गंवाई।
भू वासी फिरें दर दर मारे, राम लखन हुए इस को प्यारे ॥

मुझको खेद है कि पवनंजय का पुत्र होकर और लंकपति का भनज जंवाई होकर एक भूप गोचरियों का दूत बन कर आया है कलंक का टीका सर चढ़ाया है।

हनूमान - चौपाई

राजा मय की पुत्री ज्ञानी, पति वरता रावन की रानी।
पर नर रम उपदेश सुनाती, वचन कुशील लाज नहिं आती ॥
विष का भोजन नाथ कराई, व्यभिचारी दूती बन आई।

वार्ता—मुझ को खेद है कि राजा मय की पुत्री और रावन की पटरानी पतिव्रता बनने की अभिमानी एक कुशील कृतघ्नी दुराचारी की दूती बन कर आई है जो कि अठारह हजार रानियों से तृप्त न हुआ, एक विष की बूंद की मन में ठानी है। खेद है। खेद है ॥

गाना—भोजन तरह तरह के करता रहा जो मानी,
विष की डली की फिर भी वांछा है मन में ठानी।
समझे जो विष को अमरत कहते हैं मूढ़ उसको।
जो खा मरण होवसका ज्ञानी हो या अज्ञानी ॥ भोजन० ॥
विषयान्ध हो रहा है भोगों में लिप्त होकर।
तृष्णा न मिटी फिर भी परणी हजार रानी ॥ भो० ॥
राजा मैं की पुत्री, दूती बना कर भेजी,
लाया सिया को हर कर कीनी क्या बुद्धिमानी ॥ भोजन० ॥

वार्ता—बस बस अब मैं रावण की पतिव्रता महिषी को महिषी कहिये भैंस समान जानता हूं। (मन्दोदरी का क्रोध करना)

मंदोदरी शेर—च गन बदला है क्या तुमने तुम्हारी मौत आई है ।
सह.रा छोड़ नाहर का लौ गीदड़ से लगाई है ॥
हुआ सुग्रीव भी मूरख, जो उन से आस करता है ।
वो काल का घेरा है, बस वे मौत मरता है ॥
उन्होंने क्या ये समझा है, जो खरदूषण को मारा है ।
बने शत्रु के तुम सेवक, बस अब हमने विचारा है ॥
नहीं क्या जानता लंकेश, चक्री है धनुष धारी ।
लखन और राम को, परलोक भेजेगा वह बल धारी ॥

सीता—ये कहती है क्या पापन तू अधर्मी है बलम तेरा ।
अभी आता है रण संग्राम को लेकर बलम मेरा ॥
मरेगा नाथ अब तेरा अभी तू सरको फोड़ेगी ।
बनोगी रांड सबकी सब करों से चूड़ी तोड़ोगी ॥

मंदोदरी—बस बस खेंचलो खेंचलो इस पापन हत्यारी की जुबान खेंचलो।

सब रानियों का मारने के लिये तैयार होना हनूमान का रोकना

हनूमान—यह क्या मूर्खता करती हो ।

शेर—अकेली देख बन्दीग्रह में आई मारने को तुम ।
लजाया क्षत्रियों का धर्म। आई ताड़ने को तुम ॥
(बस निकल जावो, चली जावो)

मंदोदरी—पकड़ लंकेश अब रक्खेगा तुझको जेलखाने में।
मजा तुमको मिलेगा अब सिया मे मेलखाने में ॥
बस अब मैं जाती हूं और तेरे मरवाने का इन्तजाम बनाती हूं ।

हनूमान—अच्छा देखा जायगा (मन्दोदरी का जाना)

हनूमान—माता आओ आओ मेरे कान्धे पर सवार होजाओ ।

गाना लेजाऊं रामके ढिग एक छिन में ।
करो दर्शन खुशी होकर के मन में ॥

रावण-कवित्त—जारजात का पूत हुआ पवनञ्जय का ये पूत नहीं ।
अंजना वस निरदोष नहीं थी इस में अब कुछ चूक नहीं ॥
विना सबब काढ़ी नहिं घर से सास ससुर दी थूक नहीं
ओछा है शूद्रों से मिलता पवनञ्जय का (सब) पूत नहीं ।

हनुमान कवित्त--पूत कपूत हुवा राक्षस में केखश्री के कूखहुवा ।
राक्षस बंश विध्वन्श करन को मालश्री के दूत हुवा ।
बुद्धिमान श्रुत ज्ञानी होकर समझे नहीं सपूत हुवा ॥
आप मरे औरन को मारे ऐसा पूत कपूत हुवा ॥

गाना—जाके कुलके उज्जलपन की इन्द्र सभा में महिमा करते ।
पर स्त्री लंपट हुवे ऐसे विष का प्याला पीकर मरते ॥
धृक धृक-जीवन उन प्राणिन का, ज्ञानी होय विवेक न करते ।
पर स्त्री पर झूठ बराबर चक्री पद हो नीयत धरते । जाके० ।
राक्षस कुल के भूषण पहिले मुनि व्रत धार तपस्या करते ॥
अष्ट करम धूल उड़ाकर जाकर शिव रमणी को वरते । जाके० ।
भूले तुम उस शिव रमणी को, कुलकी उज्जलताई हरते ।
भूम गोचरी पर स्त्री पर, पण्डित होकर लड़ लड़ मरते । जाके०
बानर वन्शी दास तुम्हारे इस कारज में साख न भरते ।
सीता ढिग रघुवर के भेजो तन मन हम न्योछावर करते । जाके०

वार्ता—अय रावण कुबुद्धि छोड़ । अनुचित कार्य से मुह मोड़ । हम वानर बन्शियों को सेवा में लीजिये, शत्रू होने का अवसर न दीजिये ।

रावण--अरे ! शत्रू ?

शेर--आज वानर बंश भी रावण का शत्रू होगया ।
भेड़ का बच्चा भी तो नाहर का शत्रु हो गया ॥
बाप दादा जिनके अब तक सेवकाई में मरें ।
पुत्र उनके आज हम से शत्रुताई को धरें ॥
नाम, कुल स्थान का जिनके पता कुछ भी नहीं ।
बाप ने घरसे निकाला राजधानी दी नहीं ॥

सीता—गाना—कहो भ्रात भगनी से सच वचन उन्हें याद हो कि न याद हो
यहां वन्दी ग्रह में मैं दुख सहूं उन्हें याद हो कि न याद हो ॥
मैं बनकी डाली में झूली जब किया आन भौंरें ने दिक गजब।
तो लिया था कर से मुझे उठा उन्हें याद हो कि न याद हो। कहो०
खूनी एक हस्ती आन कर, सनमुख हुवा अभिमान कर।
लगा एक मुष्टि भगादिया, उन्हें याद हो कि न याद हो ॥कहो०॥
चारण मुनी आऐ जहां, आहार पा स्वामी तहां।
चली मंद सुगन्ध हवा तहां, उन्हें याद हो कि न याद हो ॥कहो०॥
चूड़ामणी ले जाइयो, उन्हे जाके हाल सुनाइयो। (चूड़ामणी देना)
परमाद उनकी से दुखसहा, उन्हें याद हो कि न याद हो ॥कहो०॥
उनके यतन से मिलाप हो, यह दुख दूर कलाप हो।
मुझे उनकी याद बनी रहे, उन्हें याद हो कि न याद हो ॥

वार्ता—भ्राता। मेरे प्राण नाथ से कहना कि उनके प्रमाद से वियोग हुवा है अब उनके यतन सेही संयोग होगा। परन्तु धर्मरूपी अमृत को मन से न भुलाना।

हनुमान—श्री रामचन्द्र जी भी केवल आपके दर्शन के अभिलाषी प्राण को लिये हुये हैं।

(ईरा का भोजन लेकर आना)

ईरा—लीजिये २ भोजन तैयार है।

हनुमान—पाइये २ माता भोजन पाइये।

सीता—अच्छा२ मैं भोजन करलूंगी परन्तु तुम यहां से शीघ्र जावो ऐसा नहो कि तुम को संग्राम का भय देखना हो।

हनुमान—माता मैं संग्राम का भय नहीं जानता हूं आप संतोष रखिये यदि आप आज्ञा दें तो कुछ फल बाग से लेकर खालूं क्योंकि यह सकल पृथ्वी में आपकीही जानता हूं।

सीता—कोई हर्ज नहीं खाइये।

(सीता का जाना हनूमान का फल तोड़ना)

हनूमान—(फल तोड़ते हुए) अरे कोई बाग का माली है (मालीका आना)

माली—क्यों क्यों क्यों क्या देखा माली हूं।

हनुमान—लाओ लाओ उमदा २ फल लाओ

माली—जाओ २ हमारे महाराजा से आज्ञा ले आओ।

हनुमान—अरे कौन महाराजा। (पेड़ उखाड़ना)

माली—क्या लंकपती रावण को नहीं जानता। तू देव है या दानो है

दूसरा माली—अरे भगो वो कोई पागल है या दीवाना है॥

हनुमान—(गदा घुमाकर) भागो २ यह सकल पृथ्वी रामचन्द्र जी की है बोल श्री रामचन्द्र जी की जै, (घुमाना)

माली—अरे भागो यह पेड़ उखाड़ कर हमारे पास लाया तो समझो कि इस ने हम को खाया। चलो महाराज रावण को जल्दी खबर करें (जाना)

सिपाहियोंका आना

सिपाही—घुस आया घुस आया यह कौन दुष्ट है जिसने हमारी रानी का अपमान किया है आ आ मौत का मजा पा।

दोनों का गदा घुमाकर लड़ना सिपाहियों का भागना

हनुमान—ठहरो २ जरा ठहरो तो (पेड़ को उखाड़ लेना)

सिपाही—(ताज्जुब से) अरे यह तो कोई देव है जो पेड़ों को भक्षण कर रहा है॥ भागो भागो।

सिपाहियों का भागना मेघनाद का आना

मेघनाद—अरे ! कौन ! हनूमान।

शेर—नहीं आई शरम तुझको, तू आकर क्यों लड़ा बन में।
हमारा आशना होकर, नहीं करता शरम मन में॥

हनूमान—अरे मैं आशना किसका, धरम प्रेमी का प्रेमी हूं।
उन्हीं का दास बन आया, उन्हीं चरणों का प्रेमी हूं॥

मेघनाद—अरे किसका दास आ आ मेरे सामने आ ले मेरा वार रोक।

दोनों का लड़ना अंतको मेघनाद का हार मानकर भागना

हनुमान—(मनमें) मुझको रावण के भी भाव देखने चाहियें।

सिपा०—ठहर २ भाग न जाना इन्द्रजीत नागफांस लेकर आते हैं।

हनुमान—(आने दो शेर) अब नाग फांस में मैं फंसता हूं जान कर।
रावण कुमत में शसतर मारूंगा तान कर॥

इन्द्रजीत—पकड़लो पकड़ लो राज द्रोही को पकड़लो।

दोनों का लड़ना अंत में नाग फांस में हनुमानका फंस जाना

सबका पकड़ना—पकड़लिया पकड़ लिया राजद्रोही को पकड़ लिया।

इन्द्रजीत--चलो ले चलो इसकी मृत्यू आई है

(हनुमान का गिरफ्तार होकर जाना सबका प्रस्थान)
सीता का वज्रोदरी के साथ आना

सीता—हाय, हाय, शोक ! शोक !! महाशोक !!! भ्राता हनूमान वात्सल्य धारी पुन्यात्मा धरमात्मा पुरुप मेरे लिये दुख सह करके नाग फांस में फंस गये।

गाना

सजनी कैसे यतन बनावें, सजनी०
नाग फांस में फंसे हनुमन्ता, क्योंकर प्राण बचावें॥ सजनी०॥
पर उपकारण दुख सहा ये, कैसे मन समझावें॥ सजनी०॥
पैदा होते क्यों न मरी मैं, दुख सतधर्मी उठावें॥ सजनी०॥
शस्त्र गहन स्त्री कर है, हाय ! कैसे शस्त्र वहावें॥ सजनी०॥

वज्रोदरी—मेरी प्यारी सीता क्यों व्याकुल होती हो सुनो।

गाना—नहीं हनुमन्त सा योधा, यां लंका में सुनो सीता। यां लंका०॥
ये वानर वंश के भानू, नहीं राहू सुनो सीता। नहीं राहू०॥
है वीरों में अतुल वीरी, कहें महावीर भी इसको।
तुड़ाकर बन्धनों को छिन में जागा, तुम सुनो सीता॥ नहीं०
गिरा वीमान से माता के ये, बालक अवस्था में।
करूं तारीफ क्या चूरण हुवा पत्थर सुनो सीता॥ नहीं०॥
कोट विध्वंश कर ढाया, वज्रमुख मार कर आया।
परण ली लंका सुन्दरी को, विजय पाकर सुनो सीता॥ नहीं०॥
कहां चम्पा चम्बेली बाग से, चम्पत हुई जाकर।
उखाड़े पेड़ मन्दिर कैसे कैसे अब सुनो सीता। नहीं०।

सीता—हैं, हैं, तो क्या ये पेड़ हनुमान ने उखाड़ डाले हैं।

वज्रोदरी—जी हां यह सभी उन्होंने अपनी भुजा से तोड़ डाले हैं।

सीता—धन्य है, धन्य है हनुमन्त भ्राता तुझ को धन्य है॥ आनन्द रहो खुश रहो, चिरंजीव रहो।

वज्रोदरी—चलो चलो कहीं ऊंची जगह चढ़कर हनुमान का भाक्रम देखें।

सीता—चलो चलो बहन शीघ्र चलो। दोनों का जाना

चौथा परिच्छेद २३ सीन

रावण का दर्बार

रावण शेर—कहो इन्द्रजीत से जाकर फंसाये नाग फांसे में।
पकड़ लाये यहां तक उसको देकर दम दिलासे में॥
करूंगा कत्ल मैं उसको नहीं दिलमें दया लाऊं।
गो था वह आशना मेरा स्वान से खाल खिचवाऊं॥

सेनापती से

सेनापति जाओ शीघ्र जाओ इन्द्रजीत से कहआओ कि हनूमान को नाग फांस में फंसा लाये।

सेनापति सर झुकाकर

सेना०—अच्छा महाराज अभी जाता हूं। (प्रस्थान)

मंत्री—श्री महाराज हनूमान राम का भेजा आया है। उसीने माया मई कोट ढाया है।

शेर—कोट को तोड़ डाला है, वज्रमुख मार डाला है।
दया अमृत पिलाकर, आसतीं का सांप पाला है॥
इन वानर वंशियों को आप, जहरी सांप अब जानो।
नहीं इनपर दया अच्छी, मेरे महाराज अब मानो॥
बनी लङ्कावती पतनी, मारा था पिता जिसने।
हुई दोनो में चाह कैसे, भुलाया दुख पिता उसने॥

माली०—दुहाई है दुहाई है।

मंत्री—क्या आफ़त आई है?

माली—श्री महाराज बाग़ को विध्वंस कर डाला।

कवित्त

फूल गुलाब चंबेली चम्पा चुन चुन के सबही तोड़े।
सेव नारंगी आम फालसा मार मार सरसे फोड़े॥
जामन पीपल आम बबूला, जड़ से मूल उठाकर छोड़े।
मार मार करता फिरता है, सबके शीस घुमाकर फोड़े॥

मन्त्री—अच्छा सुन लिया।

सिपाहियों का आना

सिपाही—लंकपती तेरी दुहाई है।

रावण – क्यों बहक रहे हो क्या तुम्हारी शामत आई है।

सिपाही

दोहा—दुनिया में ऐसा पुरुष देखा नहीं बलवन्त।
नज़र नहीं हमको पड़ा, जैसा है हनुमन्त॥
वह जोधा और लड़ाका है गोया शमशीर उसी की है।
अब समझ रहा है लंका को गोया जागीर उसी की है॥

मेघनाद – श्री महाराज शत्रु बलवान है।

रावण—क्या बकते हो मेरे ये कान अब सुनते नहीं।
जाओ २ लो पकड़ अब क्यों खड़े सुनते नहीं॥

आवाज़—पकड़ लिया पकड़ लिया राजद्रोही को पकड़ लिया।

रावण – शाबाश बेटा शाबाश (इन्द्रजीत का पकड़ कर लाना)

शेर—बांधलो जंजीर से जकड़ो बदन को इस तरह।
पारधी मानो हिरन को कत्ल करता जिस तरह॥
खेंचलो बस खेंचलो चुकटी से खींचो खालको।
आंख फोड़ो हाथ तोड़ो मारदो चाण्डाल को॥

मन्त्री—खेद है। हनुमान तेरी बुद्धि पर खेद है।

शेर—जो कृपा महाराज की थी सब भुलादी जानकर।
स्याल का शरणा लिया भूले हो क्यों अभिमान कर॥
होगया विध्वंश वानर वंश अब तुम जानलो।
अब भी रक्खो कुछ समझ मेरे वचन सच मानलो॥

वार्ता—बस बस अब तुम राज दर्बार के द्रोही हो निग्रह करने योग्य हो

हनूमान—(हंसकर) हैं हैं न जानिये किसका निग्रह हो।

शेर—वंश राक्षस को बचाओ तुमको हमसे क्या गरज़।
काल सर पर घूमता पैदा होवें क्या २ मरज़॥

रावण-कवित्त—जारजात का पूत हुआ पवनञ्जय का ये पूत नहीं ।
अंजना वस निरदोप नहीं थी इस में अब कुछ चूक नहीं ॥
विना सवव काढ़ी नहिं घर से सास ससुर दी थूक नहीं
ओछा है शूद्रों से मिलता पवनञ्जय का (सव) पूत नहीं ।

हनुमान कवित्त--पूत कपूत हुवा राक्षस में केखश्री के कूखहुवा ।
राक्षस वंश विध्वन्श करन को मालश्री के दूव हुवा ।
बुद्धिमान श्रुत ज्ञानी होकर समझै नहीं सपूत हुवा ॥
आप मरे औरन को मारे ऐसा पूत कपूत हुवा ॥

गाना—जाके कुलके उज्जलपन की इन्द्र सभा में महिमा करते ।
पर स्त्री लंपट हुवे ऐसे बिष का प्याला पीकर मरते ॥
धृक धृक-जीवन उन प्राणिन का, ज्ञानी होय विवेक न करते ।
पर स्त्री पर झूठ बरावर चक्री पद हो नीयत धरते । जाके० ।
राक्षस कुल के भूषण पहिले मुनि व्रत धार तपस्या करते ॥
अष्ट करम धूल उड़ाकर जाकर शिव रमणी को वरते । जाके० ।
भूले तुम उस शिव रमणी को, कुलकी उज्जलताई हरते ।
भूम गोचरी पर स्त्री पर, पण्डित होकर लड़ लड़ मरते । जाके०
बानर वन्शी दास तुम्हारे इस कारज में साख न भरते ।
सीता ढिग रघुवर के भेजो तन मन हम न्योछावर करते । जाके०

वार्ता—अय रावण कुबुद्धि छोड़ ! अनुचित कार्य से मुह मोड़ । हम वानर बन्शियों को सेवा में लीजिये, शत्रू होने का अवसर न दीजिये ।

रावण--अरे ! शत्रू ?

शेर--आज वानर वंश भी रावण का शत्रू होगया ।
भेड़ का बच्चा भी तो नाहर का शत्रु हो गया ॥
बाप दादा जिनके अब तक सेवकाई में मरें ।
पुत्र उनके आज हम से शत्रुताई को धरें ॥
नाम कुल स्थान का जिनके पता कुछ भी नहीं ।
बाप ने घरसे निकाला राजधानी दी नहीं ॥

कुछ समझ करके ही तो बनवास रघुवर को दिया।
सेवकाई छोड़कर मूर्खों ने आ शरणा लिया।
दीन दरिद्री की तरह दर दर फिरें मारे हुये।
आगई मृत्यु तुम्हारी शत्रु के प्यारे हुये॥
एक सीता पर मुझे भूले हो स्वामी जान कर।
लाख सीता सी वरूं मारूं कटारी तान कर॥
गेंद सी पृथ्वी घुमाकर फेंक दूं आसमान को।
सूरज चन्दा-तोड़ लूं तारे सहे अपमान को॥
मैं अगर चाहूं बुझाऊं आगको काफूर से॥
बांध अब डालूं पवन सुत रस्सियों के चूर से॥

हनुमान-वार्ता—अभिमान! अभिमान!! रावण तू अभिमानी है!!!
तूने एक पतिव्रता स्त्री का धर्म लेने की मन में ठानी है।

शेर—मान की पी कर मधु को होगया बेताब तू।
शील संयम त्याग कर भोगेगा बस संताप तू॥
मान सूरज करता है आकाश में चलते हुवे।
शाम को देखा है हमने आड़ में छिपते हुवे॥
अभिमान वश गो बोझ से पृथ्वी घमंडी देखली।
भय से भूकम्पके कांपे कांपती भी देखली॥
काले काले आके बादल गड़गड़ाते मान से।
सामने हरगिज न ठहरें पवन सुत के बान से॥
नाम से या गांव से हम को गरज कुछ भी नहीं।
धर्म पै मरते हैं बस हमको मरज कुछ भी नहीं॥
है नहीं सीता से रिश्ता और ना कुछ राम से।
शील की रक्षा करें बस गरज है इस काम से॥
सेवकाई में रहे जब तक धर्म का लेश था।
रात दिन मरते फिरें हमरा फकीरी भेष था॥
अब नहीं वह भेष है और ना हमारी चाल है।
वानर वंशी को खड्ग से राक्षसों का काल है॥

काल का मेरा है तू जोधान को लेकर मरें।
कुछ समय में राम सैना ले के लंका में लरें ॥

रावण शेर—हाथ से अपने करूंगा कृत्ल तुझको आज मैं।
तेरे रघुवर नाथ का देखूं पराक्रम आज मैं॥
सेनापति सुनो !

सेनापती—श्री महाराज !

रावण वार्ता—देखो प्रथम तो इसको लंका के चारों दिशा में फेरो और कहो कि भूम गोचरियों का दूत बनकर आया है सजायें मौत को पाया है। फिर मैं अपने हाथ से इसका सर बिदारूंगा। मनका खेद निवारूंगा।

शेर—खर पै इसको दो चढ़ा हो काला मुंह चाण्डाल का।
मारो मारो लो खबर पापोश से पामाल का॥

हनूमान शेर—क्यों बहकता है ज़ुबां को थाम ले मदहोश तू।
देख ये फांसा नहीं है रख ज़रा अब होश तू॥

(झटका मार कर)

एक दम आसमान में उड़ना बंधनों का टुकड़े २ होना लंका के शिखरादिक का धमाधम हनूमान का पैरों से गेरना तथा सीता महारानी का ऊंची जगह चढ़ कर पुष्प बृष्टी करना रावणादिक का अचम्भे में होकर ऊपर को देखना सबका मुतहैय्यर होना

ड्राप सीन

पांचवां परिच्छेद-चक्री-दमन

प्रथम दृश्य-पर्दा महल

रामचन्द्र जी का बैठे दिखाई देना हनुमान का आना

हनुमान—जय हो जय हो रघुपति महाराज की जय हो।

राम—कहिये कहिये भ्राता प्राण प्रिया को जीता देखा।

हनुमान—श्रीमहाराज सती सीता कुशल पूर्वक हैं।

राम—आपने बड़ा अनुग्रह किया सुनिये।

शेर—चरण तुम्हरे जो पृथ्वी पर पड़े वो आंख पर मेरे।
करूं तुमरी प्रशंसा क्या, बसे हो आंख पर मेरे॥
फंसा हूं इस अवस्था में, नहीं उपकार के काबिल।
ज्यों दलदल में फंसा हस्ती, नहीं सामर्थ्य के काबिल॥
तुम्हारी रखने हमदर्दी, इन आंखों में मगर लाऊं।
मिले नहीं मित्र तुमसा मैं, हजारों जन्म भी पाऊं॥

वार्ता—अय मेरे मित्र प्राण प्यारी की खबर लाने वाले, इस अशुभ कर्म के सताये हुये शरीर से स्पर्श हो।

हनुमान—श्रीमहाराज धैर्य्य धारण कीजिये सुनिये सीता महारानी की अवस्था सुनाता हूं।

गाना।

सीता सम सतवन्ती नार दूसरी न कोई।
राक्षस दुख देत हैं शीलवती सह लाई
मेरु समान मातु मन, हिला सका न कोई ॥ सीता सम० ॥

राम राम की लागी टेर, सती को बिपता ने लीनी घेर।
बिपता हरो अनाथ–नाथ, दूसरा न कोई ॥ सीता सम० ॥
न्याय रहित लंकेश है, दया न हृदय लेश है।
बिना किये संग्राम यतन, दूसरा न कोई ॥ सीता सम० ॥

वार्ता—श्रीमहाराज बिना संग्राम किये सीता का आना महाल है।

रामचन्द्र—अच्छा अच्छा फिर क्या ढील ढाल है। अय सुग्रीव संग्राम के लिए तैय्यार होजाओ और जगह २ भामण्डल आदि पर दूत पठाओ।

सुग्रीव—(मौन धारण करता है)

लक्ष्मण—हैं हैं यह खामोशी क्यों?

शेर—है रसना इन्द्री मुह में, फिर भी तुम खामोश होते हो।
बचन संग्राम के सुन २ के, तुम बेहोश होते हो।

सिंहोदर विद्याधर का गाना

हमारे वानर बंशी, आप के सब दास हो बैठे।
कहोगे वो करेंगे जब, तुम्हारे पास हो बैठे ॥
है चक्री आज कल रावन, उड़ादे छिन में बानर बंश।
करो रक्षा हमारी हम, तुम्हारे दास हो बैठे ॥ हमारे० ॥
बरो कन्या हमारी सैकड़ों, सीता सी सम लख कर।
न वारो एक पर लाखों, तुम्हारे दास हो बैठे ॥ हमारे० ॥

चन्द्र मारीच का गाना

गजों से डर के भागे सिंह, ये अचरज है बड़ा भारी।
नहीं जाने हो रघुवर को, ये अचरज है बड़ा भारी ॥
पराक्रम राम लक्ष्मन के, नहीं अब तक क्या देखे हैं।
परीक्षा ले के शंका हो, यह अचरज है बड़ा भारी ॥
लड़ो संग्राम में जा के, दिखाओ मुंह विजय पा के।
हो क्षत्री रन से डरते हो, ये अचरज है बड़ा भारी ॥

हमारी धर्म की है पक्ष, गर ये जान भी जाये।
डरो अन्याई रावन से, ये अचरज है बड़ा भारी॥

सुग्रीव—श्री महाराज आज्ञा हो हम लोग संग्राम के लिए तय्यार हैं।

लक्ष्मण—अच्छा भामंडल वगैरह पर दूत पठाओ।

सुग्रीव—अय दूत।

दूत—श्री महाराज।

सुग्रीव—देखो शीघ्र जाओ और भामंडल, सिंहोदर वज्र करण, भूतनाथ आदि सबको लंका पर रामचन्द्र की चढ़ाई की खबर देकर अपने साथ लाओ।

दूत—अच्छा महाराज अभी जाता हूं (जाना)

(सब का मिलकर गाते हुए जाना)

मारो मारो सब मिल मारो, पापी नाहंजार।
न्याय रहित है शील रहित है, पाजी मूढ़ गवांर॥
अन्याय ये किया, सत वन्ती दुख दिया।
व्यभिचारी बन गया, कुमता से नेह किया शीश उतार॥ मा०॥

(प्रस्थान)

पांचवां परिच्छेद दूसरा दृश्य

रावण का दर्बार

(रावन, विभीषण, कुम्भकरण, और इन्द्रजीत का बैठे दिखाई देना।

द्वारपाल—श्री महाराज सावधान सावधान।

मंत्री—क्यों क्यों क्यों क्या है।

द्वारपाल—श्री महाराज लंका के चारों ओर शत्रु की सेना है।

मंत्री—कौन शत्रु।

द्वारपाल—वे ही रामचन्द्र और लछमन वानर वंशियों की बड़ी भारी सेना लेकर आए हैं।

रावण—कोई हर्ज नहीं उनके मन में संग्राम की समाई है तो समझो उन की मौत आई है।

शेर—चले अमृत के अभिलाषी, सर्प के मुंह से लेने को।
मगर के पेट में प्रवेश करते, जान देने को॥
अय बहादुरो संग्राम के लिये तैयार होजाओ।

विभीषण—सुनिये श्री महाराज।

गाना—राक्षस वंशी तारागन में, भानु दिवैया तुम ही तो हो।
तीन खंड के स्वामी होकर, धर्म धरैया तुम हीं तो हो॥
न्याय सहित सब कार्य करो, अन्याय न शोभा देता है।
कुल रूपी सागर के अन्दर, कमल खिलैया तुम हीं तो हो॥
जग निन्दा का भय अति मानो, मन में धरो विवेक जरा।
अरे टेक हमारे कुल की राखो, टेक रखैया तुम ही तो हो॥
रघुवंश में रामचंद्र, और राक्षस वंश में आप बड़े।
सीता को रघुवर ढिग भेजो, शील धरैया तुम ही तो हो,॥

शेर—जान भी जाये सती का सत बचाना चाहिये।
दिल हुआ मायल वहां से दिल हटाना चाहिये॥
क्वांरी कन्या पर अवश्य लड़ना लड़ाना चाहिये।
शत्रु परबल हो अगर चक्र को घुमाना चाहिये॥
झूठी परस्त्री हुई मन से भुलाना चाहिये।
धर्म रूपी शील ये मन को पिलाना चाहिये॥
इस में शोभा चक्र देगा और न लड़ना आप को।
राम लखन का मारना उनका न मरना आप को॥

इन्द्रजीत—बे बुलाये बोलना नीति के ये अनुसार है।
राज कारज में दखल दो तुम को क्या अधिकार है॥
आप गर कायर हुए तो द्वार बैठो बन्द कर।
ना सहा जनता यहाँ कां पर नसीहत बन्द कर॥

विभीषण—विनाश काले विपरीत बुद्धी।

शेर—बाप तो तेरा हुवा व्यभिचारी मेरे सन सपूत।
शील संयम छोड़कर के क्यों बने है तू कपूत॥
डोला कारी का किसीका लेना शत्रु मार कर।
अरे मार है ये मार है रखते हो जिसको प्यार कर॥
धनके व्यभिचारी न वारो लंका अपनी जान कर।
एक भी बचना नहीं मारे लखन सर तान कर॥

रावण—क्यों बहकता है होश में आ बच्चे को न धमक, सुन मैं तुझको सुनाता हूं।

गाना—घमण्डी जो जो दुनिया में हुए पैदा उन्हें मारा।
जो सन्मुख हो लड़ा रन में जमी अन्दर उन्हें तारा॥
न जाना राम लक्ष्मन आज तक लड़ना कभी रन में।
फकीरी भेष दोनों का है छिन भर में उन्हें मारा॥
हुवा हूं चक्रवर्ती मैं सकल वस्तु का स्वामी हूं।
नहीं अधिकार सीता का जो रखेगा उसे मारा॥
घुमाया कन की उंगली पर उठा कैलाश को मैंने॥
इन्द्र राजा था किस बलका छिन भर में उसे मारा।

विभीषण—किसी बेकस को अय बेदाद अगर मारा तो क्या मारा।
जो आपही मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा।
न मारा आप को जो खाक हो अकसीर बन जाना।
अगर पारे को अय अकसीर गर मारा तो क्या मारा।
बड़े मूजी को मारा नफ्स अम्मारा को गर मारा।
निहंगो अजदहा औ शेर नर मारा तो क्या मारा॥

हंसी के साथ यहां रोना है मिस्ले कुल कुले मीना।
किसीने कह कहा अय बे खबर मारा तो क्या मारा॥
उठाया कोह उंगली पर हरा मन काम वालों ने।
इन्द्रराजा सा अय रावन अगर मारा तो क्या मारा।
वो है मजलूमा जिस की आह से शोला निकलता है।
लगाके अग्नि लंका में अगर मारा तो क्या मारा।

वार्ता—श्री महाराज शान्ति कीजिये शान्ति कीजिये विवेक रूप सुमता से काम लीजिये और श्रीरामचन्द्र जी को बुलाकर सन्धी कर लीजिये सती सीता को वापिस देकर शरण लीजिये।

दर्बारियों का उंगली उठाकर एक नज्जारा दिखाना

रावण—अरे मूढ़! शरण! कैसी शरण किसकी शरण।

शेर—नहीं ये शूरवीरी वो शरण शत्रु के जायेगी।
नहीं ये आंख की पल्कें कभी नीचा दिखाएंगी॥
जवांमर्दी ही राक्षस वंश की बस मनको भाएगी।
लखन और राम दोनों को काल मुख बनके खाएगी॥

अरे पाखंडी महापापी—

कुलको दाग लगाने वाला तू है......या......मैं
शत्रु की शरण जाने वाला तू है......या......मैं
राक्षस वंश को नीचा दिखाने वाला तू है......या......मैं
राम लखन से डरने वाला तू है......या......मैं

गाना

मैं जोधा अति बलधारी हूं, विद्या में बलकारी हूं।
मैं जन्तर, मन्तर, अन्तर, तन्तर, जानू हूं मैं जानू हूं॥
क्या मुझे नहीं पहिचाना, जो शत्रु का भय माना।
भुजबल से बचकर जाना, मुश्किल है राहत पाना॥
असुर मई शस्त्रों का भी बलधारी हूं बलधारी हूं॥ मैं०॥

विभीषण का गाना

रुधिर से बहते हुये भाइयों ही के सर देखोगे ।
रोती विधवाओं को देखोगे जिधर देखोगे ॥ देखोगे० ॥
लखन और राम सेना से लड़ेंगे जिस दम।
होगा लाशे पे ही लाशा वां जिधर देखोगे ॥ रुधिर० ॥
जगत में कोई नहीं कुल की प्रशंसा करता ।
होता अपयश ही तुम देखोगे जिधर देखोगे ॥ रुधिर० ॥
न्याय वंत छंद कवी जोकि बनावें कविता ।
देते इस कुल पै ही आक्षेप जिधर देखोगे ॥ रुधिर० ॥

विभीषण—बस बस ऐ राजन् कुबुद्धि दूर कर।

शेर—हमेशा अपनी वस्तु ही प्रशंसा योग्य होती है।
नहीं कुछ काम की सिद्धी पर वस्तु से होती है।

रावण शेर—मैं अच्छी वस्तु का स्वामी हूं पर वस्तु हुई कैसे।
मुझे अधिकार रखने का है पर वस्तु हुई कैसे ॥
अरे मूढ़ ! राज लक्ष्मी पृथ्वी जन के वास्ते ।
प्राण तक देते हैं इनके वास्ते ॥
प्रेमी शत्रु आज तू लड़ता है जिनके वास्ते ।
द्वार दोज़ख का खुला है कहदो उनके वास्ते ॥

विभीषण—करलो करलो, सन्धि करलो, जब तक कि सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण का बाण कमान पर चढ़े और रामचन्द्र सगरावर्त धनुष को न टंकोरें तब तक करलो और देखो भामण्डल हनुमान सुग्रीव सिंघोदर आदि चतुरंग सेना सहित लंका में प्रवेश न करें तब तक सन्धि करलो ।

रावण—अरे पापी क्या बकता है मेरी सेना को कायरता के बचन सुनाता है (तलवार निकाल कर) बस बस अब मैं तेरी जान लूंगा प्रथम तुझको ही जमका द्वार दिखाऊंगा ।

विभीषण—आ आ धर्म द्रोही आ मौत का मजा पा ।

थम का उपाड़ना

शेर—घाव तन मन में लगें परवाह नहीं है जानकी ।
धर्म की भगनी है दुख तुझको न पहुंचे जानकी ॥
धर्म में चोला छुटे दुख दूर होवें जानकी ।
शील संयम रह सती जय जानकी हो जानकी ॥
बोल सियावर रामचन्द्र की जय (थम घुमाना)

रावण—अरे दुष्ट तू शत्रु का दम भरता है जो राम लखन की विजय चाहता है पापी अभी तुझे जमका द्वार न दिखाऊं तो रत्नश्रवा का पूत न कहलाऊं ।

दोनों का लड़ना

मन्त्री—श्री महाराज ये क्या करते हो ।

कुम्भकरण—अय भ्राता ! भ्राता ! पर हाथ न उठाइये मनको समझाइये

रावण—कुम्भकरण सुनो मैंने यह प्रतिज्ञा करी है कि अगर ये विभीषण लंका में रहा और इसे मैं न मारूं तो रत्नस्रवा का पूत न कहलाऊं इसलिये निकालदो निकालदो लंका से काला मुंह करके निकालदो ।

विभीषण—अरे दुष्टात्मा मुझको क्या निकालेगा ।
निकल जो खुद ही जायेगा मुझे वह क्या निकालेगा ।
करे अन्याय जो राजा उसे बस पाप खायेगा ॥

रावण—इस जबान जोरी का तुझको मजा न चखाऊं तो रावण न कहलाऊं

विभीषण—और मैं भी यदि तुझको नीचा न दिखाऊं तो रत्नस्रवा का पूत न कहलाऊं ।

प्रस्थान

पांचवां परिच्छेद तीसरा दृश्य
रामचन्द्र जीका कटक

द्वारपाल—सावधान सावधान श्रीमहाराज सावधान द्वार पर शत्रु की सेना आई है।

सेनापति—कौन कौन राजा आया है।

द्वारपाल—श्रीमहाराज महाराजा विभीक्षण तीस अक्षौहिणी सेना लेकर और सेनापति की पदवी ग्रहण करके संग्राम के लिए आया है।

सुग्रीव—शोक है कि प्रथम विभीक्षण महाबली तीस अक्षौहिणी दल लेकर आया है अन्याय रूपी खड्ग लेकर प्रथम धर्मात्मा ने ही सर उठाया है श्री महाराज ये अति बलवान है हम वानरवंशियों को इससे विजय पाना महाल है।

लक्ष्मण—क्यों क्यों क्यों हिरास होते हो।

शेर—उड़ाऊं एक ही मैं तीर से शत्रु के झुण्ड ऐसे।
हवा के ज़ोर से आस्मान में बादल उड़ें जैसे॥

हनुमान—मुझको भी आश्चर्य है कि विभीक्षण नीतिवान् सकल गुण-निधान ने ये क्या अनुचित कार्य किया।

राम—नहीं अन्याय से लड़ना चाहे तन से जुदा हो सर।
धर्म की पक्ष हर जा हो चाहे तन से जुदा हो सर॥
अप शूरवीरो शूरवीरता से काम लो।

सुग्रीव—बस बस संग्राम के लिये तैय्यार होजाओ।

द्वारपाल—श्रीमहाराज द्वार पर विभीक्षण का दूत आया है कुछ समाचार लाया है।

राम—अच्छा आने दो।

दूत—जय हो जय हो रघुपति महाराज की जै हो।

(दर्बारी लोगों का आश्चर्य में कहना) यह जय कैसी

राम—अरे दूत क्या समाचार लाया है।

दूत—श्रीमहाराज आपके चरण रूपी कमल के भ्रमर महाराज विभीक्षण कृपादृष्टि चाहते हैं और आप जैसे सज्जन पुरुष धर्मात्मा के शरणागत होकर मिलना चाहते हैं।

राम०—अय दूत यह तू क्या विमुख वचन कह रहा है। तेरे बचन राजनीति के प्रति कूल हैं। क्योंकि राजा विभीक्षण संग्राम के लिये आए हैं या मुझ से मित्रता करने आए हैं।

दूत—श्री महाराज मित्रता।

राम०—वो कैसे।

दूत—सुनिये।

गाना

सती धर्म मेरी को दुःख ये सुना सुन के सीना फ़िगार है।
पतिव्रता माता को कष्ट ये सुना सुन के सीना फ़िगार है॥
लाया हर के सिया को जिस घड़ी उभयो लड़ाई हो पड़ी।
वन्दीग्रह में जा के रुदन सुना सुना सुन के सीना फ़िगार है॥
कहा अन्याय भ्राता ये क्या किया तू ने कुल को दाग ये दे दिया।
तो कहा के वस्तु है मेरी ये सुना सुन के सीना फ़िगार है॥
हनूमान के कहने से फिर समझाने रावण को गये।
आया मारने कहे दुर्बचन सुना सुन के सीना फ़िगार है॥

वार्ता—श्री महाराज जब से लंका में रावण सीता महारानी को हर कर लाया है तब ही से हमारे महाराजा विभीक्षण और रावण की बिगड़ी हुई है और आज तो सर्वथा ही आपस में विरोध हो गया है। इस लिए श्रीमहाराज शरणागत को शरण लीजिये निराश न कीजिये।

राम०—अच्छा जैसा कहोगे होगा। जाइये आराम कीजिये।

दूत—अच्छा महाराज शीघ्रता कीजिये। (जाना)

रामचंद्र—अय मंत्री गणों अपने अपने भाव प्रगट करो क्योंकि शत्रु का ऐसा अचरज भरा दूत देखना क्या सुनने में भी नहीं आया।

सुमति कान्त शेर—शत्रु की बहुत चाल हैं आना नहीं अच्छा।
राजा विभीषण यहां पै बुलाना नहीं अच्छा॥
जल और कुल की एक ही आदत हो हमेशा।
दोनों को भिन्न भिन्न बताना नहीं अच्छा॥
शत्रु ने कपट करके लघु भ्राता पठाया।
सेना सहित वो आया है आना नहीं अच्छा॥
गर मित्रता करनी ही थी सेना को क्यों लाया।
इस से प्रगट यह होता है आना नहीं अच्छा॥

रामचंद्र—बेशक ये तुम सच कहते हो परन्तु दूत की चेष्टा व भाव वचनालाप से कोई कपट या ईर्षा भाव नहीं टपकता। कहिये कहिये मंत्री जी आप भी अपने भाव प्रगट कीजिये।

मति सुभद्र (दूसरा मंत्री)

शेर—शरणागत को शीघ्र ही शरणें बुलाना चाहिये।
क्षत्रियों का धर्म है उस को निभाना चाहिये।
मुखतलिफ़ हैं राय दोनों की सुनी आती है यह॥
सच है कहना दूत का मेरी समझ आती है यह॥
धर्म शासन जैन से धोया है जिसने पाप को।
कहता हूं मैं ये क़सिमया धोखा न देगा आप को॥

राम—क्यों हनूमान क्या समझ में आती है।

हनुमान—श्री महाराज राजा विभीषण तो आप के चरणारविन्द का सेवक है गो आप को प्रत्यक्ष नहीं देखा परन्तु परोक्ष में आप के गुण श्रवण कर कर के रोमांचित होता है। श्री महाराज आप विभीषण को रावण का भ्राता समझ कर अपना तथा धर्म का शत्रु न समझिये।

किसी ने कहा है ।

दोहा—एक गर्भ से ऊपजे, सज्जन दुर्जन येह ।
लोह कवच रक्षा करे, षांडा खंडे देह ॥

राम—द्वारपाल !

द्वारपाल—श्री महाराज ।

राम—विभीक्षण के दूत को हाजिर करो ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज अभी बुलाकर लाता हूं । (हाजिर करना)

दूत-विभीक्षण—जय हो रघुपति महाराज की जय हो कहिये क्या आज्ञा है ।

राम—सेनापति की तरफ (देख कर) सेनापति जाओ शीघ्र जावो और दूत के हमराह जाकर राजा विभीक्षण को वाइज्जत दरबार में लाओ ।

सेनापति—अच्छा महाराज जो आज्ञा (जाना)

विभीक्षण को लेकर आना

विभीक्षण—पूजन आया आप के चरणाबिन्द महाराज ।
धर्म वृद्धि होतीरहे राघो पति महाराज ॥

रामचन्द्र जी का खड़े होकर बगलगीर होना

राम—आइये आइये तशरीफ लाइये ।

विभीक्षण—अनुरागी सत लक्ष हों और न कछु है राग ।
राघो पति दर्शन हुऐ खुले हमारे भाग ॥
तन मन धन सब आप का बना विभीक्षण दास ।
इस भव के स्वामी तुम्हीं, शरणागत की आश ।

गाना—राघो नाथ तुमरे हाथ शरण है तिहारी । प्रभु० रा०
सुमति धरन कुमति हरण सुर असुर मिल पूजत चरण ॥
साम्य भाव मंगल करण शिवनन्द के विहारी ॥ प्रभू० रा० ॥

करम, धरम, शरम, भरम, महिमा अपूर्व उत्तम परम।
निकट भव्य उत्तम चरम मुक्ति के सुरागी। प्रभु० रा० ॥

शेर

निकालो खाल इस तन से चाहे जूता बना डालो।
नहीं इन्कार इस को है सरे वस्ती भुना डालो ॥
तीस अक्षौहिणी दल आपकी सेवा में लाया हूं।
लड़े रावण की सेना से यही मैं सोच आया हूं ॥
श्री महाराज आपका नौकर हूं चाकर हूं चाकर का भी चाकर हूं।
(घुटना मोड़कर) शरण लीजिये कृतार्थ कीजिये ॥

राम—राजन् ये क्या करते हो (सुनो)

शेर—मेरे भी यह प्रतिज्ञा है, करूं लङ्का पति तुम को।
फकत सीताही लेनी है, नहीं पर्वाह कुछ मुझको।
भविष्यत काल में युवराज पद हम तुम को देते हैं ॥
बनावें लंकपति तुम को अभी टीका चढ़ाते हैं ॥

टीका चढ़ाना

अब रामसगरियां गावो और महाराज विभीषण के लंकपति होने की नै गम नय की अपेक्षा खुशी मनावो।

आवाज का होना भामण्डल का आना और देखो भामण्डल के आने की भी खुशी मनाओ रामशरिगयों का गाना

हम को सुनइयो जिन वाणी महाराज।
जो मोरे सैय्यां तीरथ को जइयो हमको ले जइयो महाराज। मोरे महराज०
जो मोरे राजा पूजा करो तुम हमसे करइयो महराज। महाराज मोरे०
स्त्रीलिंग को किस विध छेदूं हमसे बनइयो महाराज। महाराज मोरे०
जो मोरे सय्यां मुक्ती को जइयो बय्यां गह लीजो महाराज। महाराज०

पांचवां परिच्छेद चौथा दृश्य

पर्दा रणभूमि

रावण की सेना की परस्पर वार्ता

प० सिपाही—कहिये कहिये महाराज लंक पति का क्या रंग ढंग है।

दू० सिपाही—अरे मित्र क्या सुनोगे ढंग कुढंग है।

सुनो गाना—वही है चाल बेढंगी जो पहिले थी सो अब भी है।
वही रफ्तार बेढंगी जो पहिले थी सो अब भी है॥
विभीक्षण दीर्घ दर्शी जा खिला शत्रु की सेना से।
सुनी गुफ्तार बेढंगी जो पहिले थी सो अब भी है॥
धर्म और कर्म को जाने नहीं सीता पै मोहित है।
वही हैं त्योरी बेढंगी जो पहिले थी सो अब भी है॥

वार्ता—मित्र मेरी समझ में तो लंका का अन्तिम समय होने वाला है।

दू० सिपाही—तभी तो श्रीरामचन्द्र जी ने हाथ डाला है देखिये एक हनूमान ने आकर लंका में क्या उपद्रव मचाया है मन्दोदरी का मान दलित किया बड़े बड़े मन्दिरों और द्वारों को ढा कर खाक में मिला दिया।

चौथा—और लक्षमन ने खरदूषन को मार कर पाताल लंका का राज विराधित को दिया। सूर्य हस्त खड़ग सहज ही में सिद्ध किया। अवश्य यह कोई महान पुरुष है।

पांचवां—हैं हैं (हंसता है) अरे क्या मूर्खता सोच रहे हो हमारे महाराज का चार हजार अक्षौहिणी दल है और उनके केवल दो ही हजार अक्षौहिणी दल है सो भी मांगा हुआ है। झोली खप्पर हाथ में है।

शेर—मांगी पूंजी और सेना से अमर दुरवार है।
क्या करेगी हाथ में जब (सत्र) काठ की तलवार है॥

हस्त प्रहस्त सेना पति का आना संग्राम की खुशी मनाना

गाना—आज चला है बन कर लरकर रण पर मस्ताना।
घन घोर जैसे गर्द पर हो बादल का आना॥
झूम झूम कर हरेक सिपाही जिस्से परवाना।
मुश्ताक हो जंगी आतिश में हो गिरना मरजाना॥
अर्मन जर्मन यूनानी पुरजैन पुरफन जग्द पानी।
ये पलटन लासानी।

तलवार घमाते हुए सबका चक्र बांधते चले जाना

रणभूमि (प्रथम दिवस)

मनादी कुनिन्दा—मनादी है मनादी है आज रणभूमि में लंकपति रावण की तरफ से हस्त प्रहस्त का युद्ध नल नील योधा श्री रामचन्द्र जी से होगा सुन लो साहिबो मनादी है मनादी है।

(यह कहते हुये चले जाना)

एक सिपाही का आना और दूसरी तरफ से दूसरे सिपाही का आना रण भूमि का बाजा बजना

एक सिपाही—आ आ देख ये देख।

दूसरा सिपाही—(तलवार घुमा कर) ले रोक ये रोक

(एक तरफ को घुमाते हुए चले जाना)

तीसरा सिपाही—मारो मारो।

चौथा सिपाही—आ आ लड़ना और गिरना।

एक तरफ़ से नल का आना और दूसरी तरफ़ से हस्त का आना

नल—अरे दुष्टो एक पापी व्यभिचारी की पक्ष कर रहे हो क्या नरक निगोद से नहीं डरते हो।

हस्त शेर—छोड़ कर लंकेश दाता याचना करते फ़कीरों से।
लखन और राम बानर वंश को छेदेंगे तीरों से
विजय महाराज को होगी बसोगे फिर कहां जाकर।
लखन और राम फिर मर कर बचायेंगे यहां आकर॥

नल—फ़कीरों से ही मतलब है फ़कीराना ही बाना है।
नहीं लाये अजल से कुछ अजल में पहुंच जाना है॥
हुए जिस वक्त तवल्लुद हम नगन तब भेप था अपना।
फ़कीरी ही मुबारिक हो नगन जब भेप हो अपना॥

अरे मूर्ख सुन—यदि तुम शील संयम जानते और पालते मन से।
नहीं अन्याय करते जान भी निकले अगर तन से॥

हस्त—अरे मूर्ख क्या आज बानर वंश सर झुकाना गिड़गिड़ा कर सर घुमाना भूल गया बस बस छोटा मुंह और बड़ी बात, आज तेरे मेरे हैं, दो दो हाथ (लड़ना)

अंत को हस्त का मरना (प्रहस्त का आना)

प्रहस्त—मार दिया मार दिया अरे पापी मेरे भ्राता को मार दिया (तलवार चमकाना) मुझ से बच कर कहां जायगा, खड़ा रह देखूं कौन इमदाद को आयगा (नील का आना)

नील—क्या बक रहा है आ आ तेरा मान घटाऊं मौत का मज़ा चखाऊं (तलवार चमका कर दोनों का लड़ना आखिर को प्रहस्त का प्राण रहित होकर गिरना)

सेना—अरे भागो भागो सेना पति दोनों मारे गये। (भागना)

पांचवा परिच्छेद-पांचवा दृश्य

रणभूमि द्वितीय दिवस

मनादी कुनिन्दा—मनादी है मनादी है आज हस्त प्रहस्त की मृत्यु योधा नल नील, रामचन्द्र जी से हुई और कल को संग्राम हनुमान का वज्रोदर और कुंभकरण से होगा और सुग्रीव का मेघनाद से तथा भामण्डल का इंद्रजीत से होगा, सुन लो साहिबो मनादी है, मनादी है।

(कहते हुए जाना)

वज्रोदर का आना—खेद है कि ऐसे हस्त-प्रहस्त की मृत्यु नल और नील के हाथों हुई।

गाना—राम की सेना से मैं जाके लड़ूं, एक वार से सफाई मैं करूं।
स्वामी पै कुरबां करूं मैं जिंदगी, पत्त क्षत्री धर्म की अब मैं करूं॥
देखूं नल व नील और हनूमन्त को, राम लखन को मार कर शत्रु हरूं
वानर बंशी भूले हैं अभिमान वश, एक छिन में मार कर मिट्टी करूं॥

(गाते हुए जाना)

रामचन्द्र भामंडल लक्ष्मण आदि सबका एक तरफ बैठना
और दूसरी तरफ रावण इन्द्रजीत मेघनाद आदि का बैठना

वज्रोदर—अरे वानर बंशी आओ अपना २ बल दिखलाओ।

हनूमान—अरे राक्षस बंशी दूत क्यों वृथा गाज रहा है, आ, आ,

(दोनों का लड़ना अन्त को वज्रोदर का मरना)

रावण सेना—अरे मारो मारो हमारे सेना पति वज्रोदर को मार दिया।

सबका हमला करना हनूमान का रोकना

भामंडल-सुग्रीव—रोको रोको रावण की सेना रोको

हनूमान—(रावण को देख कर) अरे मूर्खों के सरदार आ और मौत का मजा पा।

रावण—ठहर ठहर आता हूं मौत का मजा चखाता हूं।

कुम्भकरण—श्री महा राज पधारिये मैं जाता हूं।

कुम्भकरण—आ आ मेरे सामने आ तुझको प्राण रहित करूं

कुम्भकरण का तिमरमयी बाण मारना हनूमान का प्रकाश रूपी बाण से काटना कुम्भकरण का निद्रामई बाण छोड़ना और हनूमान का निद्रामय होना धनुष बाण का गिरना और सुग्रीव का जागृत बाण चलाना हनूमान आदि सब का होश में आ जाना।

कुम्भकरण—अरे दुष्ट हनूमान आ, आ तेरी मेरी कुश्ती है।

कुम्भकरण का हनूमान को बगल में दबा कर एक तरफ को ले जाना

भामंडल—अरे दष्ट राक्षस हनूमान को कहां लिये जाता है? ठहर!

कुंभकरण की तरफ को झपटना मेघनाद का रोकना

मेघनाद—आ आ मेरे सामने आ।

दोनों का लड़ना और मेघनाद का भामंडल को मूर्छित करना

सुग्रीव—अरे मेघनाद खड़ा रह भामंडल को मर्छित करके कहां जायगा

इन्द्रजीत का सुग्रीव को रोकना

इन्द्रजीत—अरे वानर बंशियों को नष्ट करने वाले सुग्रीव आ तू ही दिल में खार है तेरा ही इन्तजार है॥

दोनों का लड़ना अन्त को नागफांस से सुग्रीव को मूर्छित करना

विभीखण—(रामचन्द्र की तरफ देख कर) श्री महाराज हमारी सेना के तीन ही बलवान योधा थे सो तीन ही शत्रु के कब्जे में हुए इस लिये मैं भामंडल और सुग्रीव को शत्रु के लेजाने से बचाऊं और आप भामंडल और सुग्रीव की सेना को स्थिर रखिये।

राम—अच्छा भ्राता जाओ और हम गरुड़ेन्द्र का दिया हुआ वर याद करते हैं

विभीखण का आना इन्द्रजीत का देखना और फ़ैर करना

इन्द्रजीत—उठाओ उठाओ शत्रु को बन्दीग्रह में डालो हैं हैं यह तो हमारे चचा हैं। पिता के तुल्य हैं इन से संग्राम करना अन्याय है।

(जाना)

कुम्भकरण—बस बस हनूमान अब तू कहां बच कर जा सकता है।

हनूमान—अरे क्यों बहकता है।

अंगद—हनमान हनूमान ! अरे शत्रु ने हनूमान को पकड़ रक्खा है कोई तदबीर ऐसी बनाऊं इसकी जान बचाऊं।

धोती का आंचल खींचना और हनूमान का निकल कर भागना

कुम्भकरण—खेद है खेद है शत्रु निकल गया आया हुवा पक्षी पिंजरे से उड़गया।

रामचन्द्र का आना

रामचन्द्र—(ऊपर को देख कर) आओ गरुड़ेन्द्र महाराज आओ कष्ट के समय हमारी सहायता करो धाओ धाओ शीघ्र धाओ।

आवाज़ का होना गरुड़ेन्द्र का आना सुग्रीव भामण्डल का होश में आकर रामचन्द्र की विनय करना राक्षस वंशियों का अचम्भित होना (पर्दा गिरना)

पांचवां परिच्छेद तृतीय दिवस

६ दृश्य रणभूमि

मनादी कुनिन्दा—मनादी है मनादी है कल के संग्राम में श्री रामचन्द्र जी ने भामण्डल और सुग्रीव को बन्धन रहित किया। और आज रामचन्द्र जी का संग्राम कुम्भकरण से और लक्ष्मण का इन्द्रजीत और मेघनाद से और बिभीषण से रावण का संग्राम होगा सुनलो साहिबो मनादी है मनादी है। (जाना)

पहला सिपाही—बानर बंशियों आओ मौत का मजा पाओ।

दूसरा०—आओ अपना २ बल आजमाओ।

दोनों का लड़ते २ एक तरफ़ को चले जाना

इन्द्रजीत—खेद है खेद है हाथ में आये हुये शत्रु निकल गये।

शेर—अब हटूं रण से न पीछे पुन्य हो या पाप हो।
युद्ध में दुश्मन हैं सारे भाई हो या बाप हो॥
भूल की कहां तक सहूं मैं आज पश्चाताप को।
बानरबंशी देखता सहते हुए संताप को॥

आज बानरबंश अनाथ होता खैर! हे मन धैर्य्यधर—
आज फिर सुग्रीव बानरबंशियों को देखना इनकी जो इमदाद को, आये उन्हें भी देखना अय बानर बंशियों के मूढ़ सर्दार सुग्रीव मेरे सामने आ। लक्ष्मण क्यों कालकर प्रेरित है सावधान हो ले मेरा वार रोक।

इन्द्रजीत शेर—ये वार वार क्या करते हो इन वारों से सरोकार नहीं।
अब सामने आ मृत्यु को लखो वरना सच्चे दिलदार नहीं

लक्ष्मण—देखना अब हाथ लक्ष्मण का ज़रा मैदान में।
खून की नदियां बहा दूंगा ज़रासी आन में॥ ले रोक—

इन्द्रजीत—ले मेरा भी बाण रोक।

दोनों का लड़ना अन्त में इन्द्रजीत का मूर्छित होना नाग मुख बाण से

लक्ष्मण—भामण्डल उठाओ शत्रु को बन्दीग्रह पहुंचाओ।

भामण्डल—अच्छा महाराज।

लेना चाहना कुम्भकरण का आना

कुम्भकरण—अरे भामण्डल इन्द्रजीत को लेकर कहां जायगा मौत का मजा पायगा। ठहर २

रामचन्द्र का आना

रामचन्द्र—अरे राक्षस क्यों गाज रहा है सावधान हो ले मेरा वार रोक

कुम्भकरण—देख देख ये निन्द्रबाण मूर्छित बाण है।

दोनों का लड़ना अन्त में रामचन्द्र जी का कुम्भकरण को नागमुख बाण से मूर्छित करना

रामचन्द्र—अय सुग्रीव उठाओ कुम्भकरण को उठाओ बन्दीग्रह में ले जाओ

सुग्रीव—अच्छा महाराज लेजाता हूं (मेघनाद का आना)

मेघनाद—कहां ले जाता है मेरे सामने आ।

रामचन्द्र—अरे राक्षस वंशी काग क्यों जान देता है।

मेघनाद—ले मेरा वार रोक—(दोनों का युद्ध होना)

रामचन्द्र—का नाग मुख बाण मारना मेघनाद का मूर्छित होना।

राम० विराधित—ले जाओ। शत्रु को उठाकर बन्दीग्रह पहुंचाओ।

विराधित—जो आज्ञा

(उठाकर ले जाना)

रावण का आना

रावण—आओ आओ सीता के प्रेमी पतंग आओ।

शेर—शमे जलती है अरे परवाना कहां बच जायगा।
प्रेमी सीता सामने आ मौत मुझसे पायगा॥
प्रेम रस को भूलजा अब याद कर परलोक को।
आज ऐसी मारदूं जो छोड़ जा इस लोक को॥

शेर—मैं अगर चाहूं जमीं को आस्मां से दूं बदल।
सुर असुर पाताल पहुंचे सब पै हो मेरा अदल॥
मैं वह जहरी सांप हूं बख्शा न बख्शूंगा कभी।
फूंक की फुंकार से राहत न पायेगा कभी॥

अय दशरथ के फरजन्द खाने बदोश ले मेरा वार रोक, कर जरा होश।

रामचन्द्र की तरफ को लपकना और विभीषण का रोकना

विभीषण—अरे निर्लज्ज पापी मेरे सामने आ अपना बल दिखला।

रावण—बेशरम पापी कृतघ्नी दूर हो जा दूर हो।
क्यों मरे है हाथ से जा दूर हो जा दूर हो॥
तेरे मरने का हर्ष नहीं शस्त्र ये मेरे लहैं।
भूमि गोचर दास तू जा दूर हो जा दूर हो॥
श्याल पर शस्त्र बहाऊं मुझको क्या मिल जायगा।
राक्षस कुल को लजाया दूर हो जा दूर हो॥

विभीषण—श्याल क्या गज भी डरें वह शेर नर हूं जान तू।
तुझसे तिगुना बल है मुझमें आज ले पहचान तू॥
मेरी बातों को अधर्मी तू जरा भी मानता।
सामने लड़ना न हर्गिज भाई तेरा जानता॥

रावण—भाई भाई किसका भाई कैसा भाई आज तू ।
प्रभु का शरणा लिया और खो रहा है लाज तू ॥
लंका से तुझको निकाला फिर भी सन्मुख आगया ।
सावधान हो भाई बन के काल तुझको खागया ।

दोनों का लड़ना लक्ष्मण का आकर रोकना

लक्ष्मण—अरे गालबदी पापी सगे भाई को लंका से निकाल कर खुश होने वाले मेरे सामने आ ।

शेर—क्या निकालेगा परागी दस्त से सिंघराज को ।
खुद ही गुस्सा हाथ का हो जान दे यमराज को ॥
शील संयम छोड़ता है भूल कर अभिमान से ।
आज ऐसी मार दूं तू हाथ धोले जान से ।

रावण—मार क्या मारेगा तू बस मौत अपनी जानले ।
जान लेकर भागजा मेरे वचन सच मानले ॥
वरना मारा जायगा और अन्त को पछतायगा ।
तीर हाथों से छुटा बस कुछ न फिर बन आयगा ।

लक्ष्मण—अरे पापी कृतघ्नी मुझको कायरता के वचन सुनाता है ले रोक मेरा वार रोक ।

परस्पर युद्ध होना रावण का शक्ति को याद करना आवाज़ का होना शक्ति का आना रावण का फेंकना लक्ष्मण का मूर्छित होकर गिरना

राम—मार दिया मार दिया मेरे भ्राता को मार दिया, हाय सुग्रीव लक्ष्मण की रक्षा करो मैं आज शत्रु को जीता न छोड़ूंगा ।
(रावण की तरफ) अरे दुष्टात्मा मेरे भ्राता को मार कर कहां जायगा । (परस्पर महायुद्ध का होना)
रावण विकल है ।

रावण—गजब है सितम है आज बचना महाल है। सर पै काल है

(सूर्य का अस्त होना)

रामचन्द्र—अरे पापी मालूम हुआ कि तू अल्प आयु नहीं है अभी तेरी जिन्दगी बाकी है इसलिये कल भ्राता की दग्ध क्रिया करके प्रभात ही तेरी जान लूंगा।

रावण—हैं हैं (हंस कर) किसकी जान लेगा देखा जायगा।

(रावण का जाना)

रामचन्द्र—लक्ष्मण ! लक्ष्मण ! अय भ्राता लक्ष्म......ण

बेहोश होना और भामण्डल आदि का सम्हालना
पर्दे का आहिस्ता २ गिरना

पांचवा परिच्छेद-सातवां दृश्य

पर्दा रावण-महल

रावण का प्रसन्नचित्त दिखाई देना

रावण—हर्ष ! हर्ष ! महाहर्ष ! अय क्षत्री वीरो सुनो।

गाना—अय क्षत्री वीरो सुनो आज मोमन की ॥ आज० ॥
मेरे हाथ से मृत्यु हुई आज लछमन की ॥
जो शत्रु प्रबल था खार लगा मोमन में।
वह पड़ा भूमि पर मरा खबर ना तन की ॥ अय० ॥
रघुवर न बचेगा याद लखन की करके ॥ लखन० ॥
सीता को वरूं मैं खुशी भई मो मन की ॥ अय० ॥

अय बहादुरो बस समझो कि शत्रुओं का क्षय हुआ परन्तु इंद्रजीत कुम्भकरण मेघनाद क्यों नहीं आये। आश्चर्य है कि संग्राम से आते ही मेरे पास आया करते थे आज अब तक क्यों नहीं आये क्या वजह है जाओ जाओ शीघ्र लेकर आओ।

सेनापति—अच्छा महाराज अभी बुलाकर लाते हैं (जाना)

और दूसरी ओर से सिपाहियों का आना

सिपाही—श्रीमहाराज ! गजब हुआ सितम हुआ इन्द्रजीत मेघनाद और कुम्भकरण पर शत्रु का अधिकार हुआ।

रावण—क्या बक रहा है क्यों बहक रहा है।

सिपाही—श्री महाराज मेरे वचन प्रमाण कीजिये। इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरण को शत्रु के बन्दीगृह से रिहा कीजिये।

रावण—बन्दीगृह ! शत्रु का बन्दीगृह ! तुम लोग कहां मर गये थे

शेर—फूंक दो चूल्हे में जाकर इस धनुष और तीर को।
क्यों उठाये फिर रहे हो मुफ्त में शमशीर को॥
जाओ २ निकल जाओ मुझको अपना मुंह न दिखलाओ।

सिपहसालार का जाना और रावण का अफसोस करना

रावण—खातमा !, खातमा !, रण संग्राम का खातमा ! अय बेटा इन्द्रजीत आओ, इस अन्यायी आत्मा को दर्श दिखाओ।

शेर—हाय पर स्त्री पै वारा बेटा भाई जान कर।
दुष्ट हूं पापी हूं मैं भूला हूं मैं अभिमान कर॥

लक्ष्मण तो मर ही चुका किन्तु इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरण शत्रु के अधिकार में हैं इसलिये बचना असम्भव है। हा ! कुम्भकरण भ्राता तुझको कहां पाऊं कुछ पता न पाता विभीषण तो शत्रु का भेदी होकर सन्मुख आकर लड़ा तुमही तीनों मेरी इमदाद के लिये थे सो शत्रु की बन्दीगृह में हो हा खेद है इस जिन्दगी पर इस नफस अम्मारे की चाह पर।

शेर—समझ में कुछ नहीं आता करूं तो क्या करूं जाकर।
कहां ढूंढू कहां जाऊं लऊं मैं किस तरह पाकर।

परन्तु हे मन धैर्यधर—अवश्य शत्रु ने बाजू और टांग काट डाली परन्तु हे प्रभो! सेवक का तुही है रखवाली हा! मैं चत्री त्रिखंडी रावण कहाऊं और शत्रु के डर से भय खाऊं हर्गिज़ नहीं! हर्गिज़ नहीं!! बस बस कल प्रभात ही संग्राम में जाकर तीनों वीरों को छुड़ा लाऊंगा। रघुवंश और वानरवंश को नीचा दिखाऊंगा। (जाना)

पांचवां परिच्छेद ८ सीन

रामचन्द्र जी का कटक

(रामचन्द्र का लक्ष्मण के पास बैठकर अफसोस करना)
कान से मुंह लगाकर

रामचन्द्र०—भ्राता भ्राता अय लक्ष्मण भ्राता बोलो।

गाना

लक्ष्मन तुम्हें हुवा क्या भ्राता ज़रा तो बोलो॥ ल० ॥
आदर व मान मेरा करते थे किस तरह तुम।
एक बार कर दिखाओ आंखें ज़रा तो खोलो॥ ल० ॥
आंखों के मेरे तारे प्राणों से मेरे प्यारे।
आनन्द चित हो उट्ठो इमरत में विप न घोलो॥ ल० ॥
अच्छा करें जो इन्सां मरकर न भूलूं अहसां (नवज़ टटोलकर)
देखो तो भ्राता मेरा अंगद नवज़ टटोलो॥ ल० ॥

अय सुग्रीव!

सुग्रीव—श्री महाराज!

रामचन्द्र—बस! बस! हो चुका! रण संग्राम होचुका। बस अब सीता ही को पाकर मैं क्या करूंगा मेरे लिए भी चिता तैयार करो लक्ष्मण के साथ मेरी भी दग्ध क्रिया करो।

शेर—बेटी बेटा सैकड़ों नारी मरें संसार में।
मात पित भाई मगर मिलते नहीं संसार में॥

सुग्रीव—यह देव मई शस्त्र है इसका उपाय होना अवश्य है।

रामचन्द्र—आज रात्रि का समय हमारे लिये जंजाल है प्रभात होने ही लक्ष्मण का काल है।

शेर—वक्त पर काफी है कतरा बारिशे हंगाम का।
खेत सूखे पर जो फिर बरसा भी तो किस काम का॥

मित्र सुग्रीव—आपने मुझको मित्रता दिखाकर अनुग्रह किया। बस अब आप अपने स्थान पर जाकर विश्राम कीजिये। और भामण्डल तुम भी अपने देश को जाओ मैंने सीता की भी आस तजी और लक्ष्मण और अपने जीने की भी आस तजी। परन्तु! खेद है कि मैं वानर वंशियों का कुछ भी उपकार न कर सका आप महान पुरुष हैं जो प्रथम उपकार किया किन्तु मैं उसका बदला न देसका।

विभीक्षण—श्री महाराज चिन्ता न कीजिये आपका भ्राता नारायण है अवश्य जीवेगा मेरे वचन प्रमाण कीजिये।

रामचन्द्र—क्षमा! विभीक्षण क्षमा! मुझ अभागी पर क्षमा। खेद है तो यं है कि तुम सारखे पुरुष जोकि सगे भाई को अन्याय मार्ग में देखकर उसके सम्मुख लड़ने वाले और मुझ मन्द भागी की पक्ष करने वाले अय विभीक्षण! मैं कुछ उपकार न करसका। खेद है कि तमाम मान अरमान मेरी आत्मा के साथ जायगा।

विभीक्षण—श्री महाराज चित्त को व्याकुल न कीजिये। चारों ओर चौकी लगाइये।

रामचन्द्र—जो आपकी मर्जी हो सो कीजिये॥

विभीक्षण—भामण्डल पूरब की चौकी पर और सुग्रीव दक्षिण औ अंगद पच्छिम की तथा हनुमान उत्तर की ओर बैठकर सावधानी से काम लें और अन्दर कोट में किसी शत्रु को न आने दें॥

सुग्रीव—अच्छा ! अच्छा महाराज अभी चौकी बैठते हैं ॥

सबका यथा क्रम से चौकी बैठना चुप होकर सन्नाटा होना

रामचन्द्र—अय भ्राता ! भ्राता ! अय लक्ष्मण भ्राता ॥

(स्पर्श करना चाहना)

जामवन्त—श्री महाराज यह क्या करते हो दिव्य मई शस्त्र द्वारा मूर्छित तन स्पर्श न कीजिये। सन्तोष रखिये रोगी का उपाय ही कार्य कारी होता है।

रामचन्द्र—क्या उपाय करें।

भामण्डल—खेद है कि कोई उपाय समझ में नहीं आता।

सुग्रीव—कुछ नहीं कहा जाता।

(रामचन्द्र का सिर पर हाथ रखकर खामोश होना) और सबका मौन धारण करना

भामण्डल—(चौंककर) कौन आता है ठहर वहीं ठहर।

विद्याधर—कोई नहीं।

भामण्डल—कोई नहीं तो यह कौन बोल रहा है।

विद्याधर—यही तो मैं भी कहता हूं कि कौन बोल रहा है।

भामण्डल—बड़ा ही दुष्ट है जो चला आरहा है। जा जा जां बचाकर भागजा

विद्याधर—जां बचाकर (सैन मारकर) क्यों क्या जी में है ॥

भामण्डल—आऊं बताऊं क्या जी में है (आना) अरे राह छोड़कर इधर कहां आरहा है।

विद्याधर—सुनो !

गाना

मेरे भई प्रतिज्ञा आज जी । दर्श लखूं श्री रघुवर का ॥ मे० ॥
लक्ष्मण के शक्ती लगी तन में, देखूं उसे चाह ये मनमें ।
स्वामी की भक्ती मो मन में, बिगड़े संवारूं काज जी ॥ मे० ॥
रघुवर के ढिग मोहि पहुंचाओ, सोच कछु ना मनमें लाओ ।
शीघ्र करो अब देर न लाओ रखूं तुम्हारी लाज जी ॥ मे० ॥

भामण्डल—चलो चलो रघुवर के पास चलो ।

(रामचन्द्र जी के पास जाना)

विद्याधर—जय हो जय हो रघुपति महाराज की जय हो ।

गाना, तर्ज रसिया

लक्ष्मन भ्राता छिन में बोलें करो न सोच विचार ॥ रामा ल० ॥
नारायण वलभद्र आप हैं सज्जन पुरुष महान ।
जिन वर स्वामी की भव्यन पर कृपा बनी अपार ॥ रामा० ॥
अवधपुरी में मिले गन्धोदक नाम विशल्या नार ।
शक्ति निकलने के औषध के लच्छन हैं भरतार ॥ रामा० ॥
जिन साधु से सुना विशल्या बनेगी लक्ष्मन नार ।
ताल मृदंग बांसुरी बाजें होवे खुशी अपार ॥ रामा० ॥

रामचन्द्र—क्या लक्ष्मन भ्राता मुझ अभागी से बात करेंगे गन्धोदक प्राप्ति का उपाय बताओ और उसकी उत्पत्ति का हाल सुनाओ ।

विद्याधर—श्री महाराज मैं शशि मंडल का पुत्र चन्द्रमति हूं सहस्रमति की मांगी कन्या मैंने परणी तब से यह मेरा शत्रु हुआ एक समय मेरा उसका संग्राम गगन में हुआ उसमें मेरे चंडका नाम शक्ति मारी सो मैं अयोध्या के महेन्द्र नामा उद्यान में गिरा अकस्मात् अयोध्याधिपति भरत आगये मुझ को शक्ति द्वारा मूर्छित देख कर सती विशल्या राजा द्रोणमेघ की

पत्री का गन्धोदक मंगवाकर मेरे ऊपर छिड़का। छिड़कते ही मुझ को होश हुआ पुनर्जन्म माना।

रामचन्द्र—विशल्या ने क्या पुण्य किया है जिसके गन्धोदक में यह असर हुआ?

विद्याधर—श्रीमहाराज मैंने जो मुनीश्वर के मुखारविन्द से श्रवण किया है सो सुनाता हूं

सब—सुनाओ! सुनाओ!! शीघ्र सुनाओ!!!

विद्याधर—श्री महाराज पहले भव में लक्ष्मण का जीव चक्र पर चक्रवर्ती का सेना पती था, एक समय चक्रवर्ती की कन्या अनंग कुसुमा पर मोहित हुआ। कन्या को विमान में बिठा कर गगन को ले चला। चक्रवर्ती ने अपनी सेना उसके पीछे दौड़ाई सो भयातुर होकर पुत्री को एक भयानक उद्यान में डालता भया। वह कन्या वहां माता पिता को स्मरण करके याद करती भई अन्त को उसने जैनेश्वरी दीक्षा धारण की और वन के फल फूल पर क़नात की १ हजार योम घोर तपस्या करती भई। उस तपस्या का ही ये प्रभाव है। एक समय कन्या का पिता उद्यान में आया सो पुत्री को अजगर के मुख में अर्द्ध प्रवेशित देखा, तब चक्री अजदहा के मारने को उद्यत हुआ परन्तु कन्या ने उंगली से इशारा करके अभयदान दिलाया और आपने सन्यास धारण करके सोलहवें स्वर्ग में जन्म पाया, श्री महाराज मैंने मुनीश्वर से सुना है कि विशल्या नियम से लक्ष्मण की स्त्री होगी और उसके तप के प्रभाव से शक्ति बल रहित होगी।

रामचन्द्र—तुमने हम पर बड़ा अनुग्रह किया। अब हनुमान सुग्रीव इस सज्जन पुरुष को लेकर विशल्या का गन्धोदक शीघ्र लाओ देर न लगाओ।

हनुमान—अच्छा महाराज अभी जाता हूं और शीघ्र लेकर आता हूं। (विद्याधर से) चलिये चलिये। (जाना)

पर्दा अयोध्या नगरी

हनूमान—(द्वारपाल से) राजा भरत को शीघ्र बुला कर लाओ।

द्वारपाल—अच्छा महाराज अभी जाता हूं।

जाना और भरत को लेकर आना

हनूमान—जय जिनेन्द्र देव की।

भरत—जय जिनेन्द्र ! कहिये भ्राता अर्द्धरात्रि के समय कैसे आना हुआ।

हनूमान—लंका में श्री रामचन्द्र जी का संग्राम रावण से हो रहा है।

भरत—संग्राम का कारण ?

हनूमान—सती सीता को रावण ने हरण किया और आज शक्ति के द्वारा लक्ष्मण को मूर्छित किया।

भरत—रण संग्राम ! अय बहादुरो रण भेरी की घोषणा करो और लंका पर चढ़ाई करने को तैय्यार हो जाओ।

हनूमान—श्री महाराज सेना की आवश्यकता नहीं है किन्तु लक्ष्मण के शक्ति निकलने की चिन्ता है।

भरत—शक्ति ! अहा ! याद आया जिन स्वामी ने जो फरमाया अवश्य विशल्या का भरतार लक्ष्मण होगा। और उसी के प्रभाव से संकट दूर होगा। चलो २ हनूमान विशल्या ही को लक्ष्मण के पास ले चलते हैं। (प्रस्थान)

दर्बार द्रोण मेघ (द्रोणमेघ का बैठे दिखाई देना)

द्वारपाल—श्री महाराज की जय हो ! राजा भरत का दूत आया है कुछ कहना चाहता है।

राजा—हाजिर करो।

द्वारपाल का जाना दूत का आना

दूत—जय हो ! राजा द्रोणमेघ की विजय हो ।

द्रोणमेघ—अरे अर्द्धरात्रि के समय कैसे आया ? क्या समाचार लाया ।

दूत—श्री महाराज अयोध्या के अधिपति भरत आपसे मिलना चाहते हैं

राजा—मिलने का कारण ?

दूत—कारण यह है कि महाराजा लक्ष्मण को रावण ने रण संग्राम में शक्ति द्वारा मूर्छित किया । अब आपकी कन्या सती विशल्या का लेजाना लाज़िमी हुआ है ।

कुंवर द्रोणमेघ—बहन विशल्या का ! हर्गिज़ नहीं कुंवारी कन्या रणभूमि में हर्गिज़ नहीं जा सकती ।

शेर—संग्राम में भेजें न हर्गिज़ कुंआरी कन्या साथ में ।
जान जब तक जान में है और कटारी हाथ में ।
हाथ में अब है धनुष और धनुष में तीर है ।
अन्याई नेताओं के समझो शीश पर शमशीर है ॥
शोक ! महाशोक !! राजा भरत और हनुमान ।
संग्राम में कारी कन्या लेजाने का अरमान ॥
जाओ जाओ कहदो कि कारी कन्या रण संग्राम में हर्गिज़ नहीं जायगी

दूत—श्रीमहाराज राजा भरत और हनुमान व महारानी कैकई नगरी के समीप आये हुये हैं वार्तालाप उनसे कीजिये मैं तो आपका भी दास हूं और उनका भी दास हूं ।

द्रोणमेघ—अच्छा जाओ और राजा भरत वगैरह को साथ लेकर आओ

(भरत कैकई का गाते हुये आना)

गाना—आज तुम रक्खो हमारी लाज ॥ आज तुम० ॥
जिन साधुन से सुना विशल्या बनेगी लक्ष्मण नार ।
कन्या को हमरे संग भेजो आओ हमारे काज ॥ आज० २ ॥

लक्ष्मण के जीवन की आशा मांगे हाथ पसार।
कन्या तेरी पटरानी हो लक्ष्मण की सरकार ॥ आज सुन० ।

द्रोणमेघ—श्री महाराज मुझ को लज्जित न कीजिये। विशल्या आपकी पुत्री है लेजाइये लेजाइये । और मैं आज्ञा देता हूं कि लक्ष्मण के साथ पाणी ग्रहण कराइये । अय द्वारपाल विशल्या को शीघ्र बुलाओ ।

द्वार पाल—अच्छा महाराज जो आज्ञा ॥

विशल्या का आना

द्रोण मेघ—अय पुत्री रावण ने लक्ष्मण को शक्ति द्वारा मूर्छित किया परन्तु हमने तेरा पाणि ग्रहण लक्ष्मण के साथ किया । यदि तेरा पुन्योदय है तो लक्ष्मण का दुख दूर होगा और तुझ को सुख भरपूर होगा ।

विशल्या—(शर्माकर) श्री महाराज जो आज्ञा ।

द्रोण मेघ—राजन ले जाइये सती विशल्या को शीघ्र लेजाइये प्रभात होने से पेश्तर पहुंचाइये जाइये जाइये । (सबका प्रस्थान)

(रामचन्द्र का कटक)

गाना सोहनी

रामचन्द्र—चल बसा कहां भ्रात मेरे हाय लक्ष्मण बेवतन ।
शीघ्र वचनालाप कर जिस से कि हूं मैं सुख सदन ॥
वानर वंशी जाइयो माता को हाल सुनाइयो ।
तेरे लाल के शक्ती लगी हा क्या करें रघुवर यतन ॥
जीतव्य तेरे हाथ में हूं द्रव्य तेरे साथ में ।
आज बस जाता रहा हा ! हाथ से मेरे रतन ॥ चल० ॥

राम—(स्पर्शकरना) बोलो बालो लक्ष्मण बोलो ।

विभीषण—महाराज स्पर्श न कीजिये धैर्य धारिये हनुमान सती विशल्या को लेकर शीघ्र आता होगा। सन्तोष रखिये मन को समझाइये।

रामचन्द्र—अफसोस। हनुमान अबतक क्यों नहीं आया।

गाना

हम तो पहिले ही थे तुम को जाने हुए।
आने जाने में कितने जमाने हुए॥ हम०॥
हुवा खाना खराब। नहीं आया सिताब। मेरा दिल है बेताब।
जैसे माही बे आब। हमसे मिल मिल के कैसे बहाने हुऐ। हमतो०
सुबह होते ही हाल। तो है लक्ष्मण का काल। गया हाथों से लाल।
ये है दिल को मलाल॥ कैसे २ ये दुखड़े उठाने हुए॥ हम०॥

द्वारपाल—आगये! आगये! हनुमान सती विशल्या को लेकर आगये

आसमान से सती विशल्या को लेकर उतरना लक्ष्मण के पावों से हरकत होना

रामचन्द्र—अय प्रभो शुक्र है मुझ पर कृपा हुई।
लक्ष्मण के जीने की उम्मीद हुई॥

चन्द्रमती—श्री महाराज जल चन्दन मंगवाइये।

रामचन्द्र—अय सुग्रीव शीघ्र लाओ। (जाना)

विशल्या—(रामचन्द्र की तरफ मुखातिब होकर) श्री महाराज के चरणारविंद को नमस्कार है।

रामचन्द्र—चिरंजीव हो! सती विशल्या चिरंजीव हो धन्य है तप को और धन्य है तेरे जन्म को।

सुग्रीव का जल चन्दन लेकर आना

सुग्रीव—लो सती विशल्या लो लक्ष्मण को मूर्छा रहित करो।

विशल्या का जल चन्दन हाथ में लेना और लक्ष्मण का हर्कत करना

रामचन्द्र—हर्ष हर्ष महाहर्ष भ्राता ! भ्राता !

रामचन्द्र का लक्ष्मण की तरफ़ लपकना सुग्रीव आदि का गनह करना

सुग्रीव—महाराज संतोष रखिये लक्ष्मण का दुख दूर हुआ।

विशल्या का जल चन्दन लेकर भगवान की प्रार्थना करना और लक्ष्मण का हर्कत करना

विशल्या—लाज मो रखियो श्रीभगवान।

नाथ मेरे अब होचुके इनपर मेरी जान।
जो स्वामी जागे नहीं खो दूं अपने प्राण ॥ लाज० ॥
यश कीरति चाहूं नहीं और न चाहूं मान।
कन्त मेरे मुर्छित हुये बख्शो इनकी जान ॥ लाज० ॥

जल छिड़कना एक दम शक्ति का निकल कर भागना हनुमान का शक्ति को पकड़ना

हनुमान—कहां जायगी हमको परेशान करके कहां जायगी।

शक्ती—श्री महाराज मुझ पर क्षमा कीजिये क्योंकि जो मुझ को सिद्ध करलेता है मैं उसकी दासी होजाती हूं जो कहता है बजालाती हूं।

हनुमान—रावण को सिद्ध होने का कारण ?

शक्ती—मैं अमोघ नामा शक्ति सकल पृथ्वी को मोहनवाली इन्द्र नरेन्द्रों को नीचा दिखाने वाली ऐसी मैं शक्तिवान परन्तु विशल्या के तप के प्रभाव से मैं शक्ति रहित हूं। एक समय रावण कैलाश

पर्वत पर यात्रा को गये सो भगवान के मन्दिर में हाथ की नस निकाल कर तान लगाकर गुण गाया तो धरणेन्द्र का आसन कम्पायमान हुवा। उसने हर्षित होकर मुझको देना चाहा परन्तु रावण मुझको नइच्छता भया तब उसने हठ कर मुझ को दिया इसलिये मुझ पर क्षमा कीजिये जाने दीजिये।

हनुमान—अच्छा जाओ चली जाओ कटक से निकल जाओ। (जाना)

विशल्या—(जलचन्दन छिड़क कर) अय नाथ होश में आओ

लक्ष्मण का एकदम क्रोध में आना

लछमण—कहां गया! पापी चाण्डाल रावण कहां गया!!

धनुष लेकर एक तरफ को झपटना चाहना रामचन्द्र का कौली भरना

रामचन्द्र—अय भ्राता सुनो। पापी रावण तुम्हारे शक्ति मार कर अपने को कृतार्थ समझ कर चलागया और सती विशल्या जिस के द्वारा आप मूर्छारहित हुए आपका पाणीग्रहण किया।

लक्ष्मण व विशल्या का आपस में देखना और रामचन्द्र का लक्ष्मण को कौली में रोकना

पर्दे का आहिस्ता आहिस्ता गिरना

पांचवां परिच्छेद रावन का दर्बार

(रावण का बैठे दिखाई देना)

हलकारा—श्री महाराज गज़ब हुआ सितम हुआ। हजूर का शत्रु लछमन जो शक्ति द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ था—जिन्दा हुआ ?

रावण—हरगिज़ नहीं शत्रु नहीं जी सकता है शक्ति का वार खाली नहीं जासकता है।

हलकारा—श्री महाराज मेरे वचन प्रमाण कीजिये।

रावण—तो क्या शत्रु को तुम ने अपनी आंख से देखा ?

हलकारा—जी हां दास के नेत्रों ने देखा।

रावण—शक्ती निकलने का कारण ?

हलकारा—कारण यही कि सती विशल्या जिसने पहिले भव में महान तप किया था उसके प्रभाव से शक्ती शक्ती रहित हुई और लछमण की शादी विशल्या के साथ हुई। तथा सेना में जो २ मनुष्य हाथी घोड़े आदि घायल थे वह सभी विशल्या के स्पर्श जलसे अच्छे हुवे।

रावण—अच्छे हुवे ! क्या वह डाक्टर है या हकीम यह तू क्या बकता है मेरी समझ में नहीं आता है। यदि एक भी शब्द असत्य होगा तो जान लेना कि काल तेरे सर पे होगा।

दूसरे सिपाही का आना

दूसरा सिपाही—श्री महाराज लछमण की शक्ती निकल गई।

रावण—अच्छा अच्छा सुन लिया जाओ २ निकल जाओ। (जाना)

रावण—(आश्चर्य जनक होकर) अवश्य शत्रु बलवान है। पुण्य का उदै महान है निश्चय यह संग्राम जंजाल है। इस में शूरवीरों का काल है। परन्तु करूं तो क्या करूं। यदि सीता को रामचन्द्र के पास भेजता हूं तो मुझको प्राणी मात्र संसार में कायरता से याद करेंगे। (सोचकर)
नहीं नहीं यह न होगा। यदि लक्ष्मण के शक्ती निकल गई तो क्या हुवा। और राम लक्ष्मण को गरुड़ वाहन सिंह वाहन विद्या सिद्ध हुई तो क्या हुवा। बस बस अब मैं बहुरूपणी विद्या साधूंगा। और इन वानर वंश रघुवंश को नीचा दिखाऊंगा हां अलबत्ता यह जरूर होगा कि एक बार रामचन्द्र को संग्राम में जीत लूं फिर सीता को रामचन्द्र के पास भेजदूं अवश्य यह मेरा नियम है नियमानुसार होगा।

मन्दोदरी का घबराते हुवे आना

मन्दोदरी—इन्द्रजीत, इन्द्रजीत, इन्द्रजीत है न आपका भाई इतनी देर कहां लगाई।

रावण—प्रिय संतोष रख।?

मन्दोदरी—हा! सन्तोष! कैसा संतोष प्राण प्यारे मुझ से शीघ्र बताइये जराभी न छिपाइये।

रावण—यदि सच पूछती हो तो लो सुनो। इन्द्रजीत, मेघनाद कुम्भकरण शत्रू के बन्दीगृह में हैं।

मन्दोदरी—शत्रू के बन्दीगृह में हा! खेद! तुम्हारी समझ, तुम्हारी योग्यता, तुम्हारी बुद्धि पर।

❀ गाना मन्दोदरी ❀

बिगाड़ बैठे चलन तुम अपना, समाज सन तन उठा उठा कर।
हा! खोया सारा जनक सुता पै, हा! शील संयम लुटा लुटा कर॥ बि०॥
न अपनी जानो तुम जानकी को, न जान जानो वह जान जाना।
हा! वे मुरव्वत से दिल लगाना, रुलावो मम मन दुखा २ कर॥बि०॥

(रोकर कहना)

कहां की प्रीतम अकल निकाली, सता से खाते हजार गाली।
भला कि़यां पे है आहें शोला, सनो परेगी लगा लगा कर ॥ कि० ॥
पतिव्रता है सिया को जानो, पठावो रघुवर पै मेरी मानो।
दरेंगी सारी बदी तुम्हारी, न कितना उद्दें जगा जगा कर ॥ कि० ॥

मंत्रियों का प्रवेश

मंत्री—जय हो श्री महाराज की विजय हो।

रावण—कहिये २ मन्त्री साहब यह बेवक्त कैसे आना हुआ।

मन्त्री—श्री महाराज आपके यश बढ़ाने वाली, कीर्ति कराने वाली, वार्ता मन में प्रगट हुई है। सो हजूर को सुनाना चाहते हैं। आप चाहें क्रोध करें या प्रसन्न हों। परन्तु हम मन्त्रियों का काम है कि स्वामी को स्वामी के हित की वार्ता सुनायें।

रावण—क्या है। सुनाइये।

मन्त्री—श्री महाराज, कुम्भकरण, इन्द्रजीत, मेघनाद का शत्रु के बन्दीग्रह में होना तथा लछमन के शक्ति का निकलना तो महाराज ने सुना होगा।

रावण—हां। हां। सुना है, परन्तु क्या खेद है। लछमन के शक्ति निकली तो क्या हुआ, और कुम्भकरणादि बन्दीग्रह में बन्द हुये तो क्या हुआ, मरना मारना यही क्षत्रियों का काम है।

शेर—एक की हार होती है एक की जीत होती है।
हरें संग्राम में क्षत्री यही विपरीत होती है॥

विदूषक, शेर—गिरते हैं शह सवार ही मैदाने जंग में।
वो तिफ्ल क्या गिरेगा जो घुटनों के बल चले॥

मन्त्री—श्री महाराज स्वार्थ सिद्धी का होना ही, संग्राम का कारण होता है परन्तु हम देखते हैं कि ऐसे घोर संग्राम का नतीजा

सीता के और कोई कारण नहीं है। श्री महाराज इस सेवक पर दया करिये, और जैसे पहिले से तुम्हारे धर्म रूपी भाव थ बनाये रखिये क्योंकि यदि जीत भी गये तो भाई और दोनों बेटों का जिन्दा मिलना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। और सती सीता गो प्राण रहित भी हो तो भी आपके अरमान पर आने तीन काल में मुश्किल ही नहीं, बल्कि असंभव है असंभव है।

शेर—आपके शत्रु प्रबल हैं आज हमने जानली।
जीत होनी है असम्भव हार हमने मानली।
जीत भी संग्राम में गो आपके हो नाम की।
भाई बेटा गर न हो तो जीत भी किस काम की॥
गरुड़ वाहन सिंह वाहन इन्द्र ने दी जान कर।
बे परिश्रम सिद्ध विद्या होगई सब आन कर॥
भव्य आतम जीव है जिनकी सती सीता सी नार।
है बड़ाई छोड़ने में यश न होगा उनको मार॥

वार्ता—श्री महाराज अब तक कभी भी हमारी वार्ता आपने भंग नहीं की है।?

रावण—फिर तुम लोग क्या चाहते हो।

मन्त्री—श्रीमहाराज ! हम लोग राघो वंशी श्रीरामचन्द्र जी से आप की संधी होना उचित समझते हैं। इस लिये एक दूत को रामचन्द्र जी के कटक में भेजते हैं।

रावण—मौन धारण करता है।

मन्दोदरी—बुलाइये बुलाइये एक बुद्धीमान पुरुष को बुला कर रामचन्द्र जी के पास पठाइये।

मन्त्री—अरे कोई हाजिर है।

दूत—श्रीमहाराज क्या आज्ञा है।

मन्त्री—देखो तुम शीघ्र जाओ और रामचन्द्र के कटक में पहुंच कर श्रीरामचन्द्र से कहो कि लंकेश्वर तुमपर कृपा करते हैं। तुम को भव्य पुण्यात्मा, सम्यक्दृष्टि जैन मत श्रद्धानी समझ कर सन्धि करना उचित समझते हैं। शीघ्रही कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद को बन्दीगृह से निकाल कर अपने साथ लाओ और सीता महारानी को अपने साथ लेजाओ।

रावण—(का हंस कर उंगली से दूत को मने करना।

मंत्री—शीघ्र जाओ।

दूत—अच्छा श्री महाराज अभी जाता हूं।

(दूत का जाना)

मंत्री—श्री महाराज आज्ञा चाहते हैं।

रावण—जाइये आराम कीजिये। (राजा मंदोदरी का भी प्रस्थान)

दूत—कहिये श्री महाराज! जैसा हुक्म पाऊं वैसा लाऊं

रावण—लो यह पत्र हम तुमको देते हैं इस के अनुसार जवाब ले आओ।

दूत—अच्छा श्री महाराज। (दूत का जाना)

रावण—बस, बस, अब मैं बहुरूपणी विद्या साधने जाता हूं। (प्रस्थान)

रामचंद्र का कटक

पांचवां परिच्छेद रण भूमी

(रामचंद्र व लक्ष्मन आदि का बैठे दिखाई देना)

हलकारा—श्री महाराज सावधान, सावधान, शत्रु का प्रवेश हुआ।

लक्ष्मण—आने दो पाखंडी रावण को आगे आने दो।

द्वारपाल—श्री महाराज रावण का दूत आया है कुछ समाचार लाया है

रामचन्द्र—हाज़िर करो।

(द्वारपाल का जाना दूत का आना)

दूत—जय हो लंकपती महाराज की जै हो।

रामचन्द्र—दूत कैसे आया। क्या समाचार लाया।

दूत—श्री महाराज लंकेशपती आपके पास संद्धि के अर्थ भेजा है।

रामचन्द्र—सन्धी यदि वह संधी करना चाहते हैं। तो बहुत अच्छी बात है परन्तु संधी होना कैसे उचित जान पड़ी।

दूत—हमारे महाराज ने कहा है कि संग्राम करने से क्या फ़ायदा है हजारों क्षत्रियों का नाश करना जान बूझ करनरक सागर में गिरना कहां की बुद्धिमानी है।

रामचन्द्र—कहिये फिर उन्होंने जी में क्या ठानी है।

दूत—उन्हों ने कहा कि सकल लंका के दो भाग कर डालो एक भाग में आप राज करें और दूसरे में हमारे महाराज तथा पुष्पक विमान भी मैं तुमको देता हूं उसपर बैठकर अनेक स्थान विचर कर चित्त प्रसन्न करो अपने जीवन को कृतार्थ करो।

रामचन्द्र—अच्छा २ फिर वह क्या चाहते हैं।

दूत—श्री महाराज वह यही चाहते हैं। कि कुम्भकरण व इन्द्रजीत व मेघनाद को बंदीग्रह से रिहा करो और सीता महारानी के आने की आस तजो।

रामचन्द्र—आस तजो यह तू क्या बकता है! क्या बात पित्त का सताया हुवा है जो जुबां बहक रही है।

दूत—नहीं महाराज जुबां नहीं बहक रही है बल्कि जो स्वामी जी ने मुझसे कहा है जुबां वही कह रही है सीता की चाह आपके वास्ते

अच्छा नहीं है क्योंकि जो बुद्धिमान् पुरुष होते हैं। वह नीति अनुसार ही चलते हैं। नीति का वाक्य है सकल पदार्थ तजकर अपने शरीर की रक्षा करना उचित है इसलिये श्री महाराज आप समुद्र पार होकर निःसंदेह लंका में संग्राम को चले आये। सो अच्छा नहीं किया।

रामचन्द्र—क्या अच्छा नहीं किया-मालूम होता है कि उसके मंत्रीगण सर्वथा मूढ़ और नीच हैं।

सुग्रीव—अरे मूढ़ दूत जा निकल! क्या लंका में कोई वैद्य मंत्र का ज्ञाता नहीं है। जो रावण के दुख को दूर करता बस बस हमारे महाराज श्री लक्ष्मण महाराज ही वैद्य बनकर उसके दुख को दूर करेंगे।

रामचन्द्र—अरे मूर्ख सुन! तू रावण से कहना कि रामचन्द्र ने कहा है कि लंका का राज सर्वथा आपही करें और आप को ही हमेशा २ मुबारिक रहे। और इन्द्रजीत मेघनाद मेरे भी पुत्र के समान हैं और भ्राता कुम्भकरण भी मुझको भाई के तुल्य हैं लेजाइये शीघ्र ले जाइये बंदीग्रह से ले जाइये। न मुझको पुष्पक विमान चाहिये। परन्तु सीता महारानी हमारे पास पहुंचाइये मैं सिर्फ अपनी प्राण वल्लभा को लेकर वनमें प्रवेश करूंगा। जहां कि अनेक बनचर और भयानक जीव रहते हैं वहां चला जाऊंगा ऐ दूत! तू मेरी तरफ से बहुत कुछ समझा कर कहना कि तेरा कल्याण इसी में है कि सीता को मेरे पास पहुंचादे वरना उसका अंतिम समय आने वाला है।

दूत—रावण का अंतिम समय! आहा! मालूम हुआ कि आप राज काज में समझत नहीं हैं। आप ने यदि सिंह वाहन, गरुड़ वाहन, विद्या सिद्ध की और सूर्य हास्य खड्ग भी सिद्ध की तथा कुम्भकरण मेघनाद इन्द्रजीत बन्दीगृह में बन्द किये तो क्या हुआ हमारे महाराज कहते हैं कि जब तक मैं जीता हूं तब तक तुमको इनका अभिमान करना वृथाही नहीं कलके यमराज को बुलाना है।

भामण्डल—अय दूत क्यों मूढ़ हुवा है देख सुन सीता को तो रामचन्द्र जी बलातकारे लेही लेंगे। परन्तु हमारे हाथों से रावण प्राण रहित होगा और संसार में हमेशा को उसका अपयश नमूदार होगा।

दूत—अपयश! कैसा अपयश राजों का तो यह करतव्यही है कि अच्छी वस्तू दूसरे से छीन कर ग्रहण करें।

भामंडल—आ आ पहिले तुझकोही अच्छी वस्तू दिखाऊं (तलवार चमका कर) मौत का मज़ा चखाऊं।

लक्ष्मण—नहीं २ भामण्डल ऐसा ना करो यह शत्रू का बुलाया बोलरहा है दूत है इस पै करुणा ही उचित है।

लक्ष्मण शेर—स्त्री बालक दूत शस्तर हीन हो।
बृद्ध कायर रोगी या बल हीन हो॥
भय से डर कर के भगे या गड़गड़ाता दीन हो।
क्षत्रियों के धर्म शासन में नहीं वह लीन हो॥

दूत—मान! मान!! ऐसा मान! अय राजन तुम करते हो दूत का अपमान

शेर—बहुत से पापी घमंडी राजों के सर तोड़ कर।
लंकेश ने मारा सबों को सर से सर को जोड़ कर।
कैलाश पर्वत की तरह से हड्डियों का ढेर है॥
फिर भी तुम समझो नहीं अन्धेर है! अन्धेर है।
भय! भय!! भय खावो रावण के कोप से भय खावो॥

दरबारी—(धक्का देकर) जा जा निकल अरे मूर्खों के मूर्ख निकल
(कान पकड़ कर निकालना)

चोबदार—श्री महाराज की जो रावण ने बहूरूपनी विद्या साधने को श्री शान्ति नाथ के मंदिर में अद्भुत ध्यान धरा है

❀ सुग्रीव का रामचन्द्र की तरफ़ मुखातिब होकर ❀

सुग्रीव—श्री महाराज रावण को यदि बहूरूपनी विद्या सिद्ध होगई तो बड़ा गज़ब होगा हम वानर बंशियों का क्षय होगा।

विभीषण—अवश्य यह बुरा होगा। इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये रावण का ध्यान डिगाना चाहिये।

अंगद नल नील का मिल कर गाना

गाना—करो करो हुक्म महाराज, उड़ादें रावण का सर आज। करो०
कान पकड़ कर देवें धक्के, लें सब बदले आज।
मन्द भागनी मन्दोरी की, खोवें मिलकर लाज॥ करो०
गर रावण की मृत्यु होगई, लहें तख्त और ताज।
वरना सिद्ध होय नहिं विद्या, एक पंथ दो काज॥ करो० २॥

रामचंद्र चौपाई

अनुचित वचन कहो मत वीरा, ध्यान समय मत देवो पीरा।
जिन मंदिर में ध्यान लगाया, धन्य विवेक परम पद पाया॥
आयुध रहित भागता नारी, इन संग लड़े पाप अति भारी।

वार्ता—खेद है कि तुम लोग क्षत्री होकर कैसी वार्ता करते हो न्याय अन्याय से नहीं डरते हो!

अंगद वगैरा—शेर-

कपट है रावण के है मन में, लगाये ध्यान वह किस का।
खुदी मन में घुसी हुई है, नहीं है ध्यान ईश्वर का॥
वह व्यभिचारी कृतघ्नी है, महा पापी घमन्डी है।
न्याय अन्याय हो किस पर घमण्डी है घमण्डी है॥

वार्ता—श्रीमहाराज हम अवश्य जायेंगे लंका वासियों को दुख पहुंचायेंगे।

रामचंद्र—(मौन धारण करते हैं)

लक्ष्मण—अच्छा देखो इस बात का अवश्य विचार हो कि नार बालक वृद्ध कायर इन को कष्ट न पहुंचने पाये।

(सब का प्रस्थान)

पांचवां परिच्छेद रावण का महल

मंदोदरी का दिकपाल सेनापति मंत्रियों को हुक्म देना

मन्दोदरी—देखो सुनो ! तुम्हारे लिए यह हुक्म हुआ है कि जब तक हम बहुरूपणी विद्या साधन करें, तब तक तुम लोग लंका में समता भाव धारण करो किसी प्रकार का लंका में विरोध न करो, यदि शत्रु कुछ उपद्रव भी करे तो तुम समता रूपी खड्ग से वार सहो और शील संयम नियम व्रत करते रहो।

मन्त्रियों का जाना

आवाज—मार लिया २ लूट लिया २ लंकेश पती की दुहाई है ।

मन्दोदरी—क्यों रोला मिचाते हो, क्या आफ़त आई है ।

लंका की प्रजा का भयभीत होकर कहना

महारानी तबाही है ! तबाही है !! जान और माल की तबाही है

मन्दोदरी—क्या हुआ सुनाओ तो ।

लंका० प०—लो सुनो वानर वंशियों ने कुल माल हमारा लूट लिया और जो बचा उसको अग्नी के हवाले किया ।

दूसरा० म०—बचाओ २ लंकेश पती हमारे प्राण बचाओ ।

एक दम अंगद का आना

अंगद—(हाथ झटक कर) देखूं तुझको कौन बचाता है, कर कर श्री रामचन्द्र जी की सेवा कबूल कर वरना मारा जायगा ।

प्रजा—श्री महारानी जी यह आज क्या देख रही हो, बचाओ २ बचाओ मुझ अभागी की जान बचाओ ।

अङ्गद्—क्या मृत्यु प्यारी है। अरे मूढ़ रावणादि हमारे महाराज के वन्दीगृह में बन्द हैं बस २ अब लंका पर हमारा अधिकार है। हमारा राज है हमारा ताज है।

प्रजा का मनु०—हैं हैं यह क्या मैं आज स्वप्न देख रहा हूं नहीं २ मैं अवश्य जाग रहा हूं।

अंगद्—क्या जवाब है।

प्रजा का मनुष्य साफ़ इन्कार है।

अङ्गद्—तलवार खायेगा।

प्रजा का म० स्वामी पर कुरबान होकर यह शरीर नाम पायेगा।

अंगद् अच्छा आ (पछाड़ कर)

(तलवार का वार मारना चाहना)

प्रजा का मनु०—रक्षा, रक्षा, अय प्रभु इस दास पर रक्षा।

एक दम राजा मय का आना

राजा मय—क्यों बे बन्दर क्या जी में है। गोली खायेगा, मौत का मज़ा पायेगा। (तलवार निकालना)

मन्दोदरी—शांत! शांत!! अय पिता जी शांत!!!

राजा मय—क्यों, क्यों, यह क्यों?

मन्दोदरी—श्री महाराज लंकेश पती, बहुरूपणी विद्या श्री शांतनाथ के मंदिर में सिद्ध कर रहे हैं। लंका में समता भाव रहने का हुक्म दे गये हैं।

अंगद्—क्यों बे बूढे मालूम हुआ कि तेरी पत्नी पत्नी, नहीं पुत्री क्या कहती है

राजा मय की मूछ पकड़ना (धक्के देकर)

जा जा निकल जा भागजा। (राजा मय का जाना)

अंगद—चलो ले चलो रामचन्द्र जी के कटक में मंदोदरी को ले चलो। जब तक कि सीता लंका में रहेगी, तब तक मंदोदरी हमारे महाराज के पैर दबायेगी।

मन्दोदरी की तरफ़ को लपकना मन्दोदरी का भागना तथा अङ्गद आदि का पीछा करना

प्रस्थान

---

* पांचवां परिच्छेद *

शान्ति नाथ का मन्दिर

रावण का ध्यानारूढ़ बैठे दिखाई देना

मन्दोदरी—बचाओ २ श्री महाराज मुझको बचाओ।

(रावण के चरणों में गिरना)

अंगद—आगई आगई अपने भ्राता भ्राता

नल—अरे यार भ्राता नहीं भरतार।

अङ्गद का मटक कर गाना

बूंदी का तार दी वई वई वई वई। गुल दूं मैं जुलफों ने बांधी कटार दी वई वई वई।

नल—अरे यह तू क्या बक रहा है।

अंगद—कुछ नहीं यार पारसी कंपनी में राम शगरियां गारही थीं तब सिर्फ़ यही याद हुवा है। बूंदी का तार दी वई वई वई।

नल—क्या देर है उठालो मंदोदरी को अधर उठालो ।

मन्दोदरी का भय खाकर रावण से लिपट जाना और अंगद का चीर पकड़ कर खींचना

मन्दोदरी—रक्षा रक्षा अय भगवन् मेरे पतिव्रत धर्म की रक्षा ।

एकदम आवाज का होना देवों का आना

देव—खबरदार सती मन्दोदरी के हाथ न लगाना और रावण का शरीर न छूना ।

अंगद—भागो भागो यारो भागो ।

देव—भाग कर कहां जा सक्ते हो (देवों का रोकना) बस हमारी ये कटार खावो और मौत का मजा पावो ।

अंगद—अर्रर कैसी कटार अय प्रभू हमारी रक्षा हमको बचावो ।

देव—बचावो बचावो का बचा, कौन बचा सक्ता है । अरे दुष्टो ऐसे समय में जब कि रावण ध्यान धर रहा है तुम कैसे आये देखो हम तुम को अभी यमलोक पहुंचाते हैं । (मारना चाहना)

एक दम दूसरे देवों का आना

दूसरा देव—खबरदार हाथ न लगाना, वरना अंत में होगा पछताना ।

रावण के देव—तुम क्यों आये ।

राम के देव—तू कैसे आया आ आ मेरे सामने आ अपना बल दिखा

(देवों का आपस में लड़ना और रावण के देवों का हार मानकर भागना)

(देवों का प्रस्थान)

अंगद—क्यों रे पापी चाण्डाल व्यभिचारी अन्यायी पाखंडी ये ध्यान कैसा धरा है । जैन मन्दिर में बैठ कर ऐसे दुरध्यान को (सब) धिक्कार है धिक्कार है धिक्कार है । पापी तेरे ऐसे मान को

धिक्कार है धिक्कार है धिक्कार है। व्यभिचारी तेरे ऐसे ज्ञान को धिक्कार है धिक्कार है धिक्कार है। अरे खंचर रूपी खिचर जिसकी मा गधी बाप घोड़ा।

नल—भगवान का ध्यान लगाकर पाप कमा अब थोड़ा थोड़ा।

विदूषक—अरे यारो एक जैन गजट फारसी में छपा देखा था उसका शेर याद आगया।

शेर—हुवा जब कुफ्र साबित है, ये तमगाये सुलेमानी।
न टूटी शेख से जिन्नार, तसबीये मुसलमानी॥
खुदा से नफ्स अम्मारे कि चाह दखो पशेमानी।
उठे जब कुफ्र कावे से तो रहे क्योंकर मुसलमानी।

नल—क्या जैन अखबार तत्व विचार मलेच्छ भाषा में भी छापे जाते हैं।

विदूषक—अजी उन लोगों को जैन तत्व फारसी में छापने का बड़ा अभिमान है।

नल—यही तो मान करना जैन धर्म का अपमान है।

विदूषक—अभी मेरी आंख से गुजरा था कि जैन नाटक को जैन नाशक लिख दिखाया।

नल—तभी तो कलयुग का चक्कर आया।

शेर—द्वेष रखते लोग हैं अब जैन मत के संग में।
दो लुढ़ाने मन के लड्डू जो रंगा जिस रंग में॥

अंगद—देखो तो इसके हाथ में तसबी है या माला है।

नल—छीन कर अरे यह तो कोई मनवाला है।

अंगद—पकड़ लो, पकड़ लो, मन्दोदरी की चोटी पकड़कर खैंच लो।

मंदोदरी की तरफ को लपकना तथा रावण का भी पैर पकड़ कर घसीटना

मंदोदरी—रक्षा! रक्षा!! अय भगवन् मुझ अभागनी की रक्षा!!!

अंगद का पकड़ने को लपकना एक दम अंधेरे का होना माणभद्र व प्राणभद्र यचेन्द्र का आना

यक्षेन्द्र—अरे दुष्टो यह क्या अनुचित कार्य्य करते हो, रावण को ध्यान समय कष्ट देते हो। चलो चलो हम तुम को रामचन्द्र के ही पास ले चलते हैं। और उन्हीं से तुम्हारी इस करतूत का दंड दिलाते हैं।

भाले की नोक से डरा कर ले जाना (प्रस्थान)

पांचवां परिच्छेद रामचन्द्र का कटक

रामचन्द्र का बैठे दिखाई देना माणभद्र व प्राणभद्र का आना टेढ़ी भृकुटी कर के क्रोध में गाना।

माणभद्र प्राणभद्र का गाना

उत्पात अन्याय क्या हो रहा है। खबर भी है लंका में क्या हो रहा है॥
महाराज दसरथ के होके दुलारे, लड़े जाके सेना ये क्या हो रहा है। उ०
बड़े न्यायवन्त हम समझते हैं तुमको, करें सब प्रशंसा यह क्या होरहा है।
आयुध रहित वृद्ध कायर हो नारी, लड़ो उनसे रामा यह क्या होरहा है।

वार्ता—श्री महाराज आप रघुवंश में रघुचन्द्र तथा न्याय शास्त्र में पारगामी हो शोक है कि रावण को ध्यानारूढ़ बैठे हुवे देख कर आपकी सेना हस्त प्रहार करती है। हमें खेद होता है कि ऐसे बुद्धिमान सज्जन पुरुष का यह अनुचित कार्य।

लक्ष्मण—अनुचित कैसे। आप यक्षेन्द्र सम्यकदृष्टी, धर्मात्मा, वात्सल्य-धारी, परम दयालू होकर यह क्या फर्माते हैं। देखिये विचारिये कि सती सीता माई को यह पापी रावण व्यभिचारी वन-

कर हरलाया है। और लंका में लाकर उसको अति दुख पहुंचाया है। क्या इस को आप न्याय समझते हैं? हे यक्षेन्द्र पति श्री रामचन्द्र जी ने आपका क्या अपराध किया है और रावण ने आप का क्या उपकार किया है। जो टेढी भृकुटी करके उल्हाना देने आये हो।

गाना—हुवा व्यभिचारी रावण तुम, उलहना देने आये हो। हु० ॥
तजो सब शील सयंम को, यही तुम कहने आये हो ॥ यही० ॥
न होवे धर्म दुनिया में, यदि पापी की जै होवे।
सहो अन्याय रावण का, यही तुम कहने आये हो ॥ हुवा० ॥
भये लंकेश के पक्षी, हुवा क्या दोष रघुवर से।
हमें यह खेद होता है कि, तुम क्या कहने आये हो। हुवा०

मानभद्र व प्राणभद्र का शरमिन्दा होना और सुग्रीव का भय मान कर आरता करना

गाना—तुमको करना उचित न स्वामी, हम पर क्रोध ना जी। हम०
तुमरे है करुणा मन स्वामी, भव्य जीव हो मुक्ती गामी ॥
वानर वंश सेवक, इनपर क्रोध ना जी ॥ हमपर० ॥
बहू रूपणी साधे रावण, चाह लगी है हमको मारण।
प्राणों की हो रक्षा, हमपर क्रोध ना जी। हम पर० ॥
क्रोध दिलावें हम सब जाके, विद्या सिद्ध होयना ताके।
आज्ञा देवो स्वामी, हम पर क्रोध ना जी ॥ हम पर० ॥

प्राणभद्र—अय सुग्रीव रावण को क्रोध आना असम्भव है। परन्तु तुम नहीं मानते हो तो सुनो! रावण के शरीर को तुम स्पर्श नहीं कर सकोगे। और न लंका में किसी प्राणी मात्र को दुख देसकोगे अलबत्ता दूर से धमकाओ, डराओ, भय दिखाओ परन्तु हम फिर भी कहते हैं कि यह परिश्रम तुम्हारा निष्फल होगा लो बस अब हम जाते हैं। (जाना)

पर्दे का गिरना (प्रस्थान)

पांचवां परिच्छेद जैन मन्दिर

रावण का ध्यान धरे दिखाई देना वानर वंशियों का आना

अङ्गद—मारो २ रावण का सर खंजरे आवदार से उतारो।

नल—अरे मंदोदरी को नहीं लाये ?

नील—वह तो हमारे महाराज सुग्रीव के सर पर चमर ढार रही है। और बार २ पुकारती है कि प्राणपती ! प्राणपती ! मैंने कहा कैसी आपत्ती हमारे महाराज सुग्रीव की वांई जांघ पर बैठ कर आलंघन कर

सुभूषण पुत्र विभीषण का कहना

सुभूषण—अंगद जावो उसकी चोटी पकड़ कर लावो।

अंगद का जाना सब वानर वंशियों का गाना

गाना

अरे पापी पाखंडी आज क्या मन में समाया है।
मंत्र व्यभिचारी जपने आज क्या मन्दिर में आया है॥ अरे०
अरे वेशर्म पापी क्या समझ तुझको नहीं आती।
सती सीता को चोरों की तरह लंका में लाया है॥ अरे०॥
यदि क्षत्री था तो रघुवर के सन्मुख क्यों नहीं लाया।
डरा पापी हुवा कायर भगा लंका में आया है॥ अरे०

(मंदोदरी का भयभीत आना)

मंदोदरी—बचावो बचावो प्राण पती मेरे प्राण बचावो।

सुभूषण—कौन बचा सकता है।

मन्दोदरी—अरे सुभूषण मेरे देवर का पुत्र होकर तू यह क्या अन्याय देख रहा है। क्या तुझको शर्म नहीं आती।

सुभूषण—शर्म एक पापी व्यभिचारी की स्त्री की शर्म ।

शेर—लंकेश है अन्याय पर अन्याय में तुम रंक हो ।
राक्षस वंशी बेल के मुंह पर लगाये कलंक हो ॥

अंगद—घुमाओ घुमाओ इस हरामजादी की चोटी पकड़ कर घुमाओ

(मन्दोदरी का रावण से चिपटना)

मन्दोदरी—हे लंकेश पती मुझे बचाओ क्या तुम आज मुझे भूल गये हो (मुंह की तरफ देखकर) तुम मेरे प्राण नाथ हो या कोई और हो ।

अंगद—अरे कौन होता वही पापी रावण है । उठालो जी क्यों देर कर रहे हो ।

(सबका उठाने के लिये लपकना)

मन्दोदरी—कृपा कृपा अय भगवन् मुझ अभागनी पर कृपा ।

एक दम आवाज का होना बहुरूपणी विद्या का प्रकाश होना

बहरूपणी—आदेश ! आदेश ! ऐ रावण मैं बहुरूपणी विद्या सिद्ध होगई मुझ को आदेश दे । (वानर वंशियों का भागना)
चक्रवर्ती, अर्धचक्री, बलभद्र को छोड़कर सकल तीन लोक के इन्द्र नरेन्द्र को जीतनेवाली सिद्ध हुई आज्ञा दीजिये मुझ से काम लीजिये

पर्दा गिरता है

पांचवां सीन--प्रमोदनामा बन

सीता का लछमन की याद में बेकरार नज़र आना

सीता का गाना

हाय लछमन शक्ती खाई, कैसी तुमने विपत उठाई।
पैदा होते क्यों न मरी मैं, यह क्या खबर सुनाई ॥ हाय० ॥
निकल देह पिंजरे से न, क्यों मन इतनी देर लगाई।
कान सुनत हैं आंख देखती, है यह अचम्भो माई ॥ हाय० ॥
हाय हाय दय्या मोरी मय्या, लछमन को दो जिलाई ॥ हाय० ॥

ईरा राचसी का आना

ईरा—सीता हर्ष, हर्ष, लछमन की शक्ती निकल गई। और सखी विशल्या का लछमन के साथ पानी ग्रहण हुवा।

चौपाई

संतन के प्रभु काज संवारे। करन सहाय रूप अति धारे ॥
नारायण बलभद्र ही जानो। विजय होय रघुवर मेरी मानो ॥

सीता—ऐ प्रभु तेरी लीला अपरम्पार है। तूहीं हम लोगों का मददगार है

राचसी आती है

राचसी—श्री महाराज को बहुरूपणी विद्या सिद्ध हुई। बस अब कुछ समय में वानर वंश रघुवंश की मृत्यु आई।

लंकेशपती सीता से मिलने आरहे हैं

सीता—(ईरा से) क्यों बहन बहुरूपणी विद्या क्या होती है।

ईरा—हां बहन वह बुरी होती है।

तो राचसी—सावधान महाराज आते हैं और तुम सब को जाने के लिये हुक्म फ़रमाते हैं।

सब का जाना रावण का भयानक शक्ल में आना आवाज़ का करना

सीता—(कानों पै हाथ धर कर) प्रभु अय प्रभु यह मैं आज क्या देख रही हूं

रावण का असली रूप में होना

रावण—सुनो प्यारी।

शेर

कपटी पापी और कृतघ्नी व दुराचारी हूं मैं।
शील संयम छोड़कर बस अवतो व्यभिचारी हूं मैं॥

वार्ता—परन्तु क्या करूं मोह जाल सब से बलवान है। इसलिये ऐ प्रिय तेरी चाह महान है।

सीता—यदि तुझको चाह है तो शिवरूपी (मोक्ष) दुलहन को चाह कर।

चौपाई—हाड़ मांस तन रुधिर पसीना, चाह लगी तू बुद्धी हीना।
जप तप सयंम जिन मन खोया, नरक निगोद बीज उन बोया॥

रावण—ऐ प्रिय यह तुम क्या कहती हो सुनो।

चौपाई—प्राण जायें नहीं बचन गवाऊं, वार २ मैं तोहे समझाऊं॥
अनंत नाथ केवली भगवाना, बिन इच्छत स्त्री नहीं जाना॥

वार्ता—ऐ! प्रिय मेरे यह नियम हैं कि। बलात्कारे किसी स्त्री को सेवन नहीं करूंगा। इस लिये मैं तेरी कृपा का अभिलाषी हूं। आ, आ, शीघ्र आ, मेरे पुष्पक विमान में बैठ कर सुमेर पर्वत आदि अनेक तीर्थों की यात्रा कर। अपने स्त्री जन्म को सुफल कर, और यह निश्चय से जान ले कि राम लखन जिन का तुझको भय है, उनको ही क्या बल्कि बानर वंश रघुवंश को खाक में मिला दूंगा। और रामचन्द्र को तो जीते जी अग्नी में जला दूंगा।

सीता—(कानों पर हाथ धर कर) हाय २ ये मेरे कान आज क्या सुन रहे हैं। हे लंकेश पती रावण यदि मेरे कंठ से तुम्हारा शस्त्र प्रहार हो तो दया करना। दया करना! हा! मुझ अभागनी की दो बात कंथ से अवश्य कह देना। कि हे ऋषि नाथ! महाराज दशरथ के पुत्र, तुम से भामंडल की बहन ने कहा है कि जब तक तुम से मिलने की आशा थी सीता जीती रही। परन्तु अब निराश होकर परलोक सिधार गई।

(एक दम बेहोश होकर गिरना)

रावण—हा! धिक्कार २ मेरी समझ, मेरी बुद्धि, मेरी योग्यता, मेरे ध्यान पर ? हा! मुझ पापी ने ऐसे युगल जोड़ का विछोहा किया हा! धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है, ऐ सती सीता तुझको धन्य है। ऐसे घोर उपद्रव में भी शील से न चिगी। सुनो सती सीता सुनो ? गो तुझ को मेरी चाह नहीं थी। परन्तु मुझ पापी को अपयश रूपी चाह बन रही थी। बस२! खातमा, मेरी चाह का खातमा! मेरे अरमान का खातमा! यदि तू देवांगना से भी सुन्दरता में महान है। तो क्या! आज से तू मेरे लिए गुरु मात के समान है। रावण नियम करता है, कि यह जबान तुमको सती सीता महारानी कह कर पुकारा करेगी। हा करूं तो क्या करूं। महारानी को रामचन्द्र के पास भेजता हूं तो लोक में कायरता से प्रसिद्ध होता हूं। भ्राता! विभीषण तू सच कहता था परन्तु मुझ पापी ने एक भी न मानी रघुवर से संग्राम की ठानी। अब संग्राम से मुंह मोड़ता हूं। तो लोग मुझको गरुड़ वाहन सिंह वाहन से भयभीत हुआ समझेंगे इसलिए रामचन्द्र का अभिमान दूर करूं। और वानर वंशियों को नीचा दिखाऊं।

राक्षसी—श्री महाराज की जै हो महारानी पटरानी आपको बुला रही हैं।

रावण—मैं अभी आता हूं और सुनो देखो लंका वासियों से कह दो कि सीता को सती सीता महारानी कह कर पुकारें किसी तरह का

कष्ट सती सीता को न पहुंचावें। और तुम शीघ्र सती सीता को उठा कर गुलाब आदि जल से मूर्छा रहित करो।

स्त्री—श्री महाराज मैं एक और स्त्री को बुला कर लाती हूं।

रावण—और देखो सुनो! पटरानी साहिबा से कह दो कि वह यहीं चली आयें।

स्त्री—अभी भेजती हूं। (जाना)

रावण—हा! जिन्दगी! निरलज्ज जिन्दगी। कैसे व्यतीत करूं

कहूं क्या जुबां से कहा जाता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।

दू०—श्री महाराज पटरानी जी आती हैं। और हम सती सीता को मूर्छारहित करती हैं (दो स्त्रियों का सीता को उठा कर ले जाना)

रावण—अच्छा आने दो।

मन्दोदरी—शर्म है! शर्म है!! तुम्हारे ऐसे ध्यानारूढ़ होने पर शर्म है!!! सुग्रीव का पुत्र जो हमारे टुकड़ों से पला आज मेरा चीर खैंचे और नेत्रों से देखो शर्म है! शर्म है।

रावण—प्रिये। मैंने सब कुछ देखा है। परन्तु अब तुम सुग्रीव का क्या दुग्रीव यानी निःग्रीव कहिये बिना सिर के देखोगी। और तमो मंडल को लोग भामंडल कहते हैं। उसको भूमंडल कहिये हाथियों के पैरों से कुचला २ मार दूंगा। तथा हनूमान की खाल खिंचवा कर भुस भरवा दूंगा। जितने वानर वंशी हैं एक को भी जीता न छोडूंगा। और बाकी भूम गोचारियों को मैं एक २ करके मारूंगा। उन का वंश नष्ट कर दूंगा। और जब भूम गोचरी दुनियां में न होंगे। तो जो तीर्थंकर नारायण बलभद्र होंगे। वह विद्याधरों ही में होंगे। मेरे मन में यही समाई है यह यही दिल को भाई है।

मन्दोदरी—क्या समाई है। बस राक्षस वंश की तबाही है।

रावण—हा ये कैसे।

मन्दोदरी—तुम अनुचित होना कहते जैसे।

रावण—अनुचित कैसे समझा।

मन्दोदरी—क्या मुनिश्वरों का वचन वृथा हो ... है।

रावण—जान पड़ा कि तू मेरी विभूती नहीं से ...

मन्दोदरी—नहीं मैं सब समझ रही हूं ... जान रही हूं। कि लक्ष्मण नारायण हैं और राम ... बलभद्र हैं। और प्रति नारायण है जैसे कि पहिले नारायण प्रति नारायण हो चुके हैं। नारायण प्रति नारायण का संग्राम महान है। इसमें शास्त्र का प्रमाण है कि प्रति नारायण का चक्र नारायण के हाथ में होता है।

रावण—आहा यह तू क्या कहती है। मेरी समझ में नहीं आती है राजामय की पुत्री होकर और चक्रवृति की पटरानी होकर कायरता के वचन सुनाती है खेद है कि मेरी सूरवीरी का भय नहीं खाती है यदि किसी ने शेरसिंह नाम धर लिया और उसमें वह गुण न होवे तो क्या शेरसिंह कहलाया जा सकता है। आंखों के अन्धे और नाम नैनसुख वह नारायण और बलभद्र केवल नाम मात्र ही हैं।

मंदोदरी—अच्छा नाम मात्र ही सही किन्तु मैं आप से कहती हूं कि आपने राज काज ऐश आराम सब कुछ किया है। अब जिन-दिक्षा लेकर मुनि पद धर ध्यान लगाइये कर्म रूपी रज को मिटाइये।

रावण—और प्यारी तुम क्या करोगी।

मंदोदरी—मैं भी तुम्हारे साथ अरजका हो जाऊंगी।

रावण—(गले में हाथ डाल कर) अच्छा ऐसे ही करेंगे चलो शिघ्र चलो। (प्रस्थान)

पांचवां परिच्छेद चौथा दिवस

रण भूमी

मनादी कुनिन्दा—आज रण संग्राम में श्री महाराज रावण का युद्ध

लक्ष्मण से होगा। श्री रामचंद्र का युद्ध राजा मय से होगा सुन लो साहिबो मनादी है, मनादी है।

सिपह सालार रावण—सेना से मुखातिब होकर।

शेर—ऐ मेरे प्यारे सुनो तुम लड़ना इस तदवीर से।
मार एसा मरना बचना न हो तक़दीर से ॥

राजा मय का आना

राजा मय—कहां है वानर बंशी कहां है।

शेर—वानर बंश अब नष्ट कर दूं येही काम है।
मैं ही मैं हूं आजकल और मय ही मेरा नाम है ॥
ध्यान सुमती देख कर लंका में जाके दख दिया।
बाल बृद्धा को सता कर हर्ष पाकर सुख लिया ॥

सुग्रीव—सुग्रीव ओ पापी सुग्रीव मेरे सामने आ अपना बल दिखा।

भामंडल—अरे सुग्रीव का बचा ले मेरा वार रोक।

(दोनों का लड़ना भामंडल का व्याकुल होना)

विभीषण का आना

विभीषण—शर्म कर ! शर्म कर !! राजामय विभचारी रावण की शर्म कर !!!

शेर—शोक है तू वृद्ध होकर पक्ष करता पाप की।
जा चला जा यहां विजय होगी न तेरे बाप की ॥

राजामय—अरे मूढ़।

बे शरम बेहया तू हैया……मैं।
भाई को छोड़कर शत्रू से तू मिलाया………मैं
रण संग्राम में लंकेश से तू लड़ाया………मैं
अरे निर्लज्ज राक्षस बंश मे तू पैदा हुवाया………म

शेर—बेशरम बनकर के शत्रु से मिला है आनकर।
राक्षस बंशी की सूने आब खोई जानकर ॥

(दोनों में परस्पर युद्ध होना बिभीषण का व्याकुल होना)

रामचन्द्र का आना

रामचन्द्र—ओ पापी दुराचारी आ,आ मेरे सामने आ, अपना बल दिखा,

शेर—कौन है मुझसे बड़ा जब तक नजर आता नहीं।
जिस समय तक ऊंट परबत के तले आता नहीं ॥

रामचन्द्र व राजा मय का घोर संग्राम अंत को राजा मय का मूर्छित होकर गिरना

रामचन्द्र—भामण्डल उठाओ ! शत्रु को बन्दीग्रह पहुंचाओ।

भामण्डल—बहुत अच्छा महाराज

भामण्डल का राजा मय को उठाकर लेजाना

रावण का आना

रावण—आओ आओ सीता के प्रेमी भौंरो आओ। मौत का मजा पाओ,

लक्ष्मण का रोकना

लक्ष्मण—ओ पापी व्यभिचारी मेरे से बचकर कहां जायगा।

शेर—आज्ञा श्री राम की है अब भी पापी मानले।
चोर है लंकेश लक्ष्मण आज उसको जानले ॥
चोर को भारी सजा दो स्वान खींचे खालको।
राजगद्दी लूटलो और लूटलो सब मालको ॥

रावण शेर—पराकरम मेरा क्या तूने आज तक जाना नहीं।
एक दफै तो मर चुका था फिर भी तू माना नहीं ॥
भागजा संग्राम से जा देख अपने कामको।
हाथ से मृत्यु लहेगा क्यों रुलावे रामको ॥
कर्म खोटे हैं उदै यहां तक बुलाया पाप ने।

जानकर दोनो कपूतों को निकाला बाप ने ॥

स्वान के गल में न घंटा जेवा आयेगा कभी ।
गल में जब गज राज के हो शोभा पायेगा तभी ॥

लक्ष्मण—अरे मूर्खानन्द, मतिमन्द, पिता के वचन निभाने को हम वनवासी हुवे हैं—परन्तु

शेर—स्वर्ण की जंजीर पहने स्वान फिर भी स्वान है ।
धूल धूसर से भरा गजराज है गजराज है ॥
काल तू मुझको समझले यदपि वनवासी हूं मैं ।
तुझ सरीखे तुच्छ पुरुषों के लिये फांसी हूं मैं ॥
देख वनवासी की है तलवार कैसी शानकी ।
ठोकरें खाता फिरेगा खोपड़ा मैदान की ॥

रावण लक्ष्मण का घोर संग्राम

रावण का तिमिर बाण मारना—सर्वथा अंधेरा होजाना ।
लक्ष्मण का प्रकाश बाण से उड़ा देना—और प्रकाश हो जाना ।
रावण का नाग बाण मारना—चारों तरफ सर्पों का ही दिखाई देना ।
लक्ष्मण का गरुड़ बाण से उड़ा देना—गरुड़ों के आनेपर सापों का भागना
रावण का अग्नी बाण मारना—आग का प्रज्वलित होना ।
लक्ष्मण का मेघबाण से उड़ा देना—बारिश का होना ।

रावणका— विघन बाण मारना ।

लक्ष्मणका— सिद्ध बाण भूल जाना । (विघन होना)

विद्याधरी जो कि लक्ष्मण पर आसक्त थी गगन से वानी करती है

विद्याधरी—हे स्वामी तुम्हारे सकल कार्य सिद्ध हों ।

लक्ष्मण—(गगन की ओर देख कर) सिद्ध हो ये आवाज कैसी।
आहा! मुझको सिद्ध बान याद आया।

सिद्ध बान का मारना विघन का पलाना

रावण—बस अब बहूरूपणी विद्या से काम लेता हूं आओ।

हथेली बजाना चारों ओर से रावण की शकल का पैदा होना

लक्ष्मण—अरे बहूरूपये ये क्या रूप दिखाया।

सब से लड़ना घोर संग्राम अंत को बहूरूपणी विद्या का हार मान कर भाग जाना

रावण—शोक! महा शोक! बहुरूपणी विद्या भी धोका देगई परन्तु अभी मेरे पास सुदर्शन चक्र बाकी है। आओ २ सुदर्शनचक्र शीघ्र आओ।

एक दम आवाज का होना गगन से चक्र का उतरना

सुग्रीव-हनुमान—रोको। रोको। चक्र को रोको। सबके सब मिल कररोको

सब का मिलकर चक्र को तलवार गदा से रोकना तथा भयभीत होना

रावन-शेर—अभी रघुवंश वानर वंश किये का दंड पाता है।
इन्हे निरवंश करनें आज मेरा चक्र आता है॥
प्रथम लक्ष्मण को मारो और फिर सुग्रीव हनूमाना।
सभों को मार कर दुनिया में फिर तुम नाम को पाना॥

रावण का चक्र घुमाना और चक्र का लक्ष्मण को परकम्मा देकर हाथ में आना

विद्याधरों का—जै हो जै हो श्री रामचन्द्र की जै हो ! आज समय लक्ष्मण को तीन खंड का राज हुवा। बोल श्री रामचन्द्र जी की जै (जै जै का शब्द होना)

लक्ष्मण—अयं विद्याधरों के अधिपति रावण अब भी कुछ नहीं गया है

शेर

विद्या सब निसफल गई अब थोड़ेही में जानले।
चक्र मेरे हाथ में चक्री मुझे पहिचान ले॥
सीता रघुवर को देओ और शर्ण लो श्री राम की।
दीर्घ दरशी सोच लो बस बात है यह काम की॥
राज लंका का करो हम को नहीं कुछ द्वेष है।
हम तो वन वासी ही हैं हमरा फकीरी भेष है॥

रावण—है नहीं क्षत्री ये वो जो शर्ण शत्रू जायेगा।
चक्र ले हर्षित हुवा क्या आज मृत्यू पायेगा।
बचना मेरे हाथ से दुशवार पापी जान ले।
शर्ण ले आकर मेरी मेरे वचन सच मान ले॥
जैसे चूहे को कोई कत्तर मिली थी लाल लाल।
वह बना पूरा बजाजी भट में उस को डाल डाल॥
जरा से धन पे इतरा कर क्या बद ओसाफ बन बैठा॥
मिली कम जरफ को दौलत तो वह सराफ बन बैठा॥

लक्ष्मण—विनाश काले विपरीति बुद्धि। (शेर)
जैसी हो होतव्यता तैसी उपजे बुद्ध।
होनहार होकर रहे बिसर जाय सब सुद्ध॥

रावण—क्या कुम्हार कैसा चाक ले रहा है जिस पर अभिमान का दम भर रहा है। ले रोक मेरा वार रोक। (तीर मारना)

लक्ष्मण का क्रोध में भर चक्र घुमाना और चक्र का आकर रावण के सरको विदारना लाशका तड़पना

विभीषण—भ्राता। भ्राता! हाय यह क्या होगया।

शरीर का स्पर्श करना मुझ को छोड़ कर कहां जाते हो

गाना

मुझे छोड़ चले कहां भाई। यह क्या मन में तुमरे समाई।
मानुष भव पा जप तप करते, मुक्ती वधु को पाई॥ मुझे०॥
बड़ी बड़ी विद्या को साधा, एक काम ना आई।
अन्तिम दिल जो करते तपस्या, अविचल राज कराई॥ मुझे०।

वार्ता—लंकेश पती उठो उठो दास पर कृपा करो कृपा करो। हाय! हाय! यह हाथ पांव क्यों तड़प रहे हैं। बस बस विभीषण से ये नहीं देखा जाता है इस लिये (खंजर निकाल कर) अपघात करता है अपने भाग्य भाई पर।

रामचन्द्र का रोकना विभीषण का बेहोश होना।

रामचन्द्र—बुद्धिमान होकर यह क्या करते हो। सुनो॥

गाना

मरना जीना सब को प्यारे लग रहा है एक दिन।
जो यहां आया है प्यारे उसको जाना एकदिन॥
जीव आतमा रुलता फिरे, मा बाप सुत बनता फिरे।
पाताल में आसमान में रहना हुवा ना एक दिन॥ मरना०
सुरगों जाके सुख सहे, नरकों में जाके दुख सहे।
कोई प्यारा ना मिला, मरता बचाता एक दिन। मरना०
सूर वीरी आज रावण की हुई संसार में।
रण में मरना जीना ये सब को लगा है एक दिन। मरना०।

मन्दोदरी रानी आदि का आकर विलाप

मन्दोदरी—हाय हाय लुट गया २ हमारा सुहाग लुट गया! स्वामी उठो उठो (लिपटना)

गाना

हाथ पाउं क्यों तड़प रहे हैं दीजो वेग बताई।
सो तुमरे मन कौन दुख प्रभू करियो जल्द सहाई॥
बार बार स्वामी समझाया एक समझ ना आई।
सीया नागन ने खाया तन को लहर जहर की आई॥ हाथ०
भाई सुत सब बन्दी गृह में, शत्रु हुवा यह भाई।
(विभीषण की तरफ अंगुली करके)
हम सब को अब छोड़ा किस पर, दीजो वेग बताई॥ हाथ०।

सब-हाय, हाय, हाय, हाय, करना।

परदे का गिरना

पांचवां परिच्छेद रामचन्द्र का दर्बार

विभीषण की ताजशाही श्री रामचन्द्र व लक्ष्मण का बैठे दिखाई देना—रामशगरियों का गाना नाचकर

हां जी देखो घूम घूम आली, मतवाली, डाली डाली फुलवारी की प्यारी बहार है।

प०—राम रसीला रंगीला गुलाब है।

दू०—मोतिया क्या लखन ला जवाब है।

ती०—हां जी देखो सीता सी चम्पा चम्बेली पे गुलशन निसार है।

प०—विरय गंद मकरंद पर जिया भौंरा ललचाये।
प्रेम अमी रस चूसले प्राण जाय सो जाये।

हांजी देखो कोयल की कूक पपय्या की पीपी से प्यारा निसार है।

रामचन्द्र—अय द्वारपाल शीघ्र जावो भामण्डल की बहन को अपने साथ लावो।

द्वारपाल—अच्छा श्री महाराज अभी जाता हूं (जाना)

(कुछ समय में सीता का आना)

सीता—स्वामी; स्वामी, स्वामी, मेरे स्वामी (पैरों में गिरकर बेहोश होना)

रामचन्द्र—उठो, उठो, प्राण प्रिय उठो हैं हैं मूर्छा आगई।

लक्ष्मण—लीजिये लीजिये गुलाब जल से मूर्छा रहित कीजिये।

रामचन्द्र—(मुह पर गुलाब छिड़कना)

सीता—प्रभू प्रभू-क्या मैं जाग रही हूं ।

रामचन्द्र—प्रिय तुम अवश्य जाग रहीं हो।

सीता—प्राण प्यारे राक्षसी कष्ट देरही हैं। बचाओ २ (बेहोश होना)

रामचन्द्र—आहा फिर मूर्छा आगई (जल छिड़ककर)

देखो आंख खोलो देखो मैं कौन हूं।

सीता—(आंख खोलकर) प्रभू मेरे प्रभू चिपटती है।

रामचन्द्र—अब कोई राक्षसी नहीं है होश में आओ। लो सिंघासन पर विराजो।

(सिंघासन बैठना)

लक्ष्मण—माता, माता, सती सतवंती माता को नमस्कार है। (पैर छूना)

सीता—चिरञ्जीव रहो आनन्द रहो ऋषिनाथ के वचन सत्य हैं अवश्य तुम नारायण और बलभद्र हो।

भामण्डल—बहन सीता ! सीता बहन !!

सीता—भ्राता २ भगनी को क्यों भूल रहे थे।

भामण्डल—बहन हमारे अशुभ कर्म्म उदै थे।

सुग्रीव व हनूमान आदि का आना सीता के पैरों पर गिरना

सुग्रीव आदि—नमस्कार है २ सती सीता महारानी के चरणों में नमस्कार है।

गाना

धन्य, धन्य, धन्यमात, संयम नियम धारी। धन्य०
विपत, विपत, विपत, में, डर भय न आया चित्त में।
शीलवती सतवंती मात, पाया ये नाम भारी ॥ धन्य० ॥
चरण, चरण, चरणये, नेत्रों पे राखें परण ये।
मात, मात, नमस्कार, शरण है तिहारी ॥ धन्य० ॥

आवाज़--(आकाश वाणी) जै हो, जै हो, सती सतवन्ती सीता महारानी की जै हो।

देवों का पुष्पवृष्टी करना

रामचन्द्र--अय सुग्रीव कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद राजामय को वन्दीग्रह से मुक्त करो

सुग्रीव--श्री महाराज यह क्या करते हो। सुनो

शेर--हम वानर वंशियों को कुम्भकरण जीता न छोड़ेगा।
वह जोधा है लड़ाका है सभी के सर को तोड़ेगा॥

दूसरा बानर वंशी--यह तलवारें हमारी बस करेंगी फैसला उनका।
वंश ऐसा मिटायेंगे नही यहां नाम रह जिनका॥

रामचंद्र--न्याय शास्त्र के विरुद्ध तुम को न करना चाहिये।
वंदीग्रह मे बांध कर तुमको न लड़ना चाहिये॥

वार्ता--सैना पती !

सेनापती--श्री महाराज !

रामचंद्र--शीघ्र जाओ और कुम्भकरण आदि को वंदीग्रह से रिहा करो, हाजिर दरबार करो।

सेनापती--जो आज्ञा (जाता है)

(विभीषण का आना)

विभीषण—नमस्कार! नमस्कार!! सती सतवंती सीता माता के चरणों को नमस्कार है!!!

सीता—कुशल हो धर्म वृद्धि हो।

(कुम्भकरण इन्द्रजीत आदि का आना)

कुम्भकरण आदि—जै हो जै हो रघुपति श्री रामचन्द्र की जै हो॥

रामचंद्र—सेनापती, कुम्भकरण, इन्द्रजीत, मेंघनाद, राजा मय को बंधन रहित करो।

सेनापती—श्री महाराज अभी बेड़ी निकालता हूं।

(निकालना)

रामचंद्र—आइये आइये सिंघासन पर तिष्ठये, लंका का राज करिये। लिबास शाहाना ग्रहन कीजिये।

गाना रामचन्द्र का

हमें सीता ही लेनी थी नहीं कुछ राज करना था।
मगर लंकेश पत को लड़के हमसे आज मरना था॥
जो होना हो गया भ्राता, नहीं अब द्वेष रक्खो तुम।
संभालो राज अपने को, भ्रात ऐसा ही होना था॥ हमें॥
करो अब ऐश महलों में, भुलादो याद भ्राता की॥
हम वन वासी ही वन में खुश, यहां ये दुख भरना था॥ हमें॥

कुम्भकरण—धन्य है! धन्य है!! राघो पति श्री रामचंद्र आपके विचारों को धन्य है!!! परन्तु इस समय हमारा दसरा ध्यान है। जिन दिक्षा लेने का अरमान है। संसार में अनन्तानन्त काल से भ्रमण होरहा है। किस किस की याद करें। बस अब परमेश्वर की याद है।

गाना—याद में तेरी अय परमेश्वर, दुनिया से मूंह मोड़ा है रे॥ दुनिया०॥
चक्रवृति की पाय विभूति, फिर भी कहे मन थोड़ा है रे।

छै खंड के लक्ष्मी लक्ष्पती हो, बिना तपस्या के अधोगती हो ॥
आतम रूप अनूपम अद्भुत, तेरा नहीं कोई जोड़ा है रे ॥ या०॥
काम क्रोध मद लोभ बढ़ाया, तृस्ना वर्द्धा पार नहीं पाया ।
नारी नरक रूप विष नाली, भोग भोग सर फोड़ा है रे ॥या०॥

रामचन्द्र—क्या आपका जिन दिक्षा लेने का ध्यान है ।

कुम्भकरण—श्री महाराज दिल में यही अरमान है ॥

रामचन्द्र—धन्य है ! धन्य है !! आपके वैराग रूपी विचारों को धन्य है !!! परन्तु जो दोष हम लोगों से हुआ हो उसकी क्षमा चाहते हैं ।

कुम्भकरण—यह आप क्या फरमाते हैं हमारा चित्त आपसे अत्यंत प्रसन्न है ।

रामचन्द्र—आओ आओ विभीषण राजगद्दी पर पधारो ।

विभीषण—महाराज मुझ पर ऐसे बोझ न डारो ।

रामचन्द्र—(हाथ पकड़ कर) नहीं २ आपको राजगद्दी पर बैठना होगा।

(विभीषण का बैठना)

रामचन्द्र—(तिलक चढ़ाना) लो लंका का राज हम तुमको देते हैं मुबारिक हो मुबारिक हो ।

ड्राप सीन